मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–लग्नेश सूर्य धन स्थान में मंगल के साथ होने से जातक धनी तथा पराक्रमी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां द्वितीय स्थान में कन्या राशि में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पचम भाव (धनु राशि), अष्टम भाव (मीन राशि) एवं भाग्य भवन अपने घर मेष राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः 'लक्ष्मी योग' पूर्ण रूप से फलीभूत होगा। ऐसा जातक धनवान, सौभाग्यशाली एवं दीर्घजीवी होगा। प्रथम पुत्र के जन्म के बाद जातक धनी होगा पर धन के स्थाई संग्रह हेतु संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी।
3. **मंगल+बुध**–मंगल+बुध की युति जातक को महाधनी बनायेगी। जातक करोड़पति होगा।
4. **मंगल+गुरु**–अष्टमेश गुरु के द्वितीय भाव में मंगल के साथ होने से धन हानि होगी पर जातक वैभव सम्पन्न होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र द्वितीय भाव में मंगल के साथ होने से जातक धनवान होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ यहां शनि दाम्पत्य जीवन को नष्ट कर देगा।
7. **मंगल+राहु**–द्वितीय स्थान में मंगल के साथ राहु धन का नाश करेगा, जातक की वाणी घमण्ड युक्त एवं कड़वी होगी।
8. **मंगल+केतु**–द्वितीय स्थान में मंगल के साथ केतु जातक को धनशाली व पराक्रमी बनायेगा।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में

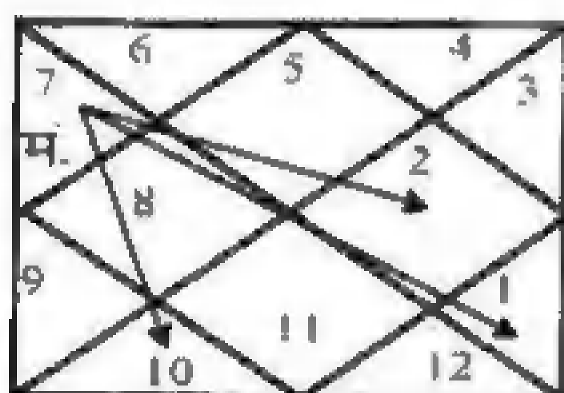

सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों का स्वामी है। यहां तृतीयस्थ मंगल तुला (सम) राशि में होगा। मंगल की यह स्थिति जातक का पराक्रम बढ़ायेगी। जातक को जमीन-जायदाद का सुख प्राप्त होगा। जातक आप अकेला भाई नहीं होगा। जातक अपने कुटुम्ब-परिवार के साथ रहना पसंद करेगा। जातक के अनेक मित्र होंगे।

दृष्टि–तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि षष्ठम् भाव (मकर राशि), भाग्य भवन (मेष राशि) एवं दशम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक भाग्यशाली होगा तथा राज-सरकार में उसका दबदबा रहेगा।

निशानी–जातक को छोटे भाई का सुख कम मिलेगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। नौकरी लगेगी व पराक्रम बढ़ेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–लग्नेश सूर्य तीसरे स्थान में मंगल के साथ होने से जातक के अनेक भाई होंगे पर छोटे भाई की मृत्यु होगी।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां तृतीय स्थान में तुला राशिगत दोनों ग्रह की दृष्टि छठे भाव (मकर राशि), भाग्य भाव जो मंगल का स्वयं का घर है (मेष राशि) एवं दशम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक धनवान, पराक्रमी एवं सौभाग्यशाली होगा। जातक की पहुंच राजनीति में भी होगी। जातक ऋण रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा।
3. **मंगल+बुध**–धनेश, लाभेश बुध तीसरे स्थान में मंगल के साथ होने से जातक के कुटम्बीजन धनी होंगे।
4. **मंगल+गुरु**–अष्टमेश गुरु तीसरे स्थान में मंगल के साथ होने से जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–दशमेश शुक्र तृतीय स्थान में स्वगृही होकर मंगल के साथ होने से जातक को कुटुम्ब, परिवार, भाई-बहनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।
6. **मंगल+शनि**–षष्ठेश शनि तृतीय स्थान में मंगल के साथ होने से जातक के मित्र लड़ाकू होंगे। जातक की मित्रों से कम बनेगी।
7. **मंगल+राहु**–तृतीय स्थान में मंगल के साथ राहु भाईयों से विरोध व मुकदमा करायेगा।
8. **मंगल+केतु**–तृतीय स्थान में मंगल के साथ केतु जातक को कीर्तिवान बनायेगा।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में

सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों का स्वामी है। यहां चतुर्थ स्थान में मंगल वृश्चिक राशि में स्वगृही है। मंगल की यह स्थिति 'रूचक योग' बना रही है। ऐसा जातक राजा

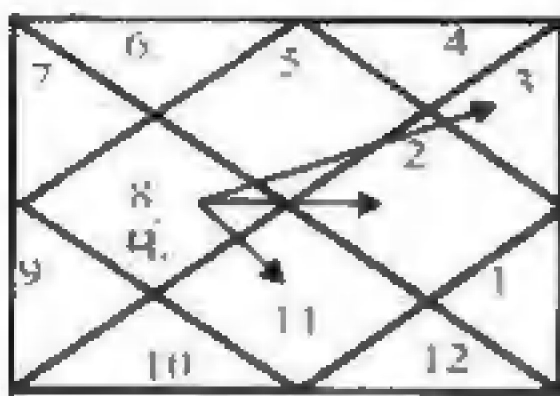

या राजा से किसी भी प्रकार से कम नहीं होता। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को मांगलिक बनाती है। ऐसा जातक स्वतंत्र विचारों का कलहकारी एवं हठी स्वभाव का किन्तु प्रबल पुरुषार्थी व्यक्ति होगा तथा अपनी बात के लिए मर मिटेगा।

दृष्टि–चतुर्थस्थ मंगल की दृष्टि सप्तम भाव (कुम्भ राशि), दशम भाव (वृष राशि) एवं एकादश भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः ऐसे जातक के गृहस्थ जीवन में कुछ कलह, प्रशासनिक नौकरी एवं उद्योग व्यापार के लिए स्थिति लाभप्रद है।

निशानी–जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी या गांव का मुखिया होगा। कृषि-भूमि से भी उसे लाभ प्राप्त होगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक का सर्वांगीण विकास होगा। जातक का भाग्योदय होगा। उसकी नौकरी लगेगी व घर का मकान बनेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–लग्नेश सूर्य चतुर्थ स्थान में मंगल के साथ होने से जातक तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां चतुर्थ स्थान में वृश्चिक राशिगत मंगल स्वगृही एवं चंद्रमा नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग', 'रूचक योग' एवं 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि हुई है। मंगल यहां दिक्बली भी है। फलतः 'महालक्ष्मी योग' मुखरित हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि सप्तम भाव (कुंभ राशि), दशम भाव (वृष राशि) एवं एकादश भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी तथा महाधनी होगा। राज्य सरकार, (राजनीति) में जातक का प्रभाव होगा तथा जातक व्यापार व्यवसाय से भी धन अर्जित करेगा।
3. **मंगल+बुध**–धनेश, लाभेश बुध चतुर्थ स्थान में मंगल के साथ होने से जातक महाधनी होगा। उसके पास अनेक भवन व अनेक वाहन होंगे।
4. **मंगल+गुरु**–अष्टमेश गुरु मंगल के साथ चतुर्थ स्थान में होने से जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
5. **मंगल+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र चतुर्थ स्थान में मंगल के साथ होने से जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक का ननिहाल शक्तिशाली होगा।
6. **मंगल+शनि**–षष्टेश शनि चतुर्थ स्थान में मंगल के साथ होने से जातक की माता का स्वास्थ्य खराब रहेगा। जातक की पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की होगी।

7. **मंगल+राहु**–चतुर्थ स्थान में मंगल के साथ राहु माता के लिए कष्टप्रद होता है। भूमि पक्ष में विवाद होगा।

8. **मंगल+केतु**–चतुर्थ स्थान में मंगल के साथ केतु जातक को बड़ी भू-सम्पत्ति एवं बड़े वाहन का स्वामी बनायेगा।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में

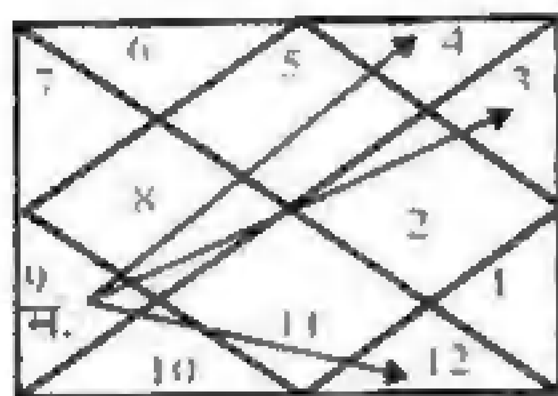

सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों स्थान का स्वामी है। यहां पंचम स्थान में मंगल अपनी मित्र धनु राशि में होगा। मंगल यहां ज्यादा प्रसन्न रहेगा। क्योंकि धनु राशि अग्नि तत्त्व प्रधान है। मंगल भी अग्नि तत्त्व वाला है। मंगल अपनी राशि (मेष) में नवम अर्थात् नवम से नवम स्थान पर है। फलत: जातक परम भाग्यशाली होगा। उसे संतति एवं श्रेष्ठ विद्या सुख प्राप्त होगा। उसे जीवन में सभी भौतिक सुख मिलते हैं।

दृष्टि–यहां मंगल की दृष्टि अष्टम भाव (मीन राशि), लाभ स्थान (मिथुन राशि) एवं व्यय भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सफल होगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। यात्राएं करता रहेगा और उसे यात्राओं से लाभ की प्राप्ति होती रहेगी।

निशानी–जातक का सही भाग्योदय प्रथम पुत्र संतति के बाद शुरु होगा। जातक प्रखर बुद्धिशाली एवं कुटनीतिज्ञ होगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक की विलक्षण उन्नति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–लग्नेश सूर्य पंचम स्थान में मंगल के साथ होने से जातक बहुत पुत्रों वाला होगा।

2. **मंगल+चंद्र**–यहां पंचम स्थान में धनु राशि में बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (मीन राशि), लाभ स्थान (मिथुन राशि) एवं व्यय भाव (कर्क राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: इस लक्ष्मी योग के कारण जातक व्यापार-व्यवसाय में यथेष्ट धन अर्जित करेगा। जातक दीर्घजीवी होगा तथा ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

3. **मंगल+बुध**–धनेश, लाभेश बुध पंचम स्थान में होने से जातक विद्यावान, प्रज्ञावान होगा। जातक को पुत्र-पुत्री दोनों का लाभ होगा।
4. **मंगल+गुरु**–अष्टमेश गुरु पंचम स्थान में मंगल के साथ होने से जातक को पांच पुत्र देगा। जातक धर्म प्रधान शिक्षा का मर्मज्ञ होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र पंचम स्थान में मंगल के साथ होने से जातक कलाशास्त्र का जानकार होगा। जातक को पुत्र-पुत्री सभी का सुख मिलेगा।
6. **मंगल+शनि**–षष्टेश शनि पंचम स्थान में मंगल के साथ होने से एकाध संतति की अकाल मृत्यु का जिम्मेदार होगा। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु की पंचम स्थान में उपस्थिति संतान सुख में बाधक है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु पंचम स्थान में गर्भपात, गर्भस्राव एवं शल्य चिकित्सा का योग बनाता है।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति षष्टम स्थान में

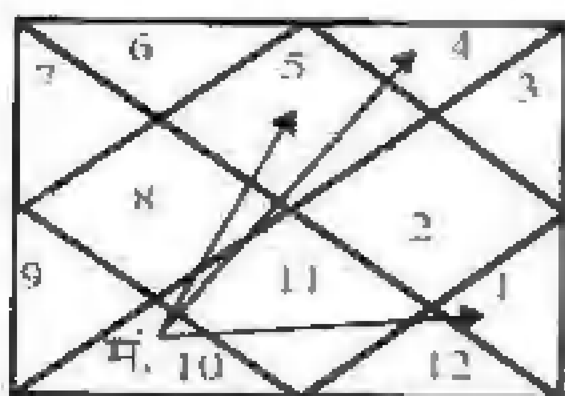

सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों स्थान का स्वामी है। यहां छठे स्थान में मंगल मकर राशि में उच्च का होगा। मंगल मकर राशि के 28 अंशों में परमोच्च का होगा। मंगल की यह स्थिति विपरीत राजयोग कारक है। जातक धनी होगा तथा ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में पूर्णतः सक्षम होगा। ऐसा जातक रौबीले व्यक्तित्व का धनी होगा। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।

दृष्टि–मकर राशिगत मंगल की दृष्टि भाग्य भवन (मेष राशि), द्वादश भाव (कर्क राशि) एवं लग्न भाव (सिंह राशि) पर होगी। मंगल की यह स्थिति जातक के सौभाग्य में वृद्धि करेगी। जातक को पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा। जातक महत्त्वाकांक्षी एवं खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–जातक की सम्पत्ति विवादास्पद रहेगी। सुखभंग योग एवं भाग्यभंग योग के कारण जातक को प्रथम प्रयास में सफलता नहीं मिलेगी। जातक को कार्य की सफलता हेतु निरन्तर परिश्रम एवं बार-बार प्रयास करने होंगे।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा में भाग्य खिलेगा, पराक्रम बढ़ेगा एवं जातक को परिश्रम का फल मिलेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–लग्नेश सूर्य छठे स्थान में होने से जातक को परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा। यहां विपरीत राजयोग बनेगा। फलत: जातक धनी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां छठे स्थान में मकर राशिगत मंगल उच्च का होगा। मंगल की यह स्थिति 'सुखभंग योग' एवं 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि करती है पर व्ययेश चंद्रमा के छठे जाने से सरल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि हुई है। अत: लक्ष्मी योग बना। ऐसा जातक संघर्ष के बाद धनी होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान (मेष राशि), व्यय भाव (कर्क राशि) एवं लग्न भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक निश्चय ही भाग्यशाली, धनी एवं व्ययशील (खर्चीली) प्रवृत्ति का स्वामी होगा।
3. **मंगल+बुध**–धनेश, लाभेश बुध मंगल के साथ छठे हो तो जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।
4. **मंगल+गुरु**–अष्टमेश गुरु छठे होने से विपरीत राजयोग एवं नीचभंग राजयोग बनेगा। जातक राजा या राजा से कम वैभवशाली नहीं होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र छठे होने से जातक का पराक्रम भंग होगा।
6. **मंगल+शनि**–षष्टेश व सप्तमेश शनि छठे स्थान में मंगल के साथ 'किम्बहुना योग' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के तुल्य धनी एवं पराक्रमी होगा।
7. **मंगल+राहु**–यहां छठे स्थान में राहु योग कारक है। जातक के गुप्त शत्रु होंगे। उनसे सावधान रहना होगा।
8. **मंगल+केतु**–छठे स्थान में मंगल के साथ केतु रोग में वृद्धिकारक है।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में

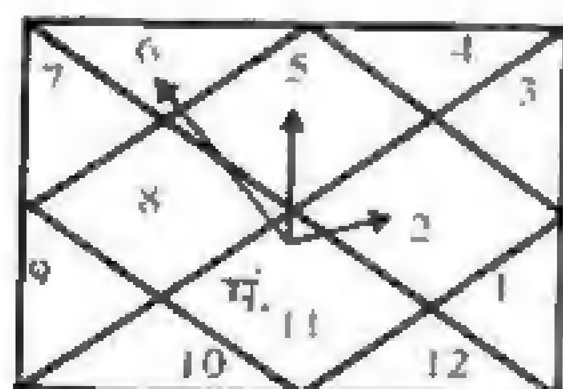

सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों स्थान का स्वामी है। सप्तमस्थ मंगल यहां कुंभ (शत्रु) राशि में होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' बनाती है। फलत: जातक हठी व क्रोधी होगा। उसका दाम्पत्य जीवन कलहकारी रहेगा। जातक ऊर्जावान, रतिक्रिया में स्त्री को हराने वाला, कर्मठ व तेजस्वी पुरुष होगा।

दृष्टि–सप्तम भावगत मंगल की दृष्टि दशम भाव (वृष राशि), लग्न स्थान (सिंह राशि) एवं धन भाव (कन्या राशि) पर होगी। ऐसे जातक को राजपक्ष में

लाभ, राजा से सम्मान, परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक अपने पुरुषार्थ से धन कमायेगा।

निशानी—ऐसा जातक उत्तम प्रशासक, प्रबंधक के रूप में ज्यादा यश प्राप्त करता है।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा। उसे यथेष्ट धन, नौकरी-व्यवसाय की प्राप्ति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—लग्नेश सूर्य सातवें स्थान में मंगल के साथ शुभ फलदायक है। जातक परिश्रमी एवं ऊर्जावान होगा।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां सप्तम स्थान में कुम्भ राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव (वृष राशि), लग्न भाव (सिंह राशि) एवं धन भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलतः 'लक्ष्मी योग' पूर्ण रूप से मुखरित हुआ। ऐसे जातक को हाथ में लिए गए प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। जातक धनवान एवं साधन-सम्पन्न होगा। जातक राजनीति में प्रभाव रखने वाला महत्वपूर्ण व्यक्ति होगा।
3. **मंगल+बुध**—धनेश, लाभेश बुध सातवें मंगल के साथ होने से जातक को पत्नी पक्ष (ससुराल) से धन की प्राप्ति होगी।
4. **मंगल+गुरु**—अष्टमेश गुरु मंगल के साथ सातवें स्थान में होने पर जातक को गृहस्थ सुख में बाधा पहुंच सकती है।
5. **मंगल+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र सातवें स्थान में मंगल के साथ होने से जातक महान पराक्रमी व राजनीतिज्ञ होगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि 'द्विभार्या योग' कराता है।
7. **मंगल+राहु**—सप्तम स्थान में मंगल के साथ राहु द्विविवाह कराता है।
8. **मंगल+केतु**—सप्तम स्थान में मंगल के साथ केतु पत्नी से वैचारिक मतभेद उत्पन्न करता है।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में

सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों स्थान का स्वामी है। यहां अष्टम स्थान में मंगल मीन (मित्र) राशि में होगा। मंगल की इस स्थिति से सुखभंग योग एवं भाग्यभंग योग की

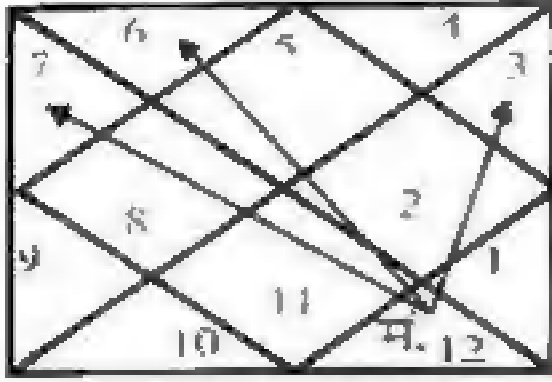

सृष्टि होती है। मंगल की यह स्थिति संघर्ष की द्योतक है। जातक को भौतिक सुखों उपलब्धियों की प्राप्ति आसानी से नहीं होगी। जातक को प्रत्येक सफलता की प्राप्ति हेतु निरन्तर संघर्ष करना पड़ेगा। ऐसी कुण्डली 'मांगलिक' भी होगी। ऐसा मंगल गृहस्थ सुख में विवाद उत्पन्न करता है।

दृष्टि—अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि एकादश स्थान (मिथुन राशि), धन भाव (कन्या राशि) एवं पराक्रम स्थान (तुला राशि) पर होगी। ऐसे जातक को धन लाभ होता है। जातक को व्यापार से लाभ होता है। जातक पराक्रमी होता है।

निशानी—इस भाव में मंगल पित्त रोग, रक्त विकार, फोड़े-फुन्सी, घाव, चीरफाड़, बवासीर, मस्सा, ऑपरेशन इत्यादि को बताता है।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—लग्नेश सूर्य आठवें मंगल के साथ होने से दो विवाह कराता है।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां दोनों ग्रह अष्टम स्थान मीन राशि में होंगे। मंगल की यह स्थिति 'सुखभंग योग' एव 'राजभंग योग' की सृष्टि करेगी। परन्तु व्ययेश चंद्रमा के अष्टम में जाने से 'सरल' नाम विपरीत राजयोग की सृष्टि होने से 'लक्ष्मी योग' मुखरित हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (मिथुन राशि), धन भाव (कन्या राशि) एवं पराक्रम भाव (तुला राशि) को देखेंगे। फलत: जातक व्यापार-व्यवसाय में धन अर्जित करेगा एवं महान पराक्रमी होगा।
3. **मंगल+बुध**—धनेश, लाभेश बुध आठवें स्थान में होने से जातक को धनहीन कर देता है।
4. **मंगल+गुरु**—अष्टमेश गुरु अष्टम स्थान में स्वगृही होकर मंगल के साथ होने से विपरीत राजयोग बना पर गृहस्थ सुख में परेशानी होगी।
5. **मंगल+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र अष्टम स्थान में मंगल के साथ होने से जातक को गुप्त रोग देगा।
6. **मंगल+शनि**—षष्टेश शनि अष्टम स्थान में मंगल के साथ 'विपरीत राजयोग' बनायेगा। परन्तु जातक के पत्नी से विचार नहीं मिलेंगे। वैधव्य योग संभव है।

7. **मंगल+राहु**—अष्टम स्थान में मंगल के साथ राहु होने से दो पत्नी का योग बनता है।

8. **मंगल+केतु**—अष्टम स्थान में मंगल के साथ केतु वैवाहिक सुख में कलह कराता है।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में

सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों स्थान का स्वामी है। यहां नवमस्थ मंगल मेष राशि में स्वगृही होगा। ऐसा जातक महान भाग्यशाली होगा। जातक को उत्तम शिक्षा, सम्पत्ति-स्त्री, संतान, घर-वाहन, नौकर-चाकर का पूर्ण सुख मिलता है। जातक ऐश्वर्यशाली एवं वैभवपूर्ण जीवन जीता है।

दृष्टि—स्वगृही मंगल की दृष्टि व्यय भाव (कर्क राशि), पराक्रम स्थान (तुला राशि) एवं सुख भाव (वृश्चिक राशि) अपने ही घर पर होगी। फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का व्यक्ति होगा। जातक पराक्रमी होगा तथा बड़ी जमीन-जायदाद का स्वामी होगा।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। उसे जमीन जायदाद की प्राप्ति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार लग्नेश सूर्य मंगल के साथ नवम भाव में हो तो 'किम्बहुना योग' बनता है। जातक राजा के तुल्य पराक्रमी एवं धनी होगा।

2. **मंगल+चंद्र**—यहां मेष राशिगत मंगल स्वगृही एवं चंद्रमा उच्चाभिलाषी होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (कर्क राशि), पराक्रम भाव (तुला राशि) एवं चतुर्थ भाव जो कि स्वयं मंगल का मुखरित हुआ। ऐसा जातक अति सौभाग्यशाली एवं धनवान होगा। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा तथा, गांव के मुखिया या अन्य प्रतिष्ठित पद को प्राप्त करेगा। ऐसा जातक व्ययशील (उदार) प्रवृत्ति वाला होगा।

3. **मंगल+बुध**—धनेश, लाभेश बुध नवम स्थान में मंगल के साथ होने से जातक व्यापार के द्वारा खूब धन कमायेगा। उसे पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

4. **मंगल+गुरु**–अष्टमेश गुरु नवम स्थान में मंगल के साथ हो तो जातक को गृहस्थ सुख, स्त्री-संतान का सुख पूर्ण प्राप्त होता है।

5. **मंगल+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र नवम स्थान में मंगल के साथ हो तो जातक को राज-सरकार में ऊंचा पद प्राप्त होता है।

6. **मंगल+शनि**–षष्टेश शनि के नवम भाव में मंगल के साथ होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा होगा तथा किसी भी प्रकार से राजा से कम नहीं होगा।

7. **मंगल+राहु**–भाग्य स्थान में मंगल के साथ राहु का यह योग भाग्योदय में बाधा डालता है फिर भी जातक भाग्यशाली होता है।

8. **मंगल+केतु**–भाग्य स्थान में मंगल के साथ केतु भाग्योदय हेतु प्रारम्भिक संघर्ष का द्योतक है।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में

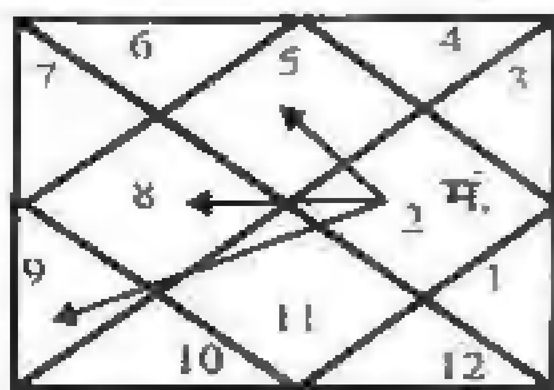

सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों स्थान का स्वामी है। यहां दशम स्थान में मंगल वृष (सम) राशि में होगा। मंगल यहां दिग्बली होगा। जिसके कारण 'कुलदीपक योग' भी बनेगा। जातक भाग्यशाली होगा। ऐसे जातक को उत्तम संतति, उत्तम भवन, उत्तम वाहन, नौकर-चाकर इत्यादि का पूर्ण सुख मिलता है। जातक कुल-परिवार व कुटुम्ब का नाम रोशन करेगा।

दृष्टि–दशमस्थ मंगल लग्न स्थान (सिंह राशि), सुख भाव (वृश्चिक राशि) एवं पंचम भाव (धनु राशि) को देखेगा। फलत: जातक को स्वस्थ देह, दृढ़ इच्छा शक्ति, उत्तम संतति एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

निशानी–जातक के दो या तीन पुत्र जरूर होंगे। जातक IAS, IPS, RJS इत्यादि प्रशासनिक कार्यों में उत्तम सफलता प्राप्त करेगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। जातक को जमीन-जायदाद, संतति एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–लग्नेश सूर्य दशम स्थान में मंगल के साथ हो तो जातक को उच्च राजपुरुष (I.A.S. या I.S.) बनाता है।

2. **मंगल+चंद्र**—यहां वृष राशिगत केन्द्रवर्ती चंद्रमा उच्च का होगा। 'यामिनीनाथ योग' बनेगा। मंगल यहां दिक्बली होगा तथा 'कुलदीपक योग' बनायेगा। फलत: यहां 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि हुई है। ऐसा जातक महाधनी होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान (सिंह राशि), चतुर्थ भाव जो मंगल का स्वयं का घर है (वृश्चिक राशि) एवं पंचम भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति तथा उत्तम वाहन का स्वामी होगा। जातक का सही अर्थों में भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**—धनेश, लाभेश बुध दशम स्थान में मंगल के साथ हो तो जातक को भूमि, भवन से धन दिलाता है।
4. **मंगल+गुरु**—अष्टमेश गुरु के साथ मंगल दशम स्थान में होने से जातक शत्रुओं का नाश करता है। जातक विद्यावान व गुणी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र मंगल के साथ दशम स्थान में 'मालव्य योग' बनाता है। जातक राजा या बड़ा राजपुरुष होगा।
6. **मंगल+शनि**—षष्ठेश शनि का दशम स्थान में मंगल के साथ होना जातक को सरकार में नौकरी दिलायेगा। जातक प्रबन्धन कार्य में श्रेष्ठ होगा।
7. **मंगल+राहु**—दशम स्थान में मंगल के साथ वृष का राहु जातक को हठी व दम्भी राजा बनायेगा।
8. **मंगल+केतु**—दशम स्थान में मंगल के साथ केतु जातक को तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी बनायेगा।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में

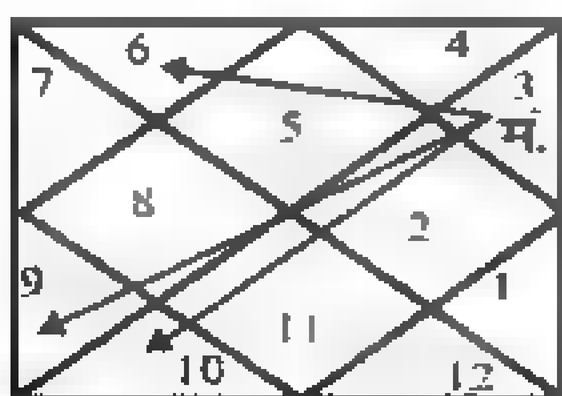

सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों स्थान का स्वामी है। एकादश स्थान में मंगल मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। यह मंगल जातक के जीवन में भौतिक उपलब्धियों में वृद्धि करायेगा। जातक को बुद्धि, तेज एवं प्रखर निर्णय शक्ति देगा।

दृष्टि—एकादश भावगत मंगल की दृष्टि धन भाव (कन्या राशि), पंचम भाव (धनु राशि) एवं छठे भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक धनी होगा। जातक को संतति सुख मिलेगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी—जातक पुत्रवान होगा। जातक के दो पुत्र अवश्य होंगे।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा व व्यापार चमकेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—लग्नेश सूर्य एकादश स्थान में मंगल के साथ होने से जातक उद्योगपति होगा।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां एकादश स्थान में मिथुन राशि में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (कन्या राशि), पंचम भाव (धनु राशि) एवं छठे भाव (मकर राशि) को देखेंगे। इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक स्थिति प्रथम संतति के बाद सुदृढ़ होगी।
3. **मंगल+बुध**—धनेश बुध एकादश स्थान में स्वगृही होकर मंगल के साथ होने से व्यापार-व्यवसाय से जातक को धनी बनायेगा।
4. **मंगल+गुरु**—अष्टमेश गुरु एकादश स्थान में मंगल के साथ होने से जातक को धनी व धार्मिक नेता या राजगुरु का सम्मान देगा।
5. **मंगल+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र एकादश स्थान में मंगल के साथ होने से जातक को महान पराक्रमी बनायेगा।
6. **मंगल+शनि**—षष्टमेश शनि एकादश स्थान में मंगल के साथ जातक के ससुराल को समाज में प्रतिष्ठित पद देगा।
7. **मंगल+राहु**—एकादश स्थान में मंगल के साथ राहु शुद्ध लाभांश में कटौती करेगा।
8. **मंगल+केतु**—एकादश स्थान में मंगल के साथ केतु धन (लाभांश) का नाश करेगा।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में

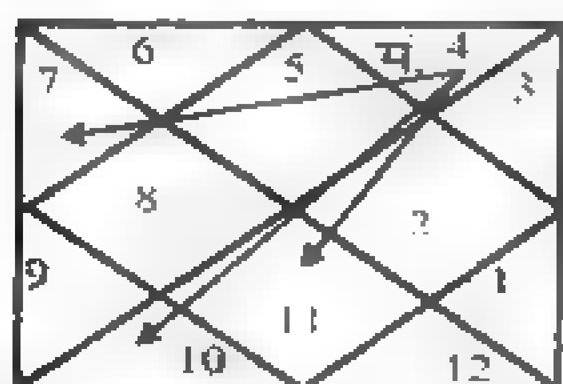

सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों स्थान का स्वामी है। द्वादश भाव में कर्क राशिगत मंगल यहां नीच का होगा। कर्क राशि के 28 अंशों में मंगल परम नीच का होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को 'डबल मांगलिक'

बनाती है। यह स्थिति जातक के दाम्पत्य सुख के लिए बाधक है तथा विलम्ब विवाह का योग बनाती है। मंगल के कारण 'सुखभंग योग' एवं 'भाग्यभंग योग' बना। फलतः सुखों की प्राप्ति हेतु जातक को अनेक प्रकार के कष्टों एवं असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

दृष्टि—द्वादश भावगत मंगल की दृष्टि पराक्रम स्थान (तुला राशि), छठे भाव (मकर राशि) एवं सप्तम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलतः सहोदर सुखों की हानि, गुप्त शत्रुओं का प्रकोप, जीवन साथी से वैचारिक भिन्नता, जातक को परेशान करते रहेंगे।

निशानी—इस भाव में मंगल नेत्र पीड़ा, रक्त विकार, पुलिस या अदालत के कारण जातक के जीवन में परेशानी उत्पन्न करता है।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक को मिले-जुले परिणाम प्राप्त होंगे। कठोर परिश्रम एवं प्रारंभिक संघर्ष के बाद ही सफलता हाथ लगेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार लग्नेश सूर्य द्वादश स्थान में मंगल के साथ होने से नेत्र पीड़ा एवं राजदण्ड देगा।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां द्वादश स्थान में कर्क राशि में चंद्रमा स्वगृही एवं मंगल नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि होगी। यद्यपि मंगल के कारण 'सुखभंग योग' तथा 'भाग्यभंग योग' बना था। तथापि व्यय भाव में व्ययेश स्वगृही होने से सरल नामक विपरीत राजयोग के कारण मंगल के अशुभ फल नष्ट हो जायेंगे। यहां 'महालक्ष्मी योग' मुखरित हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम भाव (तुला राशि), षष्टम भाव (मकर राशि) एवं [redacted] भाव (कुम्भ राशि) को देखेंगे। फलतः जातक महान पराक्रमी होगा एवं शत्रुओं का दमन करने में कामयाब होगा, परन्तु जातक सही अर्थों में धनी विवाह के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**—धनेश, लाभेश, बुध द्वादश स्थान में मंगल के साथ होने से जातक को भूमिहीन व दिवालिया कर देगा।
4. **मंगल+गुरु**—अष्टमेश गुरु द्वादश स्थान में मंगल के साथ 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। जातक धनी होगा पर संतान पक्ष से चिंतित रहेगा।
5. **मंगल+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र द्वादश स्थान में मंगल के साथ होने से पराक्रम भंग करेगा। जातक को जेल हो सकती है।

6. **मंगल+शनि**–षष्टेश शनि के द्वादश के स्थान में मंगल के साथ होने से जातक को राजदण्ड के कारण जेल हो सकती है।

7. **मंगल+राहु**–द्वादश स्थान में मंगल के साथ राहु जातक को भूमिहीन कर देगा। जातक बार बार मकान बदलता रहेगा।

8. **मंगल+केतु**–द्वादश स्थान में मंगल के साथ केतु जातक को भूमि से कष्ट देगा। भाईयों में विद्वेष होगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति

सिंहलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में

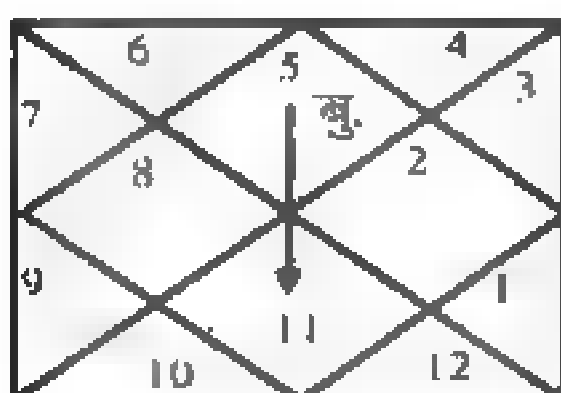

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है तथा यह मारक स्थान का स्वामी है अतः अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा, जितनी अपेक्षा की जाती है। यहां लग्नस्थ बुध सिंह (मित्र) राशि में होगा। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बना। जातक सुगठित व सुन्दर देह का स्वामी होगा। जातक कुशाग्र बुद्धि वाला तेजस्वी व्यक्ति होगा। ऐसा जातक ज्योतिष, गणित, तर्कशास्त्र, अध्ययन-अध्यापन, लेखन-सम्पादन में रुचि रखने वाला, कुटुम्ब-परिवार का नाम रोशन करने वाला प्रसिद्ध व्यक्ति होता है।

दृष्टि—लग्नस्थ बुध की दृष्टि सप्तम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलतः जातक को गृहस्थ व संतान का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

निशानी—जातक खुशमिजाज होगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक धनी होगा। उसे व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। प्रथम भाव में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश-लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां पर यह युति बहुत सार्थक है। लग्न में सूर्य होने से रविकृत राजयोग बनेगा। बुध यहां उच्चाभिलाषी है जो केन्द्र में कुलदीपक योग बनायेगा। इस योग के कारण ऐसा जातक धनवान एवं बुद्धिमान होगा। उच्च

पदस्थ राज्याधिकारी होगा। जातक समाज का बहुप्रतिष्ठित तथा एक सफल व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**—जातक खर्चीले स्वभाव का व्यक्ति होगा एवं विदेश यात्रा करेगा।
3. **बुध + मंगल**—जातक अत्यधिक धनी व भाग्यशाली होगा।
4. **बुध + गुरु**—जातक आध्यात्मिक विद्या का जानकार, उच्च कोटि का दार्शनिक होगा।
5. **बुध + शुक्र**—धनेश तृतीयेश की युति से व्यक्ति पुरुषार्थ के द्वारा धन अर्जित करेगा।
6. **बुध + शनि**—धनेश, सप्तमेश की युति जातक को ससुराल से धन दिलायेगी।
7. **बुध + राहु**—जातक को धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
8. **बुध + केतु**—जातक कीर्तिवान होगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में

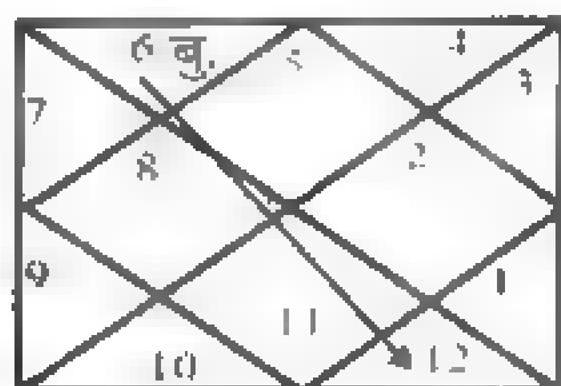

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अत: अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा, जितनी अपेक्षा की जाती है। यहां द्वितीय स्थानगत बुध कन्या राशि में उच्च का होगा। कन्या राशि में 15 अंशों तक बुध परमोच्च का होगा। ऐसा जातक महाधनी होगा। जातक की वाणी मीठी व लच्छेदार होगी। जातक व्यापार प्रिय होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय व उद्योग के माध्यम से यथेष्ठ धन अर्जित करेगा। जातक के कुटम्बी सम्पन्न होंगे। कुटुम्ब में प्रेम रहेगा।

दृष्टि—द्वितीय भावगत बुध की दृष्टि अष्टम भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक का रुपया बीमारी पर खर्च होगा।

निशानी—ऐसा जातक वाक्पटु होगा। उसकी वाणी का जादू चलेगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक खूब धन कमायेगा। जातक का व्यापार-व्यवसाय उन्नति को प्राप्त करेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। द्वितीय स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध

के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां उच्च का होगा। बलवान धनेश की लग्नेश के साथ यहां पर यह युति बहुत ही सार्थक है। जातक अत्यधिक धनी व्यक्ति होगा। जातक अपने पुरुषार्थ व बुद्धिबल से बहुत धन कमायेगा। जातक की आयु लम्बी होगी क्योंकि दोनों ग्रहों की दृष्टि अष्टम भाव पर होगी। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।

2. **बुध + चंद्र**–धनेश+खर्चेश की युति जातक के धन का खर्च कराती रहेगी।
3. **बुध + मंगल**–धनेश+भाग्येश की युति के कारण जातक महाधनी एवं भाग्यशाली होगा।
4. **बुध + गुरु**–धनेश+पंचमेश की युति से जातक का भाग्योदय प्रथम पुत्र संतति के बाद होगा।
5. **बुध + शुक्र**–धनेश दशमेश की युति से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक को ऊंची नौकरी व बड़ा व्यापार प्राप्त होगा। जातक के मित्र बहुत होंगे।
6. **बुध + शनि**–बलवान धनेश के साथ सप्तमेश की युति से 'कलत्रमूल धनयोग' बनेगा। जातक को ससुराल पक्ष से धन प्राप्त होगा।
7. **बुध + राहु**–बलवान धनेश के साथ राहु की युति जातक की वाणी को घमण्डी बना देगी।
8. **बुध + केतु**–बलवान धनेश के साथ केतु जातक को यशस्वी धनी बनायेगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में

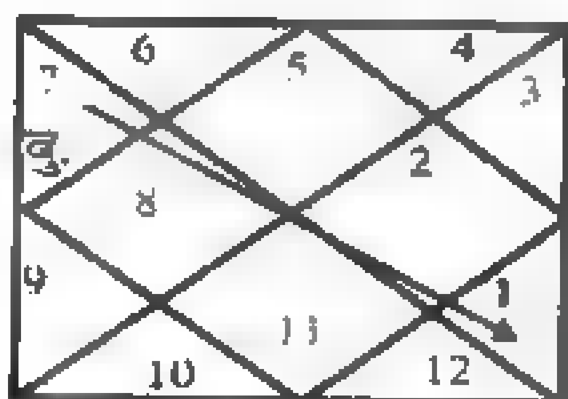

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अतः अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा, जितनी अपेक्षा की जाती है। यहां तृतीयस्थ बुध तुला (मित्र) राशि में होगा। मिथुन राशि में पंचम, कन्या राशि से द्वितीय स्थान पर होने के कारण बुध यहां अत्यंत शुभ फलदाई है। जातक पराक्रमी एवं कुशल न्यायाधीश होगा। जातक मित्रों में, कुटुम्ब में हितकर वाणी बोलता हुआ न्याय तौलेगा। जातक धनी व यशस्वी होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। तृतीय स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध

के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां नीच राशि का होगा तथा दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान पर होगी जो सूर्य की उच्च राशि है। फलत: जातक बुद्धिशाली, भाग्यशाली एवं पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जायेगा। जातक को मित्र-परिजनों से सहायता मिलती रहेगी। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा बुध के साथ तृतीय स्थान में होने से जातक को विवादास्पद व्यक्ति बनायेगा।
3. **बुध + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल तृतीय स्थान में बुध के साथ होने से जातक का पराक्रम बढ़ायेगा।
4. **बुध + गुरु**–अष्टमेश गुरु तृतीय स्थान में बुध के साथ होने से जातक के मित्र उसे धोखा देंगे।
5. **बुध + शुक्र**–तृतीयेश दशमेश शुक्र के स्वगृही होकर बुध के साथ होने से जातक महान पराक्रमी व नेता होगा।
6. **बुध + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि उच्च के बुध के साथ होने से जातक का ससुराल धनी होगा। जिसकी वजह से जातक का पराक्रम बढ़ेगा।
7. **बुध + राहु**–तृतीय स्थान में राहु बुध के साथ होने से जातक का पराक्रम भंग होगा।
8. **बुध + केतु**–तृतीय स्थान में केतु बुध के साथ हो तो कीर्ति देगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में

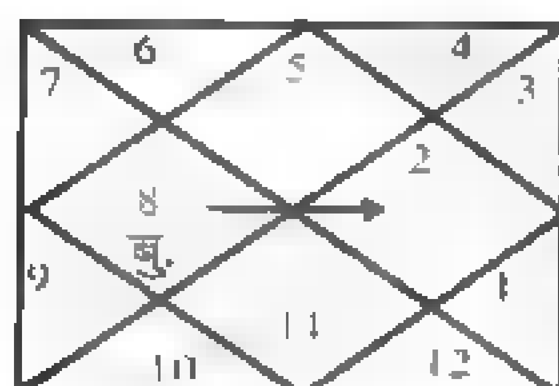

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अत: अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा, जितनी अपेक्षा की जाती है। यहां चतुर्थ स्थान में बुध वृश्चिक (सम) राशि में होगा। बुध की यह स्थिति 'कुलदीपक योग' की सृष्टि करेगी। बुध कन्या राशि में तीसरे एवं मिथुन राशि में छठे स्थान पर होगा। फलत: जातक का ननिहाल पक्ष सम्पन्न होगा। पर विचारधारा कम मिलेगी। जातक के पास वाहन होगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावस्थ बुध की दृष्टि दशम भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक के पास उत्तम नौकरी एवं अच्छा व्यापार होगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध के केन्द्रवर्ती होने से 'कुलदीपक योग' की सृष्टि होगी। यहां बैठ कर दोनों ग्रह दशम स्थान को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिशाली, सुखी व सम्पन्न व्यक्ति होगा। जातक को माता-पिता की सम्पत्ति, उत्तम वाहन एवं उत्तम भवन का सुख मिलेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा नीच का होकर बुध के साथ होने से चतुर्थ भाव में जातक को दो माताओं से पालित करायेगा।
3. **बुध + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल बुध के साथ होने से 'रूचक योग' के कारण जातक को राजा के समान पराक्रमी बनायेगा।
4. **बुध + गुरु**—अष्टमेश गुरु चतुर्थ स्थान में बुध के साथ होने से जातक को धनी बनायेगा पर वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
5. **बुध + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र बुध के साथ चतुर्थ भाव में होने से जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
6. **बुध + शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि चतुर्थ स्थान में बुध के साथ होने से जातक की माता धनी होगी पर बीमार होगी।
7. **बुध + राहु**—राहु चतुर्थ स्थान में बुध के साथ होने से वाहन दुर्घटना का भय देता है।
8. **बुध + केतु**—केतु चतुर्थ स्थान में बुध के साथ होने से जातक को वैभवशाली जीवन देगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अतः अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा,

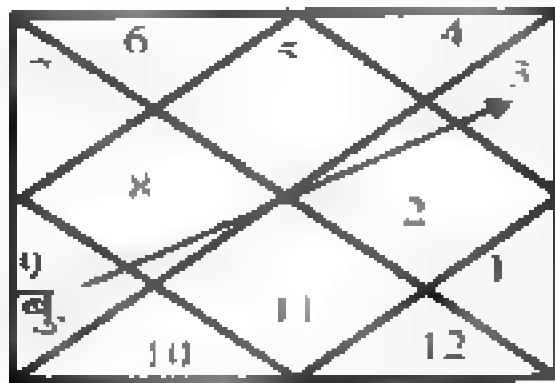

जितनी अपेक्षा की जाती है। यहां पंचम स्थान में बुध धनु (सम) राशि में होगा। बुध मिथुन राशि में सातवें एवं कन्या राशि में चौथे स्थान पर होने से शुभ फलदाई है। जातक को उच्च शैक्षणिक डिग्री (Higher Educational Degree) मिलेगी।

दृष्टि–पंचमस्थ बुध की दृष्टि एकादश भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। पंचम भाव में धनु राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि बुध का स्वयं का घर है फलत: जातक बुद्धिमान होगा। जातक आध्यात्मिक विद्या, तंत्र, ज्योतिष इत्यादि का जानकार होगा। जातक स्वयं शिक्षित होगा एवं उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक को पुत्र एवं कन्या दोनों संतति की प्राप्ति होगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा पंचम स्थान में बुध के साथ होने से संतान से चिंता करायेगा।
3. **बुध + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल पंचम स्थान में बुध के साथ होने से पुत्र संतति देगा। जातक के पुत्र तेजस्वी होंगे।
4. **बुध + गुरु**–अष्टमेश गुरु पंचम स्थान में बुध के साथ होने से पुत्र संतति जरूर देगा पर जातक के एकाध पुत्र की अकाल मृत्यु होगी।
5. **बुध + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र पंचम स्थान में बुध के साथ होने से कन्या संतति की बाहुल्यता देगा।
6. **बुध + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि पंचम स्थन में बुध के साथ होने से कन्या संतति की बाहुल्यता देगा परन्तु जातक की एकाध संतति की अकाल मृत्यु होगी।
7. **बुध + राहु**–पंचम स्थान में राहु बुध के साथ होने से संतति प्राप्ति में में बाधक है।
8. **बुध + केतु**–पंचम स्थान में केतु बुध के साथ होने से कन्या संतति देगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति षष्टम स्थान में

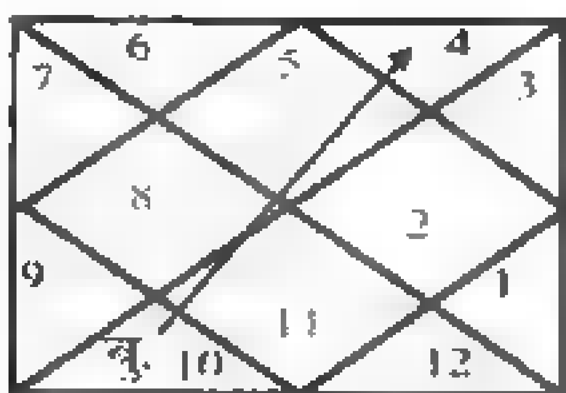

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अतः अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा, जितनी अपेक्षा की जाती है। बुध यहां छठे स्थान में मकर (सम) राशि में होगा। बुध की इस स्थिति से 'धनहीन योग' एवं 'लाभभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक को व्यापार में काफी परेशानी-दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। धन कठिनता से एकत्रित होगा।

दृष्टि—षष्टमस्थ बुध की दृष्टि द्वादश भाव (कर्क राशि) पर होगी। ऐसे जातक के धन की रक्षा नहीं हो पायेगी।

निशानी—यहां अकेला बुध शत्रुओं की वृद्धि करेगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। षष्टम भाव में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। सूर्य के छठे स्थान में होने से 'लग्न-भंगयोग' बनेगा तथा बुध के कारण धनहीन योग, लाभभंग योग की सृष्टि होगी। फलतः यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं रहेगी। जातक को धन कमाने हेतु, भाग्योदय हेतु काफी परिश्रम करना पड़ेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। रुपया पास में आयेगा पर टिकेगा नहीं। इस युति के कारण जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा पर जीवन संघर्षशील रहेगा।
2. **बुध + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा छठे में स्थान में बुध के साथ होने से धन की हानि होगी। जातक को गुप्त रोग होगा।
3. **बुध + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल छठे होने से विपरीत राजयोग बना रहा है। बुध के साथ जातक के शत्रु शक्तिशाली होंगे।
4. **बुध + गुरु**—अष्टमेश गुरु छठे जाने से विपरीत राजयोग बना परंतु बुध के साथ होने से धन का संघर्ष रहेगा।
5. **बुध + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र छठे बुध के साथ होने से मिश्रित फल देगा।

6. **बुध + शनि**—षष्टेश शनि यहां विपरीत राजयोग के साथ

7. **बुध + राहु**—राहु छठे होने से राजयोग कारक है पर बुध के साथ होने से जातक को धन की तंगी बनी रहेगी।

8. **बुध + केतु**—केतु छठे बुध के साथ होने से गुप्त शत्रु बढ़ायेगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में

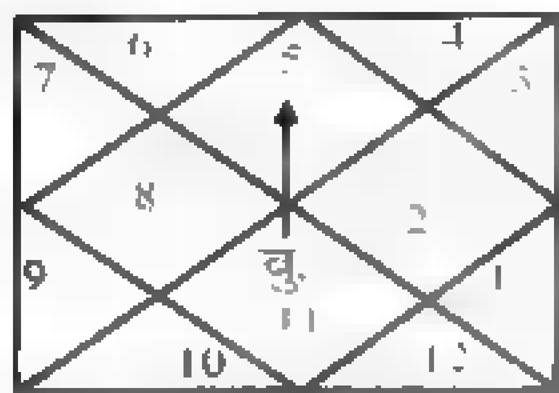

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अत: अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा, जितनी अपेक्षा की जाती है। यहां सप्तम स्थान में बुध कुम्भ (सम) राशि में होगा। बुध की इस स्थिति में 'कुलदीपक योग' बना। ऐसा जातक धनवान, यशोवान होता है। जातक को उत्तम पत्नी व संतान का सुख मिलता है। जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करता है।

दृष्टि—सप्तमस्थ बुध की दृष्टि लग्न स्थान में अपने ही घर कन्या राशि पर होगी। फलत: लग्नाधिपति योग बना। जातक को परिश्रम का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा।

निशानी—जातक अपनी पसंद से विवाह करेगा। जातक की पत्नी सुंदर होगी।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को धन की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। सप्तम स्थान में कुम्भ राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश-लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रह यहां बैठकर लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान होगा एवं बुद्धि बल से आगे बढ़ेगा। उसको अल्प प्रयत्न में ही सफलता मिल जायेगी। जातक धनवान होगा। बुध केन्द्र में होने से कुलदीपक योग बनेगा जिसके कारण जातक कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा।

2. **बुध + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा सातवें स्थान में बुध के साथ होने से गृहस्थ सुख में कलह कराता है।

3. **बुध + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल सातवें स्थान में बुध के साथ होने से जातक का ससुराल धनाढ्य व प्रतिष्ठित होगा।

4. **बुध + गुरु**—अष्टमेश गुरु के सातवें स्थान में बुध के साथ होने से गृहस्थ व संतान सुख उत्तम है।

5. **बुध + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र सातवें स्थान में बुध के साथ होने से जातक का जीवनसाथी सुंदर होगा।

6. **बुध + शनि**—षष्टेश सप्तमेश शनि बुध के साथ होने से जातक की पत्नी धनी होगी पर अभिमानी होगी।

7. **बुध + राहु**—राहु सातवें बुध के साथ, गृहस्थ सुख में बाधक होता है।

8. **बुध + केतु**—केतु सातवें बुध के साथ होने से पत्नी से झगड़ा-तकरार कराता रहेगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में

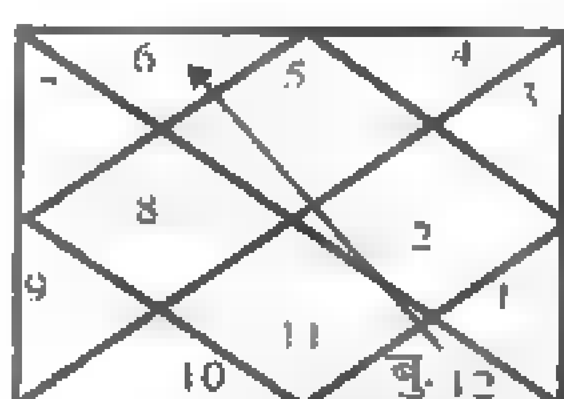

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अतः अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा, जितनी अपेक्षा की जाती है। अष्टम स्थान में बुध मीन (नीच) राशि में होगा। मीन राशि के 15 अंशों में बुध परम नीच का होगा। बुध की इस स्थिति में धनहीन योग एवं लाभभंग योग की सृष्टि होगी। फलतः जातक को व्यापार-व्यवसाय में दिक्कतें आयेंगी। लोग उससे अकारण ईर्ष्या द्वेष रखेंगे। जिससे धन प्राप्ति में बाधा आयेगी पर अंतिम सफलता निश्चित है।

दृष्टि—अष्टमस्थ बुध की दृष्टि धन भाव (कन्या राशि) अपनी उच्च राशि पर होगी। फलतः विद्या-बुद्धि, धन व कुटुम्ब सुख की प्राप्ति होती रहेगी।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। अष्टम स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां नीच राशि का होगा, जहां बैठकर बुध अपनी उच्च राशि धन स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक बुद्धिमान व वैभवशाली होगा। बुध के आठवें जाने से 'धनहीन योग', 'लाभभंग योग'

बनेगा तथा सूर्य आठवें जाने से 'लग्नभंग योग' बनेगा। यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक को धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक को ज्यादा परिश्रम का योग्य फल मिलेगा। ऐसी विषमता बनी रहेगी। परन्तु जातक का कोई काम धन की कमी से रुका नहीं रहेगा।

2. **बुध + चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा के अष्टम स्थान में होने से विपरीत राजयोग बना। बुध के साथ चंद्रमा अष्टम स्थान में शल्य चिकित्सा योग बताता है।
3. **बुध + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल आठवें स्थान में बुध के साथ होने से व्यक्ति भूमि विवाद में फंसेगा।
4. **बुध + गुरु**–अष्टमेश अष्टम में 'नीचभंग राजयोग' भी बना रहा है। ऐसा जातक धनी एवं वैभवशाली जीवन जीयेगा।
5. **बुध + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र बुध के साथ आठवें होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक धनी एवं प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
6. **बुध + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि आठवें बुध के साथ 'विपरीत राजयोग' बनायेगा। जातक धनी होगा पर गृहस्थ सुख में कमी रहेगी।
7. **बुध + राहु**–अष्टम स्थान में राहु बुध के साथ होने से जातक की आयु में कमी आयेगी।
8. **बुध + केतु**–अष्टम स्थान में केतु के साथ बुध जातक को बीमार करायेगा। ऑपरेशन का भय रहेगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में

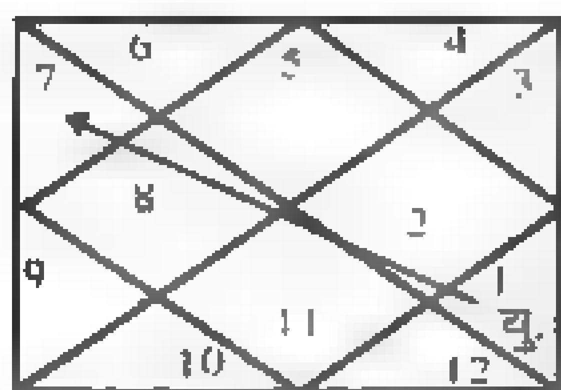

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अत: अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा, जितनी अपेक्षा की जाती है। यहां नवम स्थान में बुध मेष (सम) राशि में होगा। जातक भाग्यशाली होगा पर हठी, धूर्त, निर्लज्ज व स्वेच्छाचारी भी होगा। जातक बुद्धिबल से पैसा कमायेगा।

दृष्टि–नवमस्थ बुध की दृष्टि तृतीय स्थान (पराक्रम भाव) पर होगी। फलत: जातक भाईयों, परिजनों व मित्रों की मदद करेगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं उसे धन की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। नवम स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां उच्च का होगा एवं तृतीय स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। बलवान लग्नेश की धनेश से युति यहां सार्थक सिद्ध होगी। फलत: जातक बुद्धिशाली धनवान एवं भाग्यशाली होगा। सूर्य की कृपा से जातक को 22 से 24 वर्ष की आयु के मध्य अच्छी लाईन मिल जायेगी। जातक उच्च राज्यधिकारी बन सकता है। जातक को पिता की सम्पत्ति प्राप्त होगी। जातक का पराक्रम, जनसम्पर्क बहुत तेज रहेगा। जातक समाज का बहु प्रतिष्ठित व गणमान्य व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा भाग्य स्थान में बुध के साथ होने से जातक के भाग्य में उतार-चढ़ाव आयेगा।
3. **बुध + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल बुध के साथ नवम स्थान में स्वगृही होने से जातक भाग्यशाली एवं महाधनी होगा।
4. **बुध + गुरु**–अष्टमेश गुरु नवम स्थान में बुध के साथ होने से जातक धनी होगा। पर जातक के जीवन में उतार-चढ़ाव आयेगा।
5. **बुध + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र भाग्य स्थान में बुध के साथ होने से जातक महान पराक्रमी होगा।
6. **बुध + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि नीच का भाग्य स्थान में बुध के साथ होने से जातक के भाग्य में उतार-चढ़ाव बहुत ज्यादा आयेगा।
7. **बुध + राहु**–भाग्य स्थान में राहु के साथ बुध धन व भाग्य की हानि करायेगा।
8. **बुध + केतु**–भाग्य स्थान में केतु जातक का भाग्योदय तेजी से करायेगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में

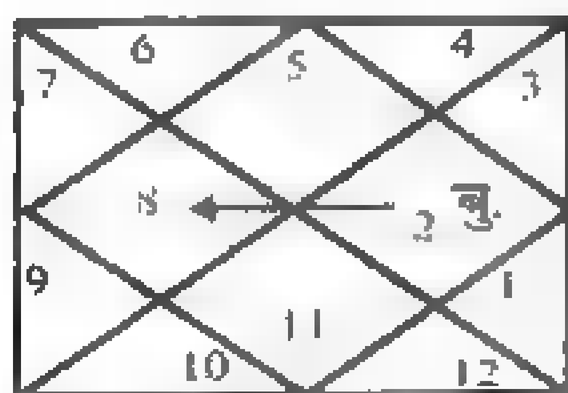

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अत: अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा, जितनी अपेक्षा की जाती है। दशम भाव में बुध वृष (मित्र) राशि में होगा। बुध स्वगृहाभिलाषी होगा एवं कुलदीपक योग की सृष्टि करेगा। जातक के लिए उत्तम नौकरी-व्यवसाय का योग है। जातक घर का मकान दो मंजिला बनायेगा। माता की सेवा करेगा। जातक महत्त्वाकांक्षी होगा।

दृष्टि—दशमस्थ बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी फलत: जातक शिक्षित होगा। उसकी राजनैतिक एवं व्यवसायिक उन्नति होगी।

निशानी—जातक के पास अनेक वाहन होंगे।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी एवं प्रभाव बढ़ेगा। आय के साधन बढ़ेंगे।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। दशम स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति होगी। दोनों केन्द्रस्थ ग्रह चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। फलत: जातक बुद्धिमान, धनवान, उत्तम वाहन व सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक शिक्षित होगा। उसे माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक का पराक्रम तेज रहेगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा दशम स्थान में बुध के साथ होने से 'यामिनीनाथ योग' के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
3. **बुध + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल दशम स्थान में बुध के साथ होने से जातक को बड़ी भूमि का स्वामी बनायेगा।
4. **बुध + गुरु**—अष्टमेश गुरु दशम स्थान में बुध के साथ होने से जातक राजनीति में प्रभावशाली रहेगा।
5. **बुध + शुक्र**—तृतीयेश शुक्र दशम स्थान में बुध के साथ स्वगृही होने से 'मालव्य योग' बनायेगा। जातक निश्चय ही राजा होगा।
6. **बुध + शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि दशम स्थान में बुध के साथ होने से जातक धनी होगा पर जातक का भाग्योदय देरी से होगा।
7. **बुध + राहु**—दशम स्थान में बुध के साथ राहु होने से पिता की सम्पत्ति में विवाद करायेगा।
8. **बुध + केतु**—दशम स्थान में बुध के साथ केतु कीर्ति देगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अत: अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा.

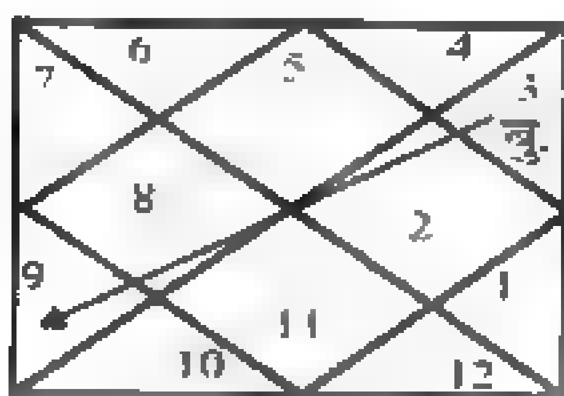

जितनी अपेक्षा की जाती है। एकादश स्थान में बुध मिथुन राशि में स्वगृही होगा। ऐसे लोग आर्थिक रूप से सम्पन्न होते हैं। जातक को उत्तम पत्नी, उत्तम संतति की प्राप्ति होगी पर जातक की किस्मत प्रथम संतति उत्पन्न होने के बाद चमकेगी।

दृष्टि—यहां एकादश भावगत बुध की दृष्टि पंचम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: जातक विद्यावान होगा तथा उसे उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। जातक की संतान भी शिक्षित व सभ्य होगी।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। एकादश स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां स्वगृही होगा। जहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। ऐसा जातक बुद्धिबल से अपना स्वयं का व्यापार उन्नत करेगा। जातक धनवान होगा। यह भी संभव है कि वह बड़े उद्योग का स्वामी होगा। ऐसा जातक शिक्षित होगा तथा उसकी संतान भी शिक्षित होगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा लाभ स्थान में स्वगृही बुध के साथ होने से जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।
3. **बुध + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल एकादश स्थान में होने से जातक को बड़ा उद्योगपति बनायेंगे।
4. **बुध + गुरु**—अष्टमेश गुरु लाभ स्थान में बुध के साथ होने से जातक को उत्तम गृहस्थ सुख मिलेगा। जातक की पुत्र संतति तेजस्वी होगी।
5. **बुध + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र लाभ स्थान में बुध के साथ होने से जातक बड़े उद्योग का स्वामी होगा।
6. **बुध + शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि लाभ स्थान में बुध के साथ होने से जातक का ससुराल धनी होगा।
7. **बुध + राहु**—लाभ स्थान में स्वगृही बुध के साथ राहु जातक को राजा तुल्य पराक्रमी बनायेगा।
8. **बुध + केतु**—लाभ स्थान में स्वगृही बुध के साथ केतु जातक को यशस्वी बनायेगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में

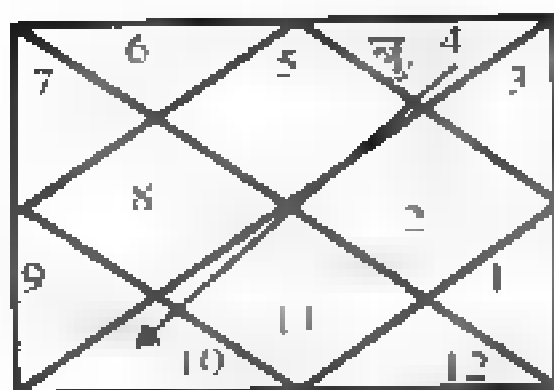

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अत: अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा, जितनी अपेक्षा की जाती है। यहां द्वादश स्थान में बुध कर्क (शत्रु) राशि में होगा। बुध की यह स्थिति 'धनहीन योग' एवं 'लाभभंग योग' बनाती है। ऐसे जातक में आत्मविश्वास की कमी होती है। उसे आर्थिक व सामाजिक उन्नति में बाधा महसूस होगी। जातक यात्रा पर ज्यादा रहेगा।

दृष्टि—द्वादश भावगत बुध की दृष्टि छठे स्थान (मकर राशि) पर होगी। फलत: जातक पर ऋण, रोग व शत्रु हावी रहेंगे।

निशानी—जातक व्यर्थ के कार्यों में रुपया खर्च करेगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को मिश्रित फलों का अनुभव होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंह सूर्य लग्न में लग्नेश होगा। द्वादश स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। जहां बैठकर दोनों ग्रह छठे स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के बारहवें स्थान पर जाने से 'धनहीन योग', 'लाभभंग योग' की सृष्टि होगी। जबकि सूर्य के बारहवें स्थान पर जाने से 'लग्नभंग योग' बनेगा। फलत: यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक को धन तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होते हुए धन संग्रह के प्रति चिंतित रहेगा।
2. **बुध + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा बारहवें स्थान में बुध के साथ होने से जातक दिवालिया होगा। विपरीत राजयोग के कारण जातक वैभवशाली जीवन जीयेगा।
3. **बुध + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल बारहवें बुध के साथ होने से जातक की स्थाई सम्पत्ति में दिक्कतें पैदा करेगा।
4. **बुध + गुरु**—अष्टमेश गुरु व्यय स्थान में बुध के साथ होने से संतान की चिंता रहेगी।
5. **बुध + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र बारहवें बुध के साथ होने से जातक का पराक्रम भंग होगा।

6. **बुध + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि, बारहवें बुध के साथ होने से विलम्ब विवाह योग, विवाह सुख में बाधा का योग बनता है।

7. **बुध + राहु**–बारहवें राहु के बुध के साथ होने से जातक को दिवालिया करायेगा।

8. **बुध + केतु**–बारहवें केतु के बुध के साथ होने से जातक का धन यात्राओं में व्यय होगा।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में

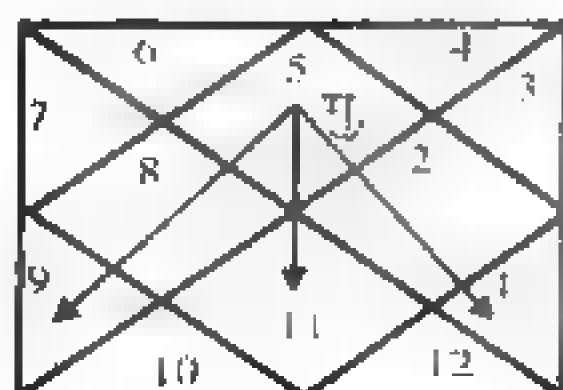

सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। यहां प्रथम स्थान स्थान में गुरु सिंह (मित्र) राशि में होगा। यहां बैठकर गुरु 'कुलदीपक योग' एवं 'केसरी योग' बना रहा है। ऐसा जातक न्यायप्रिय, सिद्धान्त प्रिय व सत्यवक्ता होगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि (Higher Educational Degree) मिलेगी। जातक को भारतीय प्राच्य विद्याओं, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र, वेद-वेदान्त, दर्शन में रुचि बढ़ेगी। जातक ईश्वर में विश्वास रखने वाला आस्तिक व धार्मिक होगा।

दृष्टि—लग्नस्थ गुरु की दृष्टि पंचम भाव (धनु राशि), सप्तम भाव (कुंभ राशि) एवं भाग्य भाव (मेष राशि) होगी। फलतः जातक को विद्या-बुद्धि, उत्तम संतति की प्राप्ति होगी। जातक को सुन्दर पत्नी मिलेगी। जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।

दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा तथा उसे उत्तम शिक्षा मिलेगी एवं गृहस्थ सुख मिलेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—लग्नेश सूर्य के साथ गुरु व्यक्ति को प्रखर ज्ञानवान, पुण्यशील, परोपकारी एवं धर्मात्मा बनाता है।
2. **गुरु + चंद्र**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के प्रथम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा को पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है।

लग्न में बैठकर दोनों शुभ ग्रह पंचम, सप्तम एवं भाग्य भवन को प्रभावित करेंगे। फलतः संतान पक्ष, पत्नी पक्ष एवं भाग्य पक्ष अपेक्षाकृत मजबूत रहेंगे। जो भी आप कमायेंगे खर्च होता चला जायेगा। फिर भी जीवन में धन की कमी से कोई काम रुका नहीं रहेगा।

3. **गुरु + मंगल**—भाग्येश, सुखेश मंगल यदि गुरु के साथ लग्न स्थान में हो तो जातक परमभाग्यशाली होगा। रचनात्मक कार्यों में रुचि रखने वाला आस्तिक बुद्धि का स्वामी होगा।
4. **गुरु + बुध**—धनेश बुध की युति योगकारक गुरु के साथ लग्न स्थान में होने से जातक आध्यात्मिक विद्या का जानकार व दार्शनिक होगा। जातक कम्प्यूटर लाईन का भी जानकार होगा।
5. **गुरु + शुक्र**—पराक्रमेश, दशमेश, शुक्र लग्न में यदि गुरु के साथ हो तो जातक महान पराक्रमी व यशस्वी होगा।
6. **गुरु + शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि यदि लग्न में गुरु के साथ हो तो जातक डिप्लोमेट, कूट राजनीतिज्ञ होगा।
7. **गुरु + राहु**—यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु के साथ प्रथम स्थान में राहु होने से जातक का मन-मस्तिष्क उद्विग्न रहेगा। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक देव-ब्राह्मणों एवं देहसुख से हीन होता है।
8. **गुरु + केतु**—गुरु के साथ केतु जातक को कीर्तिवान् बनायेगा।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में

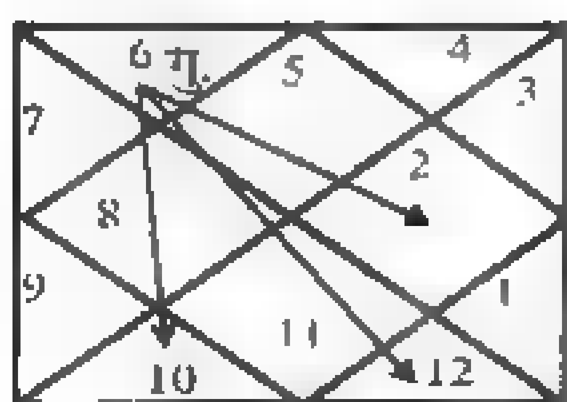

सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। यहां द्वितीय स्थान में गुरु कन्या (शत्रु) राशि में होगा। जातक को धन संग्रह में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। कुटुम्ब सुख में परेशानियां आयेंगी।

दृष्टि—द्वितीय भावगत गुरु की दृष्टि छठे स्थान (मकर राशि), अष्टम भाव (मीन राशि) एवं दशम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक की आयु में वृद्धि होगी। जातक के शत्रुओं का नाश होगा। जातक का राजनैतिक वर्चस्व रहेगा।

निशानी—जातक की वाणी सत्य से प्रभावित होगी।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे। जातक की तरक्की होगी पर धीमी गति से होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–अष्टमेश, पंचमेश गुरु के धन स्थान, सूर्य के साथ होने से जातक बुद्धिबल, विद्याबल से धनार्जन करेगा।
2. **गुरु + चंद्र**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के द्वितीय भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। धन स्थान में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह षष्टम भाव, अष्टम भाव एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी। जातक की आयु पूर्ण होगी। ऐसा जातक रोग व शत्रु का मुकाबला करने में पूर्ण सक्षम होगा।
3. **गुरु + मंगल**–भाग्येश, सुखेश, मंगल धन स्थान में गुरु के साथ होने से जातक का भाग्योदय पुत्र संतति के जन्म के पश्चात होगा।
4. **गुरु + बुध**–बलवान धनेश के साथ पंचमेश होने से पुत्रमूल धनयोग एवं शत्रुकूल धनयोग बनेगा। जातक का भाग्योदय संतान द्वारा होगा। जातक को शत्रुओं से भी रुपया मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–दशमेश, तृतीयेश शुक्र धन स्थान में हो तो जातक का रुपया निम्न कार्यों में खर्च होगा।
6. **गुरु + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि यदि धन स्थान में गुरु के साथ हो तो बीमारी में रुपया खर्च होगा।
7. **गुरु + राहु**–सिंहलग्न के द्वितीय स्थान में पंचमेश गुरु के साथ राहु होने से 'चाण्डाल योग' बना। जिसके कारण जातक भुजबल से हीन होता है तथा जो कुछ उसका नष्ट चोरी हो जाता है या जो धन उधार चला जाता है, वो वापस नहीं मिलता।
8. **गुरु + केतु**–गुरु के साथ केतु हो तो कुटुम्ब में कम बनेगी।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में

सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहा त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। यहां गुरु तृतीय स्थान में तुला (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक धनी, प्रतिष्ठित एवं आकर्षक

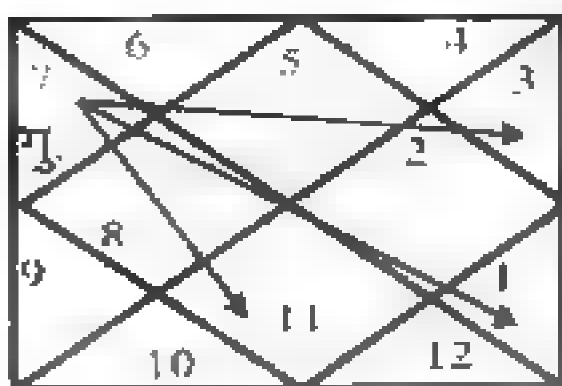

व्यक्तित्व का स्वामी होगा। जातक को सहोदर भ्राता का सुख, पिता का सुख मिलेगा।

दृष्टि–गुरु की दृष्टि सप्तम भाव (कुम्भ राशि), भाग्य भाव (मेष राशि) एवं एकादश भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को गृहस्थ सुख पूर्ण मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा। जातक भाग्यशाली होगा एवं सन्मार्ग (न्यायमार्ग) पर चलेगा।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक व्यापार द्वारा धन अर्जित करेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–अष्टमेश गुरु के साथ लग्नेश सूर्य की युति जातक को धार्मिक नेता एवं पराक्रमी बनायेगी।
2. **गुरु + चंद्र**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के तृतीय भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। तृतीय स्थान में बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह सप्तम भाव, नवम भाव एवं एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को पिता का धन मिलेगा। पत्नी व ससुराल से लाभ होगा। व्यापार से भी लाभ होगा।
3. **गुरु + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल तृतीय स्थान में गुरु के साथ होने से जातक पराक्रमी होगा। जातक के तीन से अधिक भाई होंगे।
4. **गुरु + बुध**–धनेश, लाभेश बुध तृतीय स्थान में गुरु के साथ होने से जातक को पराक्रमी बनायेगा। धनी बनायेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–दशमेश शुक्र तृतीय स्थान में गुरु के साथ होने से जातक स्वगृही होगा। ऐसा जातक महान पराक्रमी एवं धार्मिक होगा।
6. **गुरु + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि तृतीय स्थान में उच्च का होकर गुरु के साथ होने से जातक महान पराक्रमी एवं मित्र-समुदाय का चहेता होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु तृतीय स्थान में राहु के साथ होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक सहोदर भाइयों के सुखों से हीन होकर मित्रों से धोखा खाता है।
8. **गुरु + केतु**–तृतीय स्थान में गुरु के साथ केतु जातक को मित्रों में यश दिलायेगा।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

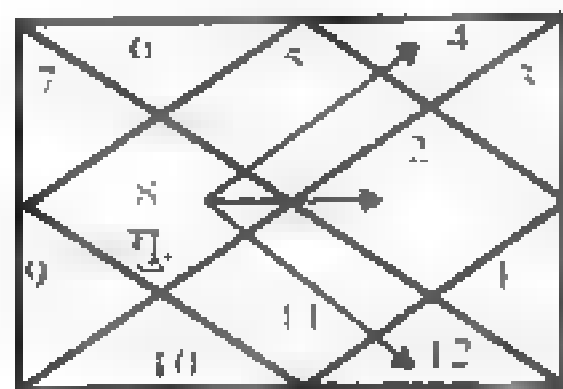

सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। यहां चतुर्थ भावगत गुरु वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा। यहां गुरु स्वगृहाभिलाषी होते हुए 'केसरी योग' एवं कुलदीपक योग बनायेगा। फलत: जातक धर्मनिष्ठ होते हुए महत्वाकांक्षी होगा। जातक की संतति व पत्नी धार्मिक व स्वामीभक्त होंगे।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत गुरु की दृष्टि अष्टम भाव (मीन राशि), दशम भाव (वृष राशि) एवं व्यय भाव (कर्क राशि) पर होगी। ऐसा जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम, राज सरकार (राजनीति) में ऊंचे पद को प्राप्त करने वाला, धार्मिक एवं परोपकार के कार्य में रुपया खर्च करने में विश्वास रखता है।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक आगे बढ़ेगा एवं उत्तम फल प्राप्त करेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–लग्नेश सूर्य चतुर्थ स्थान में गुरु के साथ होने से जातक धन-वैभव से परिपूर्ण जीवन जीयेगा।
2. **गुरु + चंद्र**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के चतुर्थ भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। चतुर्थ स्थान में चंद्रमा नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान, दशम भाव एवं व्यय भाव को देखेंगे। फलत: ऐसे जातक की आयु पूर्ण होगी। जातक को राजनीति में ऊंचा पद मिलेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। खर्चीला स्वभाव जातक की कमजोरी होगी।
3. **गुरु + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल, गुरु के साथ चतुर्थ स्थान में 'रुचक योग' बनायेगा। जातक का घर का बड़ा मकान, खेती, भूमि, धार्मिक सम्पत्ति होगा।
4. **गुरु + बुध**–धनेश, लाभेश बुध गुरु के साथ होने से चतुर्थ भाव में जातक के एकाधिक वाहन योग बनाता है।

5. **गुरु + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र गुरु के साथ चतुर्थ स्थान में होने से जातक को राजनैतिक पद-प्रतिष्ठा दिलायेगा।

6. **गुरु + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि चतुर्थ भाव गुरु के साथ में होने से वाहन दुर्घटना का योग करायेगा पर जातक को कुछ नहीं होगा।

7. **गुरु + राहु**–यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु चतुर्थ स्थान में राहु के साथ होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक मातृसुख से हीन होता है। घर जमीन से रहित होकर जातक मित्रों का द्रोही होता है।

8. **गुरु + केतु**–चतुर्थ भाव में गुरु के साथ केतु माता को बीमार करायेगा।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति पंचम स्थान में

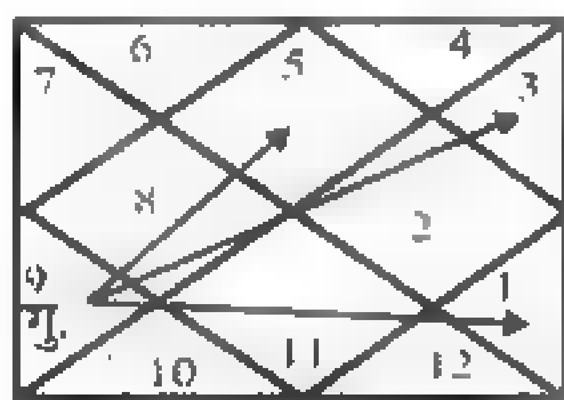

सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। यहां पंचम स्थान में गुरु स्वगृही धनु राशि में होगा। धनु राशि के दस अंशों तक गुरु मूल त्रिकोणी होकर अत्यन्त शुभ फल देगा। ऐसे जातक को विद्या-बुद्धि, धन-सम्पत्ति का खूब लाभ मिलेगा। ऐसा जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ गुरु की दृष्टि भाग्य भाव (मेष राशि), लाभ स्थान (मिथुन राशि) एवं लग्न भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक परम भाग्यशाली होगा। व्यापार से धन कमायेगा तथा उसे परिश्रम का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा।

निशानी–जातक के पांच पुत्र होंगे अथवा पुत्र संतति अधिक होगी।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक का सर्वांगीण विकास होगा। शत्रुओं का नाश होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–लग्नेश सूर्य पंचम में स्वगृही गुरु के साथ होने से जातक को राजगुरु की पदवी दिलायेगा। घर, समाज, राजनीति में लोग जातक का मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे।

2. **गुरु + चंद्र**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के पंचम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। पंचम स्थान

में गुरु स्वगृही होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह नवम स्थान एकादश भाव एवं लग्न भाव को देखेंगे। फलतः ऐसे जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के बाद होगा। व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। जातक को व्यक्तिगत सफलता मिलती रहेगी।

3. **गुरु + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल पंचम स्थान में गुरु के साथ होने से जातक के पांच पुत्र होंगे। पुत्र तेजस्वी होंगे।

4. **गुरु + बुध**—धनेश, लाभेश बुध पंचम भाव में गुरु के साथ होने से जातक धनी होगा। उसे पुत्र व पुत्री दोनों का सुख मिलेगा।

5. **गुरु + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र पंचम भाव में गुरु के साथ होने से अनेक संतति देगा। जातक के पुत्र व कन्याएं प्रचुर मात्रा में होंगे।

6. **गुरु + शनि**—षष्ठेश पंचम भाव में गुरु के साथ होने संतति को लेकर चिंता करायेगा।

7. **गुरु + राहु**—यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु पंचम स्थान में स्वगृही होकर राहु के साथ होने से चाण्डाल योग बना। जातक को प्रथमतः पुत्र न हो। पुत्र होंगे तो भी मूर्ख व संस्कारहीन होंगे। विद्या में बाधा निश्चित है। जातक का खान-पान दूषित होगा।

8. **गुरु + केतु**—पंचम भाव में गुरु के साथ केतु जातक के गर्भपात करायेगा। जातक की संतति शल्य चिकित्सा द्वारा होगी।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति षष्टम स्थान में

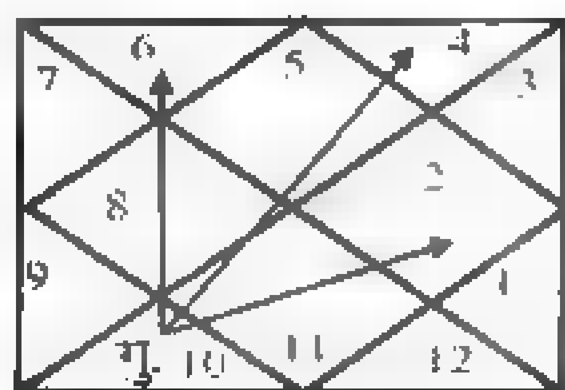

सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। यहां छठे स्थान पर गुरु मकर (नीच) राशि में होगा। मकर राशि के पांच अंशों तक चंद्रमा परम नीच का होगा। गुरु की यह स्थिति '**संतानहीन योग**' की सृष्टि करती है परन्तु अष्टमेश गुरु के छठे स्थान में जाने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बनेगा। फलतः जातक बहुत धनी, सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक को वाहन सुख मिलेगा। भूमि-भवन का लाभ होगा।

दृष्टि—षष्टमस्थ गुरु की दृष्टि दशम भाव (वृष राशि), व्यय भाव (कर्क राशि) एवं पराक्रम स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक को गुप्त रोग संभव हैं। खर्च व ऋण की चिन्ता रहेगी। मित्रों से लाभ निश्चित है।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक विपरीत परिस्थितियों में होते हुए भी आगे बढ़ेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–सूर्य लग्नेश होकर छठे स्थान में गुरु के साथ होने से जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक की मनोकामना पूर्ण नहीं होगी।
2. **गुरु + चंद्र**–आपका जन्म सिंहलग्न का हैं सिंहलग्न के छठे भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। छठे स्थान में गुरु नीच का होगा एवं 'संतानहीन योग' की सृष्टि करेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव, द्वादश भाव एवं धन भाव को देखेंगे। फलत: राजनीति में धोखा मिलेगा, नौकरी व व्यापार से धोखा मिलेगा। धन का अपव्यय होगा। पैसा पास में टिकेगा नहीं।
3. **गुरु + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल यहां 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। ऐसा जातक राजा या राजगुरु तथा महान् पराक्रमी होगा।
4. **गुरु + बुध**–धनेश लाभेश बुध गुरु के साथ होने से धनहीन योग बना। यद्यपि विपरीत राजयोग के कारण जातक वैभवशाली जीवन जीयेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र गुरु के साथ छठे स्थान में जातक का पराक्रम भंग करायेगा।
6. **गुरु + शनि**–षष्टेश शनि गुरु के साथ 'नीचभंग राजयोग' बना रहा है। ऐसा जातक राजनेताओं का गुरु या महामण्डलेश्वर होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु छठे स्थान में नीच राशि का होकर राहु के साथ होने से 'चाण्डाल योग' बनायेगा। ऐसे जातक को बाल्यावस्था में जलभय, सर्पदंश का भय रहता है। आयु का 6, 8, 18 व 20 वर्ष घातक है।
8. **गुरु + केतु**–गुरु के साथ केतु गुप्त शत्रुओं का प्रकोप बढ़ायेगा।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति सप्तम स्थान में

सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण स्थान का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। सप्तम स्थान में गुरु कुम्भ (शत्रु) राशि में होगा। गुरु के कारण यहां केसरी योग एवं

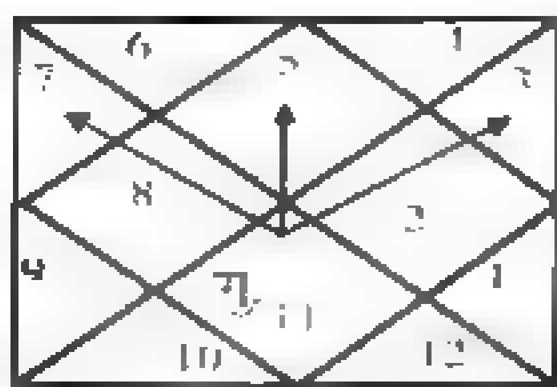

कुलदीपक योग बना। जातक को धन, विद्या, यश, पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी होगा। जातक शिक्षित व सभ्य होगा एवं पुरातन मान्यताओं में विश्वास रखेगा।

दृष्टि–सप्तम भावगत गुरु की दृष्टि लाभ स्थान (मिथुन राशि), लग्न स्थान (सिंह राशि) एवं पराक्रम स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय में भी लाभ होगा। जातक का परिश्रम (जनसम्पर्क) तेज होगा।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–लग्नेश सूर्य सप्तम स्थान में होने से जातक को धर्मप्रिय एवं वफादार जीवनसाथी देगा।
2. **गुरु + चंद्र**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के सप्तम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। सप्तम भाव में बैठकर दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: विवाह के तत्काल बाद जातक की उन्नति होगी। उसका पराक्रम, जनसम्पर्क बढ़ेगा एवं उसे लाभ होगा।
3. **गुरु + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल सप्तम भाव में भाग्यशाली पत्नी देगा। जातक को ससुराल से मदद मिलती रहेगी।
4. **गुरु + बुध**–धनेश, लाभेश मंगल सप्तम भाव में गुरु के साथ होने से जातक की पत्नी भाग्यशाली होगी एवं उसका बैंक बैलेंस अच्छा होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र सप्तम भाव में सुंदर व सुशील पत्नी देगा। पत्नी का शरीर मांसल व पुष्ट होगा।
6. **गुरु + शनि**–षष्टेश शनि सप्तम भाव में गुरु के साथ 'शश योग' बनायेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **गुरु + राहु**–सिंहलग्न में सातवें स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से क्रूर 'चाण्डाल योग' बनेगा। जातक की मृत्यु सर्पदंश से अथवा धीमी गति के जहर के कारण शान्ति पूर्वक होगा। जातक की पत्नी विधवा होगी।
8. **गुरु + केतु**–सप्तम भाव में गुरु के साथ केतु पत्नी से मनमुटाव देगा।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में

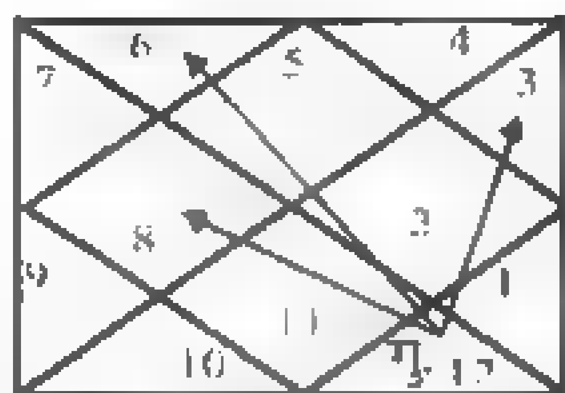

सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। अष्टम स्थान में गुरु स्वगृही मीन राशि में होगा। गुरु की यह स्थिति संतानहीन योग बना रहा है। अष्टमेश अष्टम भाव में स्वगृही होने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बना। ऐसा जातक विद्या-बुद्धि, संतान से युक्त, दीर्घायु एवं यशस्वी होता है। जातक आलोचक, चिंतक, समालोचक एवं व्यंगकार होता है।

दृष्टि—अष्टमस्थ गुरु की दृष्टि व्यय भाव (कर्क राशि) धन भाव (कन्या राशि), एवं चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक धनवान होगा। उसके पास सभी सुख-सुविधाएं होंगी।

दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा में

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—लग्नेश सूर्य अष्टम भाव में गुरु के साथ होने से जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा परन्तु विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।
2. **गुरु + चंद्र**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के अष्टम भाव में गुरु-चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। अष्टम स्थान में गुरु स्वगृही होगा। दोनों ग्रह यहां बैठने से 'संतानहीन योग' बनेगा। यदि ध्यान नहीं दिया गया तो विद्या प्राप्ति में बाधा आयेगी। खड्डे में गिरे हुए ये दोनों ग्रह खर्च स्थान, धन स्थान एवं चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः धन का अपव्यय होगा। बढ़ते हुए खर्च के प्रति चिंता रहेगी। माता या वाहन को लेकर भी रुपया खर्च होगा।
3. **गुरु + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल अष्टम स्थान में गुरु के साथ होने से जातक के भाग्योदय में दिक्कतें पैदा करेगा।
4. **गुरु + बुध**—धनेश, लाभेश बुध अष्टम स्थान में गुरु के साथ 'नीचभंग राजयोग' बनाता है। ऐसा जातक राजा के समान महान् पराक्रमी होगा।
5. **गुरु + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र अष्टम स्थान में गुरु के साथ होने से शारीरिक सौष्टव प्रदान करेगा।

6. **गुरु + शनि**—अष्टमेश गुरु के साथ षष्ठेश शनि अंग-भंग कराता है तथा दुर्घटना योग बनाता है।
7. **गुरु + राहु**—सिंहलग्न के आठवें स्थान में अष्टमेश गुरु होने से सरल नाम विपरीत राजयोग होगा पर यहां राहु होने से चाण्डाल योग बना। जातक धन-वैभव से परिपूर्ण जीवन जीयेगा। परन्तु अचानक दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **गुरु + केतु**—अष्टम स्थान में गुरु के साथ केतु शल्य चिकित्सा करायेगा।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति नवम स्थान में

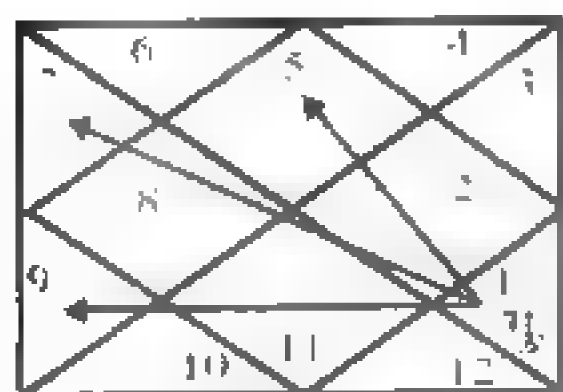

सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभफल ही देगा। नवम स्थान में गुरु मेष (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक पूर्ण धर्मात्मा, ज्ञानवान, उदार हृदय एवं सद्विचारों से ओतप्रोत व्यक्ति होगा। जातक को स्त्री का सुख, पुत्र संतति का सुख, नौकरी-व्यवसाय का सुख पूर्ण होगा।

दृष्टि—यहां नवमस्थ गुरु की दृष्टि लग्न स्थान (सिंह राशि), तृतीय स्थान (तुला राशि) एवं पंचम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: ऐसे जातक को पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा। जातक पराक्रमी, विद्यावान् एवं यशस्वी होगा।

दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय सर्वांगीण विकास व उन्नति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—लग्नेश सूर्य गुरु के साथ उच्च का होने से जातक महान् सौभाग्यशाली होगा। रविकृत राजयोग के कारण जातक राजनीति में उच्च पद को प्राप्त करेगा।
2. **गुरु + चंद्र**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के नवम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, **अष्टमेश**, गुरु के साथ युति है। नवम स्थान में बैठकर दोनों शुभ ग्रह, लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान जो कि गुरु का स्वयं का घर है पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलत: प्रथम संतति के बाद

आपको विशेष भाग्योदय होगा। आपके मित्र एवं शुभचिंतकों की संख्या में अद्वितीय वृद्धि होगी। राजनीति में आपकी जीत होगी एवं संतान आज्ञाकारी होगी।

3. **गुरु + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल स्वगृही भाग्यस्थान में गुरु के साथ होने से जातक परम भाग्यशाली तथा बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।

4. **गुरु + बुध**—धनेश, लाभेश, बुध, गुरु के साथ भाग्य स्थान में होने से जातक को महाधनी बनायेगा।

5. **गुरु + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र भाग्य स्थान में गुरु के साथ जातक को उच्च राजनेता बनायेगा।

6. **गुरु + शनि**—षष्टेश शनि नीच होकर, भाग्य स्थान में गुरु के साथ होने से भाग्य में उतार-चढ़ाव का झटका देता रहेगा।

7. **गुरु + राहु**—सिंहलग्न में नवम स्थान में अष्टमेश बृहस्पति के साथ राहु होने से चाण्डाल योग बनता है। ऐसा जातक परनिन्दक होता है। जातक धर्म के विपरीत आचरण करता है व नास्तिक होता है। जातक परधन हर्ता एवं दुःशीला स्त्रियों के साथ रहता है।

8. **गुरु + केतु**—गुरु के साथ केतु भाग्य स्थान में होने से जातक को भाग्य में बढ़ावा देगा।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में

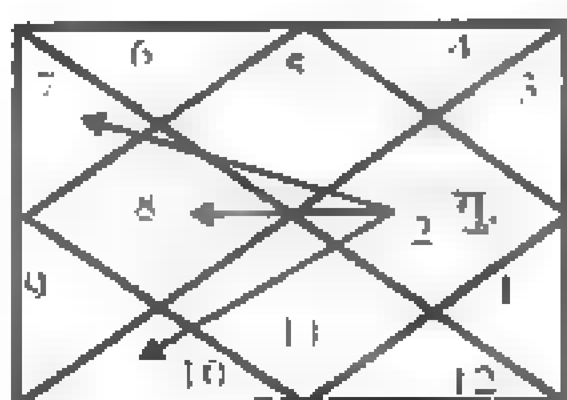

सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहा त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। यहां दशम भावगत गुरु वृष (शत्रु) राशि में होगा। गुरु की इस स्थिति से 'कुलदीपक योग' एवं 'केसरी योग' बनेगा। जातक राजनीति में उच्च पद को प्राप्त करेगा तथा अध्ययन-अध्यापन में ज्यादा कीर्ति प्राप्त करेगा। यदि धनेश बुध की स्थिति सुदृढ़ हो तो जातक उद्योगपति होगा।

दृष्टि—दशम भावगत गुरु की दृष्टि धन स्थान (कन्या राशि), चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) एवं छठे भाव (मकर राशि) पर रहेगी। फलतः ऐसा जातक धनवान होगा। उसे सभी भौतिक सुखों को प्राप्ति होगी। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

दशा—गुरु की दशा–अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी। जातक की तरक्की होगी एवं उसे राजनीति में सफलता मिलेगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—लग्नेश सूर्य दशम स्थान में गुरु के साथ जातक को सरकारी नौकरी एवं सरकारी काम-काज के लिए शुभ है।
2. **गुरु + चंद्र**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न में दशम भाव के गुरु-चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। दशम भाव में चंद्रमा उच्च का होगा एवं 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। दशम भाव में बैठे दोनों शुभ ग्रह धन स्थान, चतुर्थ भाव एवं षष्ट भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलत: 24 वर्ष की आयु के बाद धनप्राप्ति होनी शुरू होगी। जातक अपने शत्रुओं को नष्ट करने में समर्थ होगा एवं 38 वर्ष की आयु के बाद दो मंजिला मकान बनायेगा, अच्छा वाहन खरीदेगा।
3. **गुरु + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल दशम स्थान में गुरु के साथ होने से जातक को उच्च पद व प्रतिष्ठा दिलायेगा।
4. **गुरु + बुध**—धनेश, लाभेश बुध दशम भाव में गुरु के साथ होने से व्यापार में भारी धन दिलायेगा।
5. **गुरु + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र दशम भाव में गुरु के साथ 'मालव्य योग' बनायेगा। ऐसा जातक राजा से कम नहीं होगा।
6. **गुरु + शनि**—षष्टेश शनि दशम भाव में गुरु के साथ होने से ससुराल से, पत्नी व पुत्र से धन दिलायेगा।
7. **गुरु + राहु**—सिंहलग्न के दशम स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से चाण्डाल योग बनता है। ऐसा जातक पिता के सुख से हीन, चुगलखोर एवं कर्महीन होता है।
8. **गुरु + केतु**—दशम स्थान में गुरु के साथ केतु जातक को राजदरबार में प्रतिष्ठा दिलायेगा।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में

सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। यहां एकादश

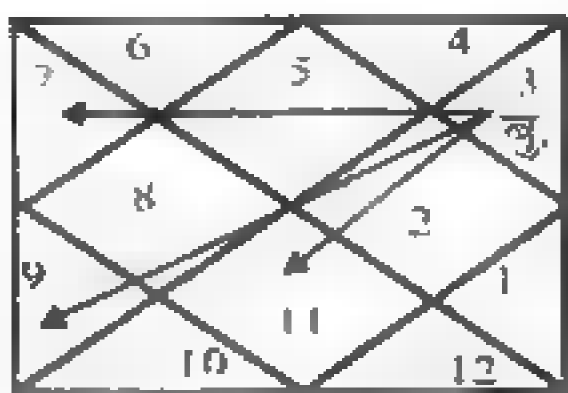

स्थान में गुरु मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक उच्च विद्या प्राप्ति, अति बुद्धिशाली व्यक्ति होगा। व्यापार के लाभांश में रुकावट आयेगी। जातक की पीठ पीछे निन्दा होगी।

दृष्टि—एकादश भाव में स्थित गुरु की दृष्टि पराक्रम भाव (तुला राशि), पंचम भाव (धनु राशि) एवं सप्तम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलतः जातक अपने सहोदर एवं संतान से सुखी होता है। जातक की पत्नी आज्ञाकारी होता है। जातक का गृहस्थ जीवन सुखमय होता है।

निशानी—जातक के बड़ा भाई नहीं होगा।

दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा में धन लाभ होगा। व्यापार बढ़ेगा। नौकरी में उन्नति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—लग्नेश सूर्य लाभ स्थान में गुरु के साथ होने से जातक को व्यापार में घाटा होने का संकेत देता है।
2. **गुरु + चंद्र**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के एकादश भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। एकादश भाव में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम स्थान एवं सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः आपका पराक्रम बढ़ा-चढ़ा रहेगा। आपकी विद्या पूर्ण होगी। आपको शैक्षणिक डिग्री मिलेगी पर नम्बरों में कुछ न्यूनता अनुभव करेंगे। ससुराल अच्छा मिलेगा। पत्नी सुन्दर मिलेगी। प्रथम संतति के बाद जातक के भाग्योदय की गति में तेजी आयेगी।
3. **गुरु + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल के लाभ स्थान में गुरु के साथ होने से जातक उद्योगपति होगा।
4. **गुरु + बुध**—धनेश, लाभेश बुध लाभ स्थान स्वगृही होकर, गुरु के साथ बैठने से जातक पराक्रमी होगा। उसे स्त्री-संतान का पूर्ण सुख मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**—तृतीयेश, सुखेश शुक्र लाभ स्थान में गुरु के साथ होने से जातक का राजनीति में उच्च लोगों से सम्पर्क होगा।
6. **गुरु + शनि**—षष्टेश शनि एकादश स्थान में होने से लाभ में बाधा पहुंचेगी। जातक को बड़े भाई का सुख नहीं होगा।

7. **गुरु + राहु**–सिंहलग्न के एकादश स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से 'चाण्डाल योग' बनता है। ऐसा जातक बचपन से दुःखी, धनहीन एवं कपट आचरण करने में माहिर होता है। जातक जैसा दिखता है, वैसा होता नहीं।

8. **गुरु + केतु**–गुरु के साथ केतु एकादश स्थान में होने पर जातक को व्यापार में नुकसान पहुंच सकता है।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में

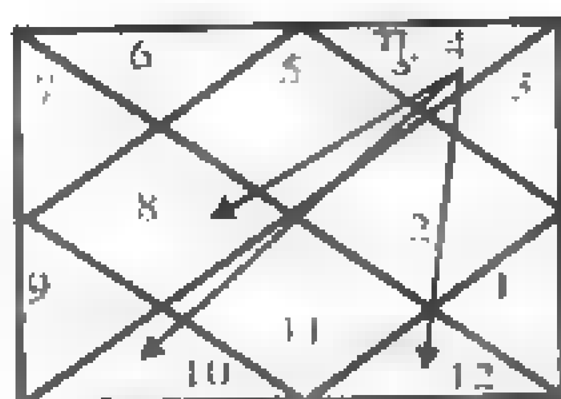

सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। यहां द्वादश स्थान में कर्क राशि में उच्च का होगा। कर्क राशि में पांच अंशों तक गुरु परमोच्च का होगा। गुरु की यह स्थिति 'संतानहीन योग' बनाती है। अष्टमेश के द्वादश स्थान में उच्च का होने से सरल नाम विपरीत राजयोग बना। जातक धनी होगा। ऋण, रोग व शत्रु समूह का मान-मर्दन करने में पूर्णतः समर्थ होगा। जातक को निजी कार-गाड़ी, बंगला इत्यादि होगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत गुरु की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि), छठे भाव (मकर राशि) तथा अष्टम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त, रोग व शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला, लम्बी आयु का भोगने वाला जाताक होगा।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक अचानक उन्नति को प्राप्त करेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–लग्नेश का व्ययभाव में जाना नेत्र पीड़ा देगा। गुरु यहां दीर्घायु को कम करेगा।

2. **गुरु + चंद्र**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के द्वादश भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। द्वादश स्थान में चंद्रमा स्वगृही होगा एवं गुरु उच्च का होकर 'किम्बहुना योग' बनायेगा। साथ ही गुरु बारहवें होने से 'संतानहीन योग' की सृष्टि भी होगी। शुभ, अशुभ मिश्रित फलों से युक्त होकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः आपको जीवन में बहुत ही उत्तम

श्रेणी का मकान सुख एवं वाहन सुख मिलेगा। आपकी आयु दीर्घ होगी। रोग व शत्रु दोनों का नाश करने में आप सक्षम होंगे।

3. **गुरु + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल व्यय भाव में गुरु के साथ होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा से कम नहीं होगा।

4. **गुरु + बुध**–धनेश, लाभेश बुध व्यय भाव में गुरु के साथ होने से व्यापार में हानि का संकेत देता है।

5. **गुरु + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र व्यय भाव में, गुरु के साथ होने से पराक्रम भंग करेगा।

6. **गुरु + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि व्यय भाव में गुरु के साथ गृहस्थ सुख में न्यूनता एवं मानभंग का संकेत देता है।

7. **गुरु + राहु**–सिंहलग्न के द्वादश स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक गलत कार्य में रुपया खर्च करता है। जातक अल्पायु होता है तथा पापकर्मों में निमग्न रहता है।

8. **गुरु + केतु**–गुरु के साथ केतु व्यय भाव में होने से यात्रा से धनहानि होगी। आपरेशन से नुकसान होगा।

❑❑❑

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में

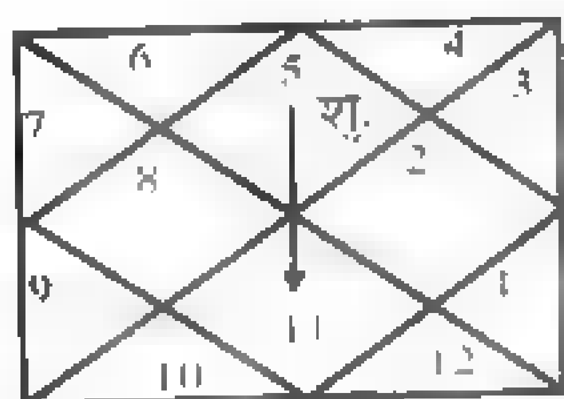

सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। लग्नस्थ शुक्र यहा सिंह (शत्रु) राशि में होगा। शुक्र के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक दिखने में सुंदर, आकर्षक होगा। जातक अपने कार्य से परिवार-कुटुम्ब का नाम रोशन करने वाला होगा। ऐसा जातक नित नूतन वेश पहनने वाला, आभूषणों का शौकीन होगा। यहां 'पद्मसिंहासन योग' भी बन रहा है।

दृष्टि–शुक्र की दृष्टि सप्तम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलत: जातक का जीवन साथी सुंदर होगा।

निशानी–ऐसे जातक को जन्मगत नेत्र विकार या नेत्र दोष संभव है। शुक्र यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो व्यक्ति जन्म से अंधा होता है अथवा शुक्र की दशा में अंधा हो जाता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में शारीरिक व स्वास्थ्य संबंधी प्रतिकूलता होगी। व्यवसाय या नौकरी में दिक्कतें पैदा होंगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–लग्नेश सूर्य शुक्र के साथ होने से जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा पर उसका चरित्र दोहरा होगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–ऐसा जातक विदेश जाने में रुचि रखेगा तथा जन्म स्थान से दूरस्थ प्रदेशों में जाकर कमायेगा।

3. **शुक्र + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल लग्न में शुक्र के साथ होने से जातक को सौभाग्यशाली एवं बड़ी जमीन का स्वामी बनायेगा।

4. **शुक्र + बुध**–धनेश, लाभेश बुध लग्न में शुक्र के साथ होने से जातक धनी होगा।

5. **शुक्र + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु लग्न स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

6. **शुक्र + शनि**–षष्टेश व सप्तमेश शनि लग्न में होने से जातक का एक समय में दो स्त्रियों से संसर्ग होगा।

7. **शुक्र + राहु**–ऐसा जातक विदेश में घर बसायेगा। जातक अपने जन्म स्थान से दूरस्थ प्रदेशों में जाकर धन कमायेगा।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में

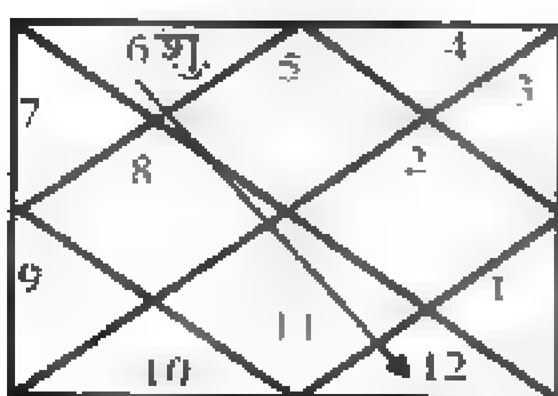

सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहां द्वितीय स्थान में शुक्र कन्या (नीच) राशि में होगा। कन्या राशि के 27 अंशों में शुक्र परम नीच का होगा। ऐसा जातक कामातुर, पर स्त्रीरत, सौंदर्य प्रेमी, कला-संगीत का प्रेमी होता है। ऐसा जातक क्लबों-गोष्ठियों व पार्टियों का शौकीन होता है।

दृष्टि–द्वितीय भावगत शुक्र की दृष्टि अष्टम स्थान (मीन राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोग होंगे।

निशानी–ऐसे जातक के गुप्त शत्रु जरूर होंगे।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक धन कमायेगा। उसकी नौकरी लगेगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–लग्नेश सूर्य द्वितीय स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक धनी एवं पराक्रमी होगा।

2. **शुक्र + चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होकर द्वितीय स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक व्यभिचार में रुपया खर्च करेगा।

3. **शुक्र + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल द्वितीय स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक भाग्य से खूब धन कमायेगा।

4. **शुक्र + बुध**—धनेश, लाभेश बुध धन स्थान में शुक्र के साथ होने से 'नीचभंग राजयोग' करायेगा। जातक राजा के समान धनी एवं वैभवशाली होगा।

5. **शुक्र + गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु धन स्थान में शुक्र के साथ हो तो धन हानि करायेगा।

6. **शुक्र + शनि**—षष्टेश व सप्तमेश शनि धन स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक का जीवनसाथी खुद कमाने वाला होगा।

7. **शुक्र + राहु**—राहु यदि शुक्र के साथ हो तो जातक को धन की कमी रहेगी। धन हानि होगी।

8. **शुक्र + केतु**—केतु यदि शुक्र के साथ हो तो जातक निम्न कार्यों में धन खर्च करेगा।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में

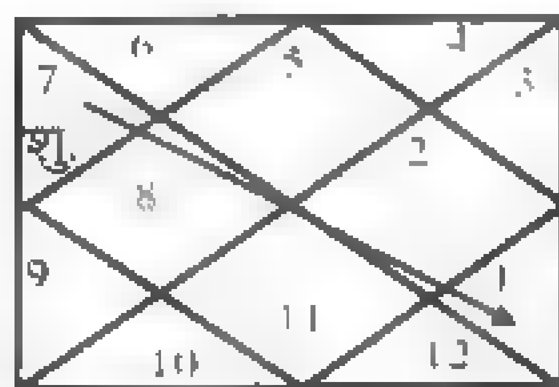

सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहां तृतीय स्थान में शुक्र तुला राशि में स्वगृही होगा। तुला राशि के 15 अंशों तक शुक्र मूलत्रिकोणी होकर अत्यंत शुभ फल देगा। ऐसे जातक को भाई-बहन का सुख, स्त्री-संतान का सुख, नौकरी व्यापार का सुख मिलेगा। जातक का जनसम्पर्क (मित्र-सम्पर्क) तेज रहेगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ शुक्र की दृष्टि भाग्य भवन (मेष राशि) पर होगी। फलतः जातक भाग्यशाली होगा। मित्रों की मदद से जातक को भाग्योदय में मदद मिलेगी।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा, नौकरी लगेगी एवं पराक्रम बढ़ेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + सूर्य**—लग्नेश सूर्य यहां होने पर 'नीचभंग योग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।

2. **शुक्र + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा तृतीय स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक को परिवार तथा बहनों का सुख भी प्राप्त होगा।

3. **शुक्र + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल तृतीय स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक को भाइयों का सुख मिलेगा।

4. **शुक्र + बुध**—धनेश, लाभेश बुध यदि शुक्र के साथ तृतीय स्थान में हो तो जातक के मित्र धनी होंगे।

5. **शुक्र + गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु तृतीय स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त होगा। जातक को जनसम्पर्क से लाभ होगा।

6. **शुक्र + शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि तृतीय स्थान में शुक्र के साथ हो तो किम्बहुना योग बनेगा। जातक राजा या राजा से कम नहीं होगा।

7. **शुक्र + राहु**—तृतीय स्थान में शुक्र के साथ राहु होने से परिवार में विग्रह होगा।

8. **शुक्र + केतु**—तृतीय स्थान में शुक्र के साथ केतु होने से जातक पराक्रमी होगा।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में

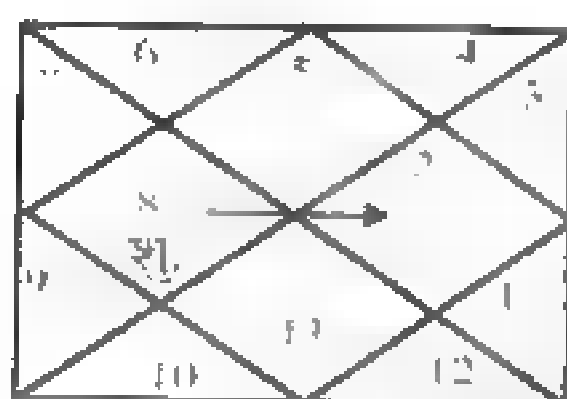

सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहां चतुर्थ स्थान में शुक्र वृश्चिक (सम) राशि में होगा। शुक्र के कारण 'कुलदीपक योग' एवं 'पद्मसिंहासन योग' बनेगा। ऐसा जातक लेखक, कलाकार, संगीतकार, आलोचक व अभिनय में रुचि रखता है। ऐसा जातक परिश्रम के बल पर उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। ऐसा जातक अपने परिवार व कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत शुक्र की दृष्टि दशम भाव (वृष राशि) अपने घर पर होगी। फलतः जातक के पास उत्तम वाहन एवं उत्तम भवन होगा।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + सूर्य**—लग्नेश सूर्य चौथे स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे।

2. **शुक्र + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा नीच का चौथे स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक को माता का वियोग रखेगा।

3. **शुक्र - मंगल**—सुखेश, [illegible] मंगल चौथे स्थान में होने से [illegible] बनेगा।

4. **शुक्र - बुध**—धनेश, लाभेश बुध चौथे स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक को उत्तम भवन एवं उत्तम वाहन का सुख मिलेगा।

5. **शुक्र - गुरु**—[illegible], [illegible] शुक्र के साथ अष्टमेश गुरु होने से वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

6. **शुक्र - शनि**—षष्ठेश, सप्तमेश शनि चतुर्थ स्थान में शुक्र के साथ हो तो वाहन दुर्घटना [illegible] कराता है।

7. **शुक्र - राहु**—चतुर्थ स्थान में शुक्र के साथ यदि राहु हो तो जातक की मां बीमार रहेगी।

8. **शुक्र - केतु**—चतुर्थ स्थान में शुक्र के साथ केतु माता को बीमार रखेगा।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में

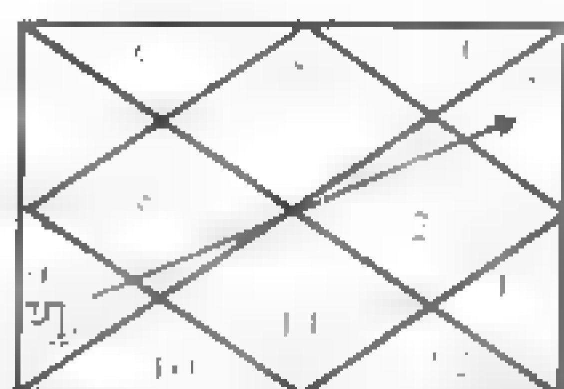

सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं दशमेश है। दशम स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल नहीं देगा। यहां पंचम स्थान में शुक्र धनु (मित्र) राशि में होगा। जातक को राज सरकार में सम्मान मिलेगा। जातक शिक्षित होगा। जातक समाज व परिवार के प्रति एवं जिम्मेदारी का निर्वाह करेगा। जातक स्त्री संतान से सुखी होगा। जातक भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति की ओर आगे बढ़ेगा।

दृष्टि—पंचम भावगत शुक्र की दृष्टि एकादश स्थान (मिथुन राशि) पर होगी जिसके कारण जातक को व्यापार में लाभ होगा। जातक को [illegible] भी अच्छी मिलेगी।

निशानी—[illegible] सुख मिलेगा।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र - सूर्य**—[illegible] सूर्य पंचम स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक को [illegible]। जातक का [illegible] होगा।

2. **शुक्र - चन्द्र**—द्वादशेश चन्द्र पंचम स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक [illegible]

3. **शुक्र - मंगल**—[illegible]

4. **शुक्र + बुध**–धनेश, लाभेश बुध यदि पंचम स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक की संतान धनी व भाग्यशाली होगी।

5. **शुक्र + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु यदि शुक्र के साथ पंचम स्थान में हो तो पांच पुत्र व दो कन्या होती हैं।

6. **शुक्र + शनि**–षष्टेश व सप्तमेश शनि पंचम स्थान में हो तो जातक की संतान की अकाल मृत्यु संभव है।

7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से संतान बाधा का योग बनता है।

8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से संतान शल्य क्रिया से होगी।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति षष्टम स्थान में

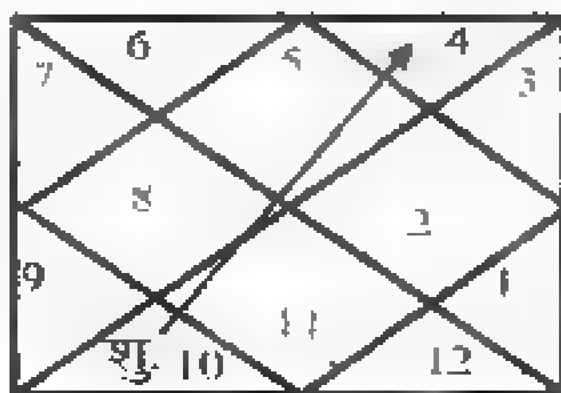

सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहां छठे स्थान में शुक्र मकर (मित्र) राशि में होगा। शुक्र की यह स्थिति 'पराक्रमभंग योग' तथा 'राजभंग योग' की सृष्टि करती है। ऐसा जातक रोग, शत्रु और निर्धनता से परेशान रहता है। जातक के मित्र प्रायः दगा देते हैं। जातक नौकरी-व्यापार व रोजगार को लेकर परेशानी उठाता है। जातक का वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होगा।

दृष्टि–छठे भावगत शुक्र की दृष्टि व्यय भाव (कर्क राशि) पर होगी। ऐसे जातक की शिक्षा अधूरी रहेगी।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–लग्नेश सूर्य के छठे स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक की मानहानि होगी।

2. **शुक्र + चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा छठे जाने से विपरीत राजयोग बना। जातक धनी होगा पर उसका मान भंग होगा।

3. **शुक्र + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल छठे स्थान में शुक्र के साथ उच्च का होकर विपरीत राजयोग बनायेगा। जातक धनी होगा पर वाहन दुर्घटना संभव है।

4. **शुक्र + बुध**—धनेश, लाभेश, बुध छठे स्थान में शुक्र के साथ हो तो धनहीन योग बनेगा। जातक आर्थिक विषमता में रहेगा।

5. **शुक्र + गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु छठे स्थान शुक्र के साथ होने से विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनी एवं वैभवशाली व्यक्ति होगा।

6. **शुक्र + शनि**—षष्ठेश, सप्तमेश शनि छठे स्थान में स्वगृही होकर शुक्र के साथ होने से विपरीत राजयोग बनेगा। जातक के दो विवाह हो सकते हैं।

7. **शुक्र + राहु**—यहां शुक्र के साथ राहु गुप्त रोग देगा।

8. **शुक्र + केतु**—यहां शुक्र के साथ केतु शल्य चिकित्सा कराता है।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में

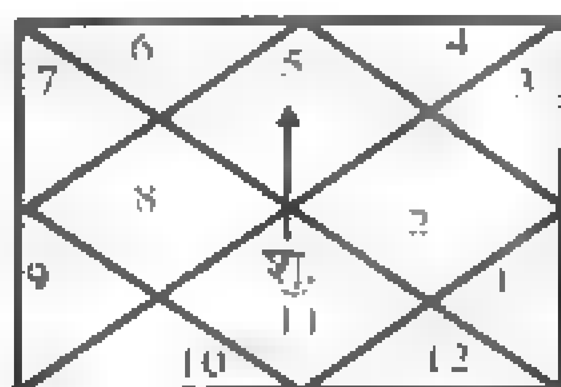

सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहां सप्तम भाव में शुक्र कुम्भ (मित्र) राशि में होगा। शुक्र के कारण 'कुलदीपक योग' एवं 'पद्मसिंहासन योग' बना। ऐसा जातक प्राय: प्रेम विवाह करता है। जातक का जीवनसाथी सुंदर, पुष्ट शरीर वाला, आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। जातक विद्यावान, बुद्धिवान होता है। जातक को पत्नी-संतान, वाहन, पद, प्रतिष्ठा का पूरा सुख मिलता है।

दृष्टि—सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्न स्थान (सिंह राशि) पर होगी। ऐसे जातक को अपने द्वारा किये गये परिश्रम, पुरुषार्थ का पूरा-पूरा लाभ मिलता है।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक की नौकरी लगेगी व पराक्रम बढ़ेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + सूर्य**—लग्नेश सूर्य सातवें स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक को सुंदर पत्नी देगा। जातक का ससुराल पक्ष धनी होगा।

2. **शुक्र + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा सप्तम स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक की पत्नी अति सुंदर होगी।

3. **शुक्र + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल सप्तम भाव में शुक्र के साथ होने से जातक की पत्नी भाग्यशाली होगी।

4. **शुक्र + बुध**—धनेश, लाभेश बुध सप्तम भाव में होने से जातक की पत्नी धनी होगी।

5. **शुक्र + गुरु**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र के साथ पंचमेश गुरु होने से गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा।

6. **शुक्र + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि शुक्र के साथ सप्तम भाव में होने पर 'शश योग' बनेगा।

7. **शुक्र + राहु**–सप्तम स्थान में राहु के साथ शुक्र पत्नी से वैमनस्य करायेगा।

8. **शुक्र + केतु**–सप्तम स्थान में केतु के साथ शुक्र सेक्स संबंधी बीमारी करा सकता है।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में

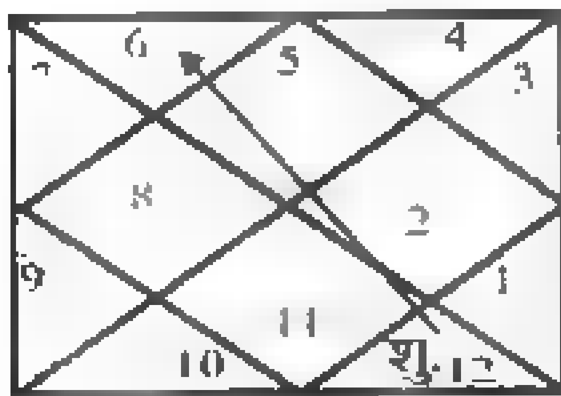

सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहां अष्टम भावगत शुक्र मीन उच्च राशि में होगा। मीन राशि के 27 अंशों तक शुक्र परमोच्च का होगा। शुक्र की यह स्थिति 'पराक्रमभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि कर रही है। जातक पारिजात के अनुसार दशम भाव का स्वामी अष्टम स्थान में उच्च का हो तो राजयोग बनता है। फलत: जातक धनवान, स्त्री-संतान, विद्या-वृद्धि सुख से युक्त होकर समाज का अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्ति होगा।

दृष्टि–जातक को सैक्सुअल बीमारी रहेगी। वैवाहिक जीवन में कष्ट की संभावना है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे पर जातक भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–लग्नेश सूर्य अष्टम स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

2. **शुक्र + चंद्र**–व्ययेश अष्टम स्थान में शुक्र के साथ होने से विपरीत राजयोग बनता है। जातक धनी होगा।

3. **शुक्र + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल अष्टम स्थान में शुक्र के साथ द्विविवाह योग करता है।

4. **शुक्र + बुध**–धनेश, लाभेश बुध अष्टम स्थान में शुक्र के साथ होने से 'नीचभंग राजयोग' कराता है। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।

5. **शुक्र + गुरु**–पंचमेश गुरु शुक्र के साथ अष्टम में होने से 'किम्बहुना योग' बना, अत: जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।

6. **शुक्र + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि अष्टम में शुक्र के साथ होने से 'द्विभार्या योग' बनायेगा।

7. **शुक्र + राहु**–अष्टम स्थान में शुक्र के साथ राहु वाहन से दुर्घटना कराता है।

8. **शुक्र + केतु**–अष्टम स्थान में शुक्र के साथ केतु गुप्त बीमारी कराता है।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में

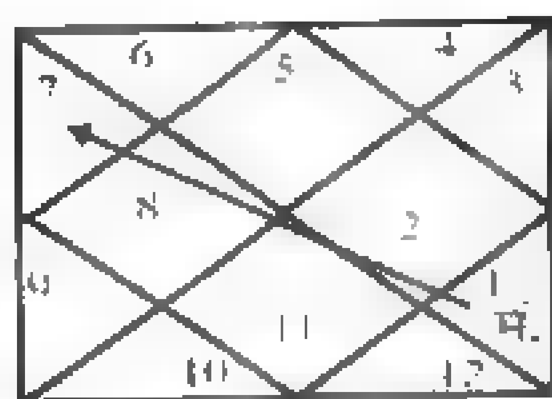

सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहा नवम स्थान में शुक्र मेष (शत्रु) राशि में होगा। जातक फिर भी भाग्यशाली होगा। जातक धनी होगा। उसे माता-पिता, भाई-बहन, स्त्री-संतान सभी का सुख मिलेगा। जातक को उत्तम वाहन का सुख प्राप्त होगा।

दृष्टि–नवम भावगत शुक्र की दृष्टि पराक्रम स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक को सहोदर भाई-बहनों का सुख मिलेगा।

निशानी–जातक को विदेश-यात्रा से लाभ मिलेगा, अथवा विदेशी कारोबार में लाभ होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–लग्नेश सूर्य नवम भाव में शुक्र के साथ यदि हो तो जातक परम भाग्यशाली तथा सुन्दर होगा।

2. **शुक्र + चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा शुक्र के साथ यदि नवम भाव में हो तो जातक का भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।

3. **शुक्र + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल शुक्र के साथ नवम भाव में हो तो 28 वर्ष की आयु में जातक की किस्मत चमकेगी।

4. **शुक्र + बुध**–धनेश, लाभेश बुध भाग्य स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक धनी एवं व्यापारी होगा।

5. **शुक्र + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश भाग्य स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक का भाग्योदय धीमी गति से 32 वर्ष की आयु में होगा।
6. **शुक्र + शनि**–षष्ठेश, सप्तमेश शनि भाग्य स्थान में यदि शुक्र के साथ हो तो भाग्योदय में दिक्कतें आयेंगी।
7. **शुक्र + राहु**–भाग्य स्थान में राहु यदि शुक्र के साथ हो तो भाग्य में भटकाव आयेगा। स्त्री की मदद से जातक आगे बढ़ेगा।
8. **शुक्र + केतु**–भाग्य स्थान में केतु यदि शुक्र के साथ हो तो जातक का भाग्योदय तीव्रता से होगा। जातक 26 से 32 वर्ष की आयु में चार साल लगातार आगे बढ़ेगा।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में

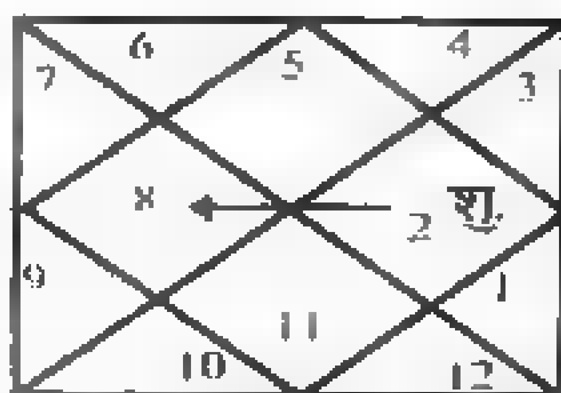

सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहां दशम स्थान में शुक्र वृष राशि में स्वगृही होगा। वृष राशि के 16 से 30 अंशों तक शुक्र ज्यादा शुभ फल देगा। शुक्र की इस स्थिति के कारण यहां क्रमशः कुलदीपक योग, पद्मसिंहासन योग एवं मालव्य योग की सृष्टि हुई है। ऐसा जातक राजा या किसी भी सूरत में राजा से कम नहीं होता है। जातक के पास उत्तम वाहन, उत्तम भवन, नौकर-चाकर एवं सभी प्रकार के ऐशो-आराम की सामग्री उपलब्ध रहेगी।

दृष्टि–दशम स्थान में स्थित शुक्र की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी।

निशानी–जातक, काव्य-सौंदर्य का प्रेमी एवं रसिक मिजाज होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का वैभव बढ़ेगा व उन्नति होगी। धन की प्राप्ति होगी एवं पराक्रम बढ़ेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–लग्नेश सूर्य शुक्र के साथ दशम स्थान में हो तो जातक राजा से कम नहीं होगा। जातक का राजनीति में वर्चस्व रहेगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा दशम स्थान में शुक्र के साथ होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक राजा ही होगा। स्त्रियां उसकी मददगार होंगी।

3. **शुक्र + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल यदि शुक्र के साथ दशम स्थान में हो तो जातक बड़ा जमीन-जायदाद का स्वामी होगा।

4. **शुक्र + बुध**–धनेश, लाभेश बुध यदि शुक्र के साथ दशम स्थान में हो तो जातक के पास अनेक वाहन होंगे।

5. **शुक्र + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु दशम स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक के अनेक मकान होंगे।

6. **शुक्र + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शुक्र के साथ केन्द्र स्थान में हो तो जातक की पत्नी रंगीन मिजाज की होगी।

7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु दशम स्थान में जातक को प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी बनायेगा।

8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु दशम स्थान में जातक को यशस्वी व्यक्तित्व का धनी बनायेगा।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में

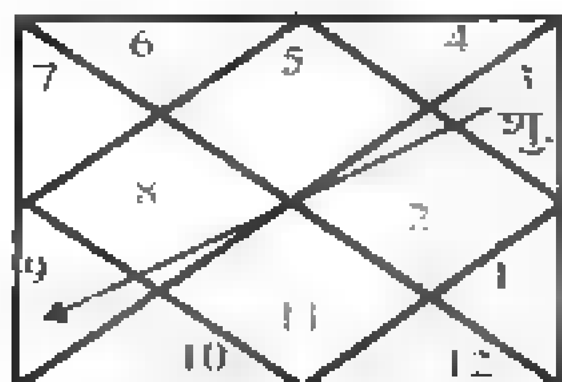

सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहां एकादश स्थान में शुक्र मिथुन (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। जातक धनी व उद्योगपति होगा। जातक महान पराक्रमी होगा। जातक को मिलने-जुलने वालों व मित्रों से बराबर लाभ होता रहेगा।

दृष्टि–लाभ भावगत शुक्र की दृष्टि पंचम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः जातक को विद्या, बुद्धि, संतान, धन-संपत्ति की प्राप्ति होगी।

निशानी–जातक को स्त्री मित्रों से लाभ होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। व्यापार-व्यवसाय से जातक को धन की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–लग्नेश सूर्य लाभ स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक कुशल व्यापारी होता है।

2. **शुक्र + चंद्र**–व्ययेश लाभ स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक व्यापार के फैलाव में खूब रुपया खर्च करता है।

3. **शुक्र + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल यदि लाभ स्थान में हो तो जातक उद्योगपति होगा।

4. **शुक्र + बुध**—धनेश बुध लाभ स्थान में स्वगृही होकर शुक्र के साथ हो तो जातक महाधनी एवं बड़ा व्यापारी होगा।

5. **शुक्र + गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु लाभ स्थान में शुक्र के साथ होने से लाभ की प्राप्ति टुकड़ों में करायेगा।

6. **शुक्र + शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि लाभ स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक पत्नी के नाम से धन कमायेगा।

7. **शुक्र + राहु**—लाभ स्थान में राहु शुक्र के साथ होने से लाभ में कमी करायेगा।

8. **शुक्र + केतु**—लाभ स्थान में केतु शुक्र के साथ, मध्यम लाभ दिलायेगा।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में

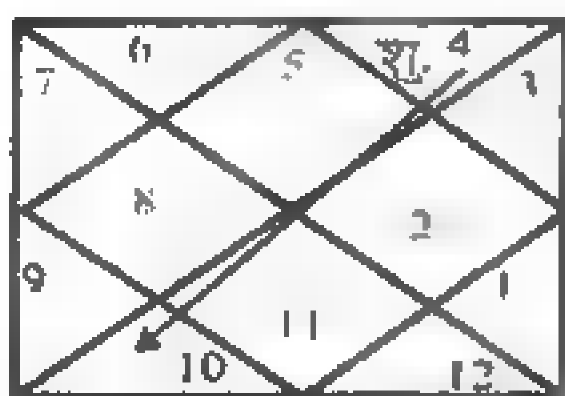

सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल देगा। द्वादश स्थान में शुक्र कर्क (शत्रु) राशि में होगा। शुक्र की यह स्थिति कुण्डली में 'पराक्रमभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि करती है। [redacted] एक जगह पर स्थिर होकर नहीं बैठ (कमा) पायेगा। विदेशी व्यापार या विदेशी यात्रा से जातक को लाभ होगा। ऐसा जातक प्रेम प्रसंग में बदनाम होगा एवं उसकी प्रतिष्ठा भंग होगी।

दृष्टि—द्वादश भावगत शुक्र की दृष्टि छठे भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु रहेंगे। गुप्त बीमारी रहेगी।

निशानी—जातक की बाईं आंख कमजोर होगी। जातक रोमांटिक व रसिक मिजाज का व्यक्ति होगा।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + सूर्य**—लग्नेश व्यय भाव में शुक्र के साथ होने से नेत्रपीड़ा देगा।

2. **शुक्र + चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्रमा व्यय भाव में होने से नेत्र पीड़ा देगा।

3. **शुक्र + मंगल**—शुक्र के साथ मंगल व्यय भाव में होने से जातक का वाहन चोरी चला जायेगा।

4. **शुक्र + बुध**–बुध के साथ शुक्र व्यय भाव में होने से, जातक का धन चोरी चला जायेगा।

5. **शुक्र + गुरु**–अष्टमेश गुरु शुक्र के साथ व्यय भाव में हो तो जातक के साथ दुर्घटना करायेगा।

6. **शुक्र + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि व्यय भाव में शुक्र के साथ होने से जातक की पत्नी घर से भाग जायेगी।

7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से धार्मिक कार्यों में जातक की रुचि होगी।

8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु व्यय भाव में हो तो जातक खूब यात्राएं करेगा।

❑❑❑

सिंहलग्न में शनि की स्थिति

सिंहलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में

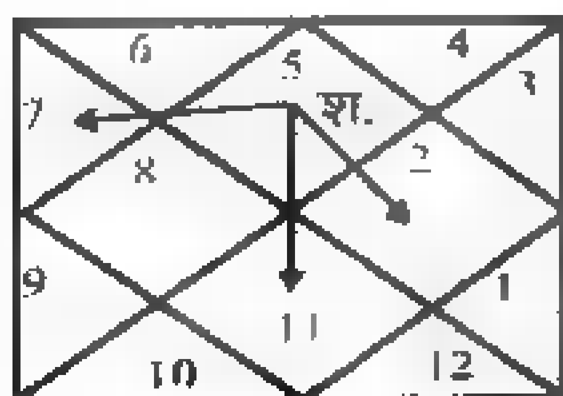

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। लग्नस्थ शनि यहां सिंह (शत्रु) राशि में होगा। शनि की यह स्थिति प्रत्येक कार्य में असफलता या विलम्ब की सूचक है। लग्न में शनि व्यक्ति को ईर्ष्यालु व षड्यंत्रकारी बनाता है।

दृष्टि–लग्नस्थ शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान (तुला राशि), सप्तम भाव (कुंभ राशि) एवं दशम भाव (वृष राशि) पर होगी। जिससे सहोदर सुखों में हानि, विलम्ब विवाह एवं नौकरी-व्यवसाय में विलम्ब किंवा परेशानियां उत्पन्न होती हैं।

निशानी–जातक को निश्चित रूप से नेत्र पीड़ा होगी। जातक की आंखें टेढ़ी-मेढ़ी होती हैं या आंखों में दोष पाया जाता है। यदि शनि या सूर्य पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक धीरे-धीरे अंधा हो जाता है। जातक को रीढ़ की हड्डी, स्नायु व उदर संबंधी विकार भी हो सकते हैं।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–सिंहलग्न के प्रथम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की षष्ठेश, सप्तमेश, शनि के साथ युति होगी। सूर्य यहां स्वगृही है। शनि मारकेश है। ऐसा जातक राजकीय ऐश्वर्य से युक्त होते हुए षड्यंत्र का शिकार होगा।

2. **शनि+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा के शनि के साथ होने से प्रत्येक कार्य में विलम्ब होगा।
3. **शनि+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल शनि के साथ हो तो जातक, साहसी, लड़ाकू व ईर्ष्यालु होगा।
4. **शनि+बुध**–धनेश, लाभेश बुध शनि के साथ लग्न में हो तो जातक धनवान होगा एवं विवाह के बाद धन कमायेगा।
5. **शनि+गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु शनि के साथ लग्न में हो तो जातक का दुर्घटना में अंग-भंग होगा।
6. **शनि+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र शनि के साथ हो तो जातक कामी एवं लम्पट होगा।
7. **शनि+राहु**–लग्न में शनि के साथ राहु हो तो जातक षड्यंत्रकारी एवं विस्फोटक स्वभाव का होगा।
8. **शनि+केतु**–लग्न में शनि के साथ केतु जातक को लड़ाकू बनायेगा।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में

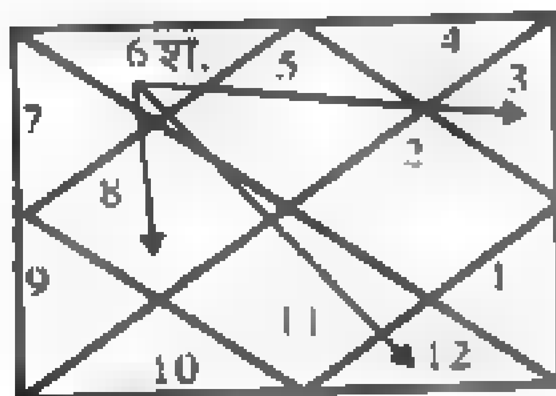

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां द्वितीय स्थान में शनि कन्या (मित्र) राशि में होगा। जातक के धन प्राप्ति के माध्यम दूषित होंगे। जातक की वाणी भी व्यंगात्मक (कडवी) होगी। जीवन साथी से असंतोष, अनबन रहेगी। शनि की यह स्थिति स्वास्थ्य के लिए शुभ नहीं है। जरा सी असावधानी जातक को लम्बी बीमारी की ओर धकेल देगी।

दृष्टि–द्वितीयस्थ शनि की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि), अष्टम भाव (मीन राशि) एवं एकादश भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक की माता को कष्ट, बड़े भाई को कष्ट होगा एवं प्रकट व गुप्त शत्रुओं से जातक को पीड़ा पहुंचेगी।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में अशुभ फल मिलेंगे।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–लग्नेश सूर्य की मारकेश शनि के साथ धन स्थान (कन्या राशि) में यह युति धन के लिए प्रारंभिक संघर्ष की द्योतक है। जातक पिता की मृत्यु के बाद ही धनवान होगा।

2. **शनि+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा धन स्थान में शनि के साथ होने से धन हानि करायेगा।

3. **शनि+मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल धन स्थान में शनि के साथ होने पर सम्पत्ति में विवाद करायेगा।

4. **शनि+बुध**—बुध द्वितीय स्थान में उच्च का होकर शनि के साथ हो तो जातक धनवान होगा। पर जातक की वाणी में दोष रहेगा।

5. **शनि+गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु द्वितीय स्थान में शनि के साथ होने से वाणी में हकलाहट लायेगा। जातक को धन संग्रह में रुकावट आयेगी।

6. **शनि+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र यदि शनि के साथ द्वितीय स्थान में हो तो जातक का धन रोग-बीमारी व शत्रु नाश पर खर्च होगा।

7. **शनि+राहु**—धन स्थान में शनि के साथ राहु होने से धन के घड़े में छेद जैसा है। जातक को धन संग्रह में बाधा रहेगी।

8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु धन स्थान में धनार्जन हेतु संघर्ष करायेगा।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में

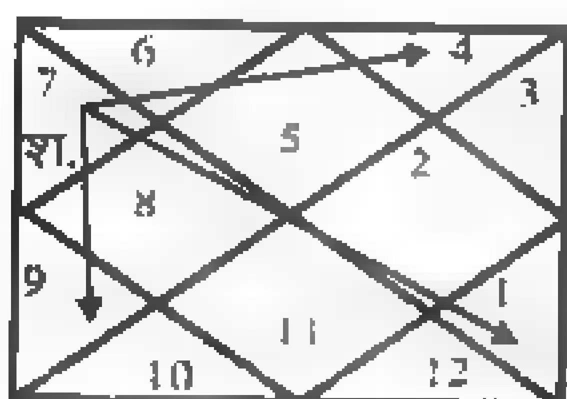

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय स्थान का स्वामी होने लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां तृतीय भावगत शनि तुला राशि में उच्च का होगा। तुला राशि में 20 अंशों तक शनि परमोच्च का होकर अत्यन्त शुभ फल देगा। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी, महान साहसी, धनी, हठी व उद्दण्ड होता है। यहां अकेला शनि सहोदर, भ्राता व पिता से धन लाभ-सम्पत्ति दिलवाता है परन्तु पाप ग्रहों की यदि युति हो तो परिणाम बदल जायेंगे। जातक कुख्यात होगा व अपने नाम से सर्वत्र पहचाना जायेगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम भाव (धनु राशि), भाग्य भवन (मेष राशि) एवं द्वादश भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक को उत्तम पुत्र संतति की प्राप्ति होगी। जातक भाग्यशाली होगा तथा खूब धन खर्च करेगा।

निशानी—यहां शनि छोटे भाई का नाश करता है।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में थोड़ा अनिष्ट, मिश्रित शुभ परिणाम मिलेंगे।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–तृतीय स्थान में उच्च के शनि के साथ लग्नेश की युति जातक का पराक्रम भंग करायेगी। यहां 'नीचभंग राजयोग' के कारण जातक महान पराक्रमी एवं धनी होगा परन्तु कुख्यात होगा। जातक अपने बुरे कामों द्वारा पहचाना जायेगा।
2. **शनि+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा तृतीय स्थान में शनि के साथ हो तो जातक का पराक्रम भंग होगा।
3. **शनि+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल, तृतीय स्थान में शनि के साथ हो तो जातक मित्रों से झगड़ा करता रहेगा।
4. **शनि+बुध**–धनेश, लाभेश बुध तृतीय स्थान में शनि के साथ हो तो जातक धनी व पराक्रमी होगा।
5. **शनि+गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु तृतीय स्थान में शनि के साथ होने से जातक के भाईयों की उम्र लम्बी नहीं होगी।
6. **शनि+शुक्र**–तृतीयेश शुक्र यदि शनि के साथ होगा तो 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक धनी एवं प्रबल पराक्रमी होगा।
7. **शनि+राहु**–यहां राहु यदि शनि के साथ हो तो जातक का भाईयों से विवाद रहेगा।
8. **शनि+केतु**–यहां केतु यदि शनि के साथ हो तो मित्रों से मनमुटाव होगा।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में

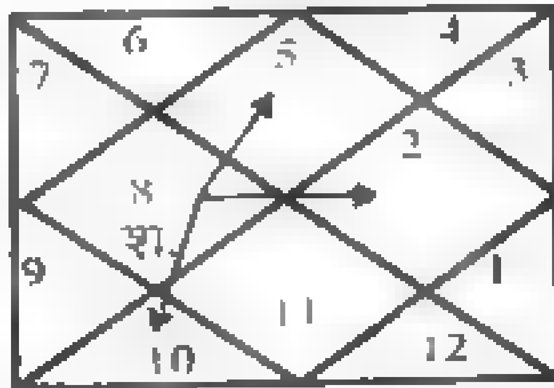

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां चतुर्थ स्थान में शनि वृश्चिक (शत्रु) राशि में होगा। जातक को धन, यश, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। जातक नौकरी-व्यवसाय, रोजी-रोजगार के मामले में सुखी होगा। ऐसे जातक को ठेकेदारी से लाभ होता है। जमीन-जायदाद का भी लाभ होगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत शनि की दृष्टि छठे स्थान (मकर राशि), दशम स्थान (वृष राशि) एवं लग्न स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक के जीवन में शत्रु जरूर होंगे। जातक को राजनीति में लाभ मिलेगा। जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—चतुर्थ स्थान में लग्नेश व मारकेश शनि की युति जातक की माता को लाईलाज बीमारी से ग्रसित करेगी। माता की मृत्यु के बाद जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। जातक स्वपराक्रम से आगे बढ़ेगा।
2. **शनि+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा चौथे स्थान में शनि के साथ नीच का होने से जातक की माता बीमार रहेगी। विष भोजन का भय रहेगा।
3. **शनि+मंगल**—मंगल की युति शनि के साथ चतुर्थ स्थान में होने से 'रूचक योग' बनेगा। जातक राजा के सामन भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **शनि+बुध**—धनेश, लाभेश बुध चतुर्थ स्थान में शनि के साथ हो तो जातक धनी होगा एवं उसे ससुराल से धन मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश, गुरु यदि शनि के साथ चतुर्थ स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग रहेगा।
6. **शनि+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र यदि शनि के साथ चतुर्थ भाव में हो तो जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु माता को अल्पायु देता है।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु माता को लम्बी बीमारी देगा।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में

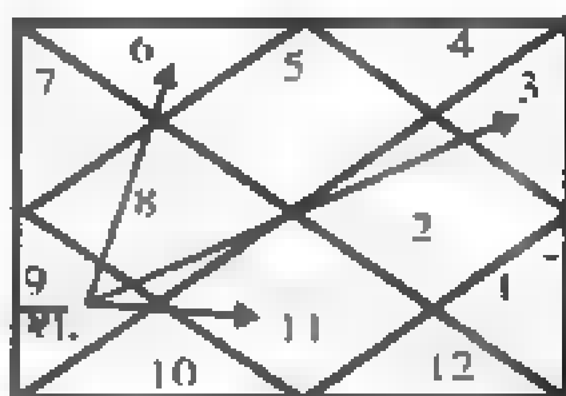

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां पंचम स्थान में शनि धनु (सम) राशि में होगा। ऐसा जातक विद्यावान, बुद्धिमान होता है पर विदेशी भाषा पढ़ेगा। ऐसा जातक बहकावे में आकर कभी-कभी गलत काम करता है। षड्यंत्र, हेरा-फेरी एवं अनैतिक कार्य में रुचि जातक को मुसीबत में डाल देती है।

दृष्टि—पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (कुंभ राशि), लाभ स्थान (मिथुन राशि) एवं धन भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगा। जातक धनी होगा। उसे अपने धंधों-कारोबार से लाभ मिलेगा।

दशा—शनि की दशा- अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—सिंहलग्न के पंचम स्थान में लग्नेश+षष्टेश की युति संतान के लिए कष्टदायक है तथा एकाध बालक की अकाल मृत्यु, गृहस्थ सुख में अनबन की स्थित बनायेगी। जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा पंचम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक की एकाध संतान की अल्प मृत्यु होगी।
3. **शनि+मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल पंचम स्थान में शनि के साथ होने से जातक की संतति भाग्यशाली होगी।
4. **शनि+बुध**—धनेश, लाभेश बुध पंचम में शनि के साथ होने से जातक धनवान होगा तथा उसकी संतति भी धनवान होगी।
5. **शनि+गुरु**—षष्टेश, सप्तमेश शनि के साथ अष्टमेश गुरु भी पंचम स्थान में हो तो जातक की एक-दो संतति की अकाल मृत्यु होगी।
6. **शनि+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र यदि शनि के साथ पांचवें हो तो जातक शिक्षा के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करेगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु यहां संतानोत्पत्ति (वंश वृद्धि) में बाधक है।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु संतान हानि कराता है।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति षष्टम स्थान में

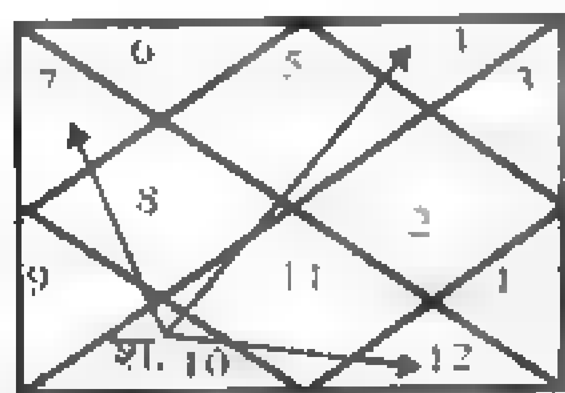

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां छठे स्थान में शनि मकर राशि में स्वगृही होगा। मकर राशि के 21 से 30 अंशों तक शनि ज्यादा शक्तिशाली होगा। शनि के कारण यहां 'विलम्ब विवाह योग' बना परन्तु षष्टेश षष्टम भाव में स्वगृही होने से हर्ष नामक 'विपरीत राजयोग' भी बनेगा। जातक धनी, शहर का प्रतिष्ठित व्यक्ति, गाड़ी-वाहन व बंगले का स्वामी होगा। जातक का वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है।

दृष्टि–षष्टमस्थ शनि की दृष्टि अष्टम भाव (मीन राशि), व्यय भाव (कर्क राशि) एवं तृतीय भाव (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का होगा तथा अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक पूर्ण पराक्रमी होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–सिंहलग्न के छठे स्थान में शनि स्वगृही होकर लग्नेश सूर्य के साथ होगा। षष्टेश के षष्टम में स्वगृही होने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक महाधनी एवं भौतिक सुखों से सम्पन्न व्यक्ति होगा। जातक का जीवनसाथी जातक पर हावी रहेगा।
2. **शनि+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा अष्टम स्थान में विपरीत राजयोग बनाता है पर शनि के साथ होने से जातक का मन अशांत रहेगा। जातक धनी होगा।
3. **शनि+मंगल**–मंगल शनि की युति से यहां 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक राजा के समान शक्तिशाली होगा।
4. **शनि+बुध**–धनेश, लाभेश बुध के छठे स्थान में शनि के साथ होने से जातक को आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।
5. **शनि+गुरु**–अष्टमेश गुरु, शनि के साथ 'विपरीत राजयोग' एवं 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
6. **शनि+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र शनि के साथ छठे होने पर जातक का पराक्रम भंग होगा।
7. **शनि+राहु**–राहु यहां राजयोग प्रदाता है पर जातक को शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए।
8. **शनि+केतु**–केतु शनि के साथ होने से जातक के शत्रु षड्यंत्रकारी गतिविधियां करते रहेंगे।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में

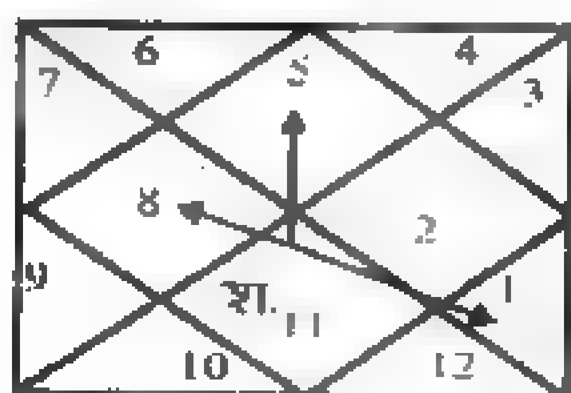

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां सप्तम स्थान में शनि कुंभ राशि में स्वगृही होगा। कुंभ राशि के एक से

बीस अंशों तक शनि मूल त्रिकोणी होकर अत्यन्त शुभ फल देगा। शनि की यह स्थिति 'शश योग' बनाती है। ऐसा जातक राजा के समान प्रतापी एवं ऐश्वर्यवान होता है। ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। उसे भागीदारी व साझे के कार्यों में लाभ होता है।

दृष्टि–सप्तमस्थ शनि की दृष्टि भाग्य भवन (मेष राशि), लग्न स्थान (सिंह राशि) एवं चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक भाग्यशाली होगा। उसे सभी भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति सहज में हो जायेगी। जातक अपने परिश्रम से आगे बढ़ेगा।

निशानी–जातक का ससुराल पक्ष बहुत धनी व शक्तिशाली होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक का सर्वांगीण विकास होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–सिंहलग्न के सातवें स्थान में शनि मूलत्रिकोण कुंभ राशि का होकर सूर्य के स्थान को लग्नाधिपति योग करके लग्न को देखेगा। लग्नेश+सप्तमेश की यह युति यहां पर सार्थक है। जातक की पत्नी व ससुराल पक्ष धनी होगा। जातक जीवन में एक सफल व समृद्धशाली व्यक्ति होगा।
2. **शनि+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा सप्तम स्थान में शनि के साथ हो तो विवाह सुख में कमी करायेगा।
3. **शनि+मंगल**–सुखेश, भाग्येश सप्तम स्थान में शनि के साथ होने से जातक को पराक्रमी बनायेगा पर गृहस्थ सुख में अशांति रहेगी।
4. **शनि+बुध**–धनेश, लाभेश बुध सातवें होने से जातक की पत्नी धनवान होगी।
5. **शनि+गुरु**–अष्टमेश गुरु शनि के साथ सातवें हो तो विवाह विच्छेद होगा।
6. **शनि+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र सातवें स्थान में शनि के साथ हो तो जातक का जीवनसाथी स्वयं धनोपार्जन करेगा।
7. **शनि+राहु**–राहु शनि के साथ सप्तम स्थान में होने से विवाह विच्छेद (तलाक) करायेगा।
8. **शनि+केतु**–केतु शनि के साथ सप्तम स्थान में हो तो जीवनसाथी से मनमुटाव रहेगा।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही

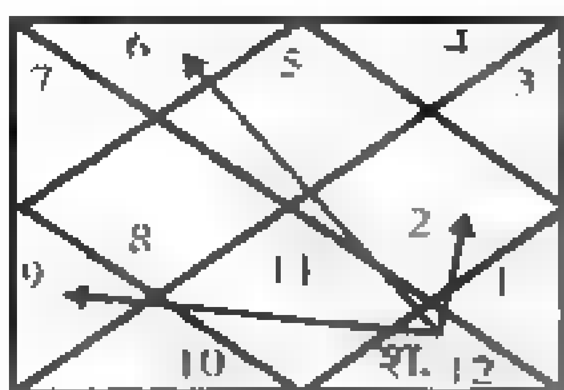

देगा। यहां अष्टम स्थान में शनि मीन (सम) राशि में होगा। शनि अष्टम में होने से 'विवाहभंग योग' बना। षष्टेश के अष्टम में जाने से हर्ष नामक 'विपरीत राजयोग' बना। जातक धनी-मानी एवं अभिमानी होगा। उसे सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी परन्तु वैवाहिक सुख में गड़बड़ रहेगी। जीवनसाथी के साथ दीर्घ रोग या दुर्घटना की संभावना रहेगी।

दृष्टि—अष्टमस्थ शनि की दृष्टि लाभ स्थान (मिथुन राशि), धन भाव (कन्या राशि) एवं पंचम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: शनि यहां व्यापार में तथा, कुटुम्ब सुख में बाधा तथा संतति को लेकर परेशानी उत्पन्न करेगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक को गुप्त परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य—**सिंहलग्न के अष्टम स्थान में सूर्य के कारण 'लग्नभंग योग' शनि के कारण 'विवाहभंग योग' एवं हर्ष नामक विपरीत राजयोग यहां मुखरित हुए हैं। फलत: जातक का विलम्ब विवाह होगा या दो विवाह हो सकते हैं। जातक आर्थिक रूप से सम्पन्न भौतिक संसाधनों से युक्त प्रबल पराक्रमी व्यक्ति होगा।
2. **शनि+चंद्र—**व्ययेश चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ होने से अचानक दुर्घटना करायेगा।
3. **शनि+मंगल—**सुखेश, भाग्येश मंगल आठवें शनि के साथ होने से दो विवाह का संकेत देता है।
4. **शनि+बुध—**धनेश, लाभेश बुध आठवें हो तो धन की हानि करायेगा।
5. **शनि+गुरु—**शनि के साथ गुरु होने से विपरीत राजयोग की ताकत 'सरल नामक' योग के कारण बढ़ जायेगी।
6. **शनि+शुक्र—**तृतीयेश, दशमेश शुक्र आठवें शनि के साथ होने से गुप्त बीमारी देगा।
7. **शनि+राहु—**जीवनसाथी के साथ दुर्घटना का संकेत मिलता है।
8. **शनि+केतु—**जीवनसाथी की शल्य चिकित्सा होगी।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में

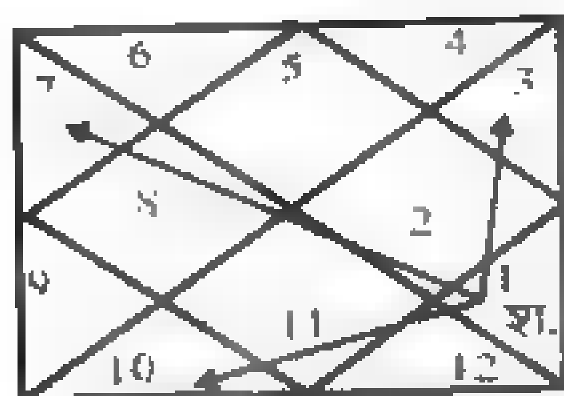

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने से एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां नवम स्थान में शनि मेष राशि में नीच का होगा। मेष राशि के 20 अंशों में शनि परम नीच का होता है। ऐसा जातक क्रियाशील होता है, पर उसके सभी काम प्राय: उल्टे होते हैं। जातक को विरोधी परिस्थियितों एवं स्वव्यवसाय में विरोधियों दोनों का सामना करना पड़ेगा।

दृष्टि–नवम भावगत शनि की दृष्टि लाभ स्थान (मिथुन राशि), पराक्रम स्थान (तुला राशि) एवं षष्टम भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: जातक को व्यापार-व्यवसाय में रुकावट, सहोदर भाइयों से मनमुटाव एवं शारीरिक रोग व शत्रुओं का मुकाबला करना पड़ेगा।

दशा–शनि की दशा-अतर्दशा मिश्रित फल देगी। इन दिनों संघर्ष की पराकाष्ठा रहेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–सिंहलग्न के नवम स्थान में उच्च का सूर्य एवं नीच का शनि 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान महान शक्तिशाली एवं वैभवशाली होगा। जातक का जीवन साथी भी प्रबल पराक्रमी एवं पुरुषार्थी होगा।
2. **शनि+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा भाग्य स्थान में नीच के शनि के साथ होने से जातक के भाग्य में उतार-चढ़ाव आता रहेगा।
3. **शनि+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल स्वगृही भाग्य स्थान में शनि के साथ 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। जातक राजा होगा, राजा से कम नहीं होगा।
4. **शनि+बुध**–धनेश, लाभेश बुध शनि के साथ भाग्य स्थान में जातक को धनी व अभिमानी व्यक्तित्व वाला बनायेगा।
5. **शनि+गुरु**–अष्टमेश गुरु भाग्य स्थान में शनि के साथ हो तो जातक के भाग्य में उतार तेजी से आयेंगे, चढ़ाव कम आयेंगे।
6. **शनि+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र जातक का भाग्योदय महिला की मदद से होने का संकेत देता है।

7. **शनि+राहु**—यहां राहु शनि के साथ होने से भाग्य में भटकाव देगा। जातक अपना रास्ता तय नहीं कर पायेगा।
8. **शनि+केतु**—यहां केतु के साथ शनि जातक का भाग्योदय उल्टे (साहसिक) कार्य से करायेगा।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में

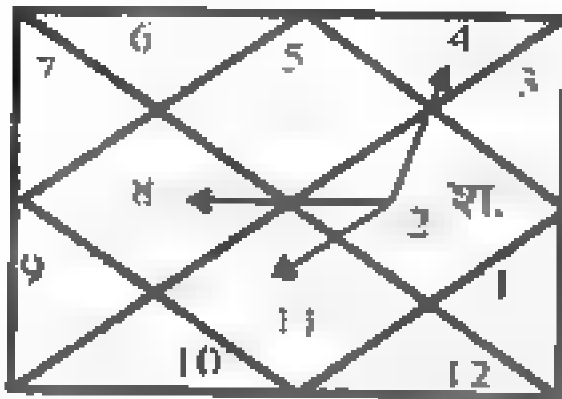

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने से एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां दशम स्थान में शनि वृष (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक प्रभावशाली होगा। कोर्ट-कचहरी, राज-दरबार में जातक की तूती बोलेगी। जातक सिद्धान्तवादी होगा एवं हरेक से कुछ न कुछ पंगा लेने की कोशिश करेगा।

दृष्टि—दशम भावगत शनि की दृष्टि व्यय भाव (कर्क राशि), चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) एवं सप्तम भाव अपने स्वयं के घर कुंभ राशि पर होगी। फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक का ससुराल धनी होगा। जातक का निजी मकान बड़ा व वैभवशाली होगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा उन्नतिदायक होगी पर कुछ फल अशुभ भी होंगे।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—सिंहलग्न के दशम स्थान में लग्नेश (सूर्य) एवं सप्तमेश (शनि) केन्द्र में होने से जातक विवाह के बाद सरकारी नौकरी या निजी व्यवसाय स्थापित करेगा। जातक के विचार पिता से नहीं मिलेंगे। जातक की नौकरी या रोजगार जन्म स्थान से दूर होगा।
2. **शनि+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा दशम भाव में उच्च का 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। यहां शनि के साथ चंद्रमा जातक को राजा के समान पराक्रमी बनायेगा।
3. **शनि+मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल दशम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।

4. **शनि+बुध**–धनेश, लाभेश बुध दशम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक की पत्नी को धनवान बनायेगा।

5. **शनि+गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु दशम स्थान में शनि के साथ होने से जातक का ससुराल पक्ष धनवान होगा।

6. **शनि+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र शनि के साथ 'मालव्य योग' बनायेगा। जातक राजा से कम नहीं होगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ दशम स्थान में राहु जातक को जिद्दी व हठी बनायेगा।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ दशम स्थान में केतु जातक को यश दिलायेगा।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में

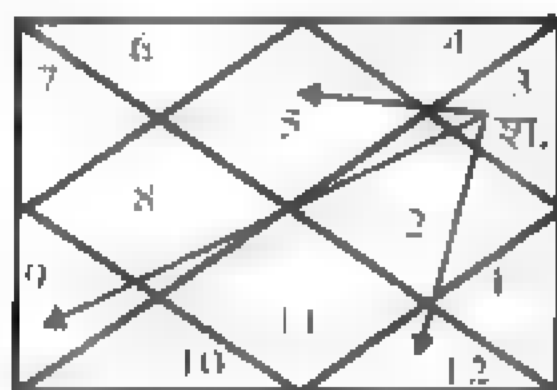

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने से एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां एकादश स्थान में शनि मिथुन (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक बुद्धिमान व शिक्षित होगा। जातक को पत्नी व संतान का सुख प्राप्त होगा। जातक अच्छी जमीन जायदाद का स्वामी, धनवान, यशोवान होगा। परन्तु संपत्ति में विवाद रहेगा।

दृष्टि–एकादश भावगत शनि की दृष्टि लग्न स्थान (सिंह राशि), पंचम स्थान (धनु राशि) एवं अष्टम स्थान (मीन राशि) पर होगी। फलत: जातक स्वपरिश्रम से आगे बढ़ेगा। जातक विद्यावान तथा शिक्षित होगा। जातक अपने शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फलदायक होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–सिंहलग्न के एकादश स्थान में लग्नेश सूर्य के सप्तमेश शनि के साथ होने से जातक को पत्नी व संतान का पूर्ण सुख रहेगा। जातक सफल व्यवसायी या उद्योगपति होगा। जातक के उद्योग का विकास पिता की मृत्यु के बाद होगा।

2. **शनि+चंद्र**–चंद्रमा का व्ययेश होकर लाभ स्थान में शनि के साथ होने से लाभ में रुकावट आयेगी।

3. **शनि+मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल, शनि के साथ लाभ स्थान में होने से जातक को उद्योगपति बनायेगा।

4. **शनि+बुध**—धनेश बुध स्वगृही होकर शनि के साथ व्यापार में उत्तम धन लाभ दिलायेगा।

5. **शनि+गुरु**—अष्टमेश गुरु लाभ स्थान में शनि के साथ होने से शुद्ध लाभ में 60% रुकावट दिलायेगा।

6. **शनि+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र लाभ स्थान में शनि के साथ हो तो पत्नी के नाम की सम्पत्ति से लाभ दिलायेगा।

7. **शनि+राहु**—लाभ स्थान में शनि के साथ राहु लाभांश को तोड़ेगा।

8. **शनि+केतु**—लाभ स्थान में शनि के साथ केतु व्यापार में 30% लाभ को नष्ट करेगा।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में

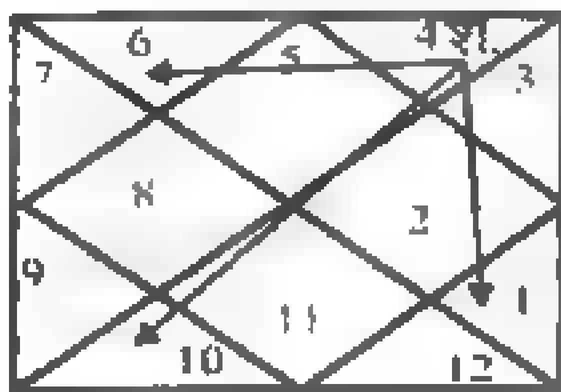

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने से एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां द्वादश स्थान मे शनि कर्क (शत्रु) राशि में होगा। शनि की इस स्थिति के कारण 'विलम्बविवाह योग' बना। षष्टेश शनि का द्वादश स्थान में जाने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बना। जातक के पास स्थाई सम्पत्ति बहुत होगी पर चल सम्पत्ति धन संग्रह में जातक बराबर बाधा बनी रहेगी। ऋण-रोग व शत्रु जातक को जीवन पर्यन्त परेशान करते रहेंगे। जातक के जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर नहीं होंगे।

दृष्टि—द्वादश भावगत शनि की दृष्टि धन स्थान (कन्या राशि), छठे भाव (मकर राशि) एवं भाग्य भवन (मेष राशि) पर होगी। फलतः जातक धनी होगा पर धन खर्च होता चला जायेगा। जातक भाग्यशाली होगा पर उसका भाग्य साथ देना कम कर देगा। जातक के जीवन में गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में चिंता बढ़ेगी। व्यर्थ की यात्राएं होंगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—सिंहलग्न के द्वादश स्थान में सूर्य के कारण 'लग्नभंग योग' शनि के कारण 'विमलभंग योग' तथा 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' बना। ऐसा

जातक धनी होगा। विवाह के बाद जातक की किस्मत चमकेगी। जातक के पत्नी से वैचारिक मतभेद रहेंगे। जातक पिता के साथ भी कम रह पायेगा।

2. **शनि+चंद्र**–स्वगृही चंद्रमा शनि के साथ 'विपरीत राजयोग' के साथ जातक को धनी बनायेगा। पर जातक के पत्नी से विचार कम मिलेंगे।

3. **शनि+मंगल**–सुखेश, भाग्येश, मंगल, शनि के साथ होने से जातक को स्थाई सम्पत्ति में बाधा आयेगी।

4. **शनि+बुध**–धनेश, लाभेश बुध बारहवें शनि के साथ होने से जातक को दिवालिया करेगा।

5. **शनि+गुरु**–अष्टमेश गुरु बारहवें होने से जातक को संतान को लेकर चिंता रहेगी।

6. **शनि+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र शनि के साथ बारहवें होने से जातक का पराक्रम भंग होगा।

7. **शनि+राहु**–राहु बारहवें शनि के साथ होने से जातक के जीवन में दुर्घटना होती रहेगी।

8. **शनि+केतु**–केतु बारहवें शनि के साथ हो तो जातक को विवाह सुख में बाधा आयेगी।

❑❑❑

सिंहलग्न में राहु की स्थिति

सिंहलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में

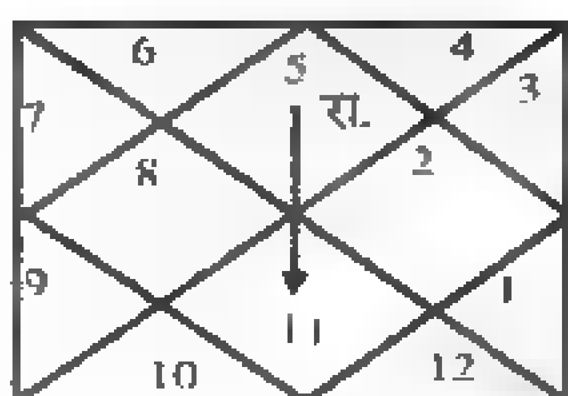

सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्री विष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां प्रथम स्थान में राहु सिंह (शत्रु) राशि में होगा। लग्नस्थ राहु वाला व्यक्ति उम्र से अधिक दिखता है। सिंह के राहु लग्न में होने से दंत रोग उत्पन्न होता है। जातक के दांत समय से पहले गिर जाते हैं। जातक क्रोधी एवं हठी होता है।

प्रभाव—सप्तम भाव पर राहु का प्रभाव विवाह सुख में बाधक है।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा जातक के जीवन में भटकाव एवं संघर्ष करायेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु सूर्य की युति राज-सरकार से दण्ड दिलाती है।
2. **राहु+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा राहु के साथ होने से जातक की आर्थिक स्थिति को विकृत करेगा। जातक एक स्थान पर टिक कर नहीं बैठ पायेगा।
3. **राहु+मंगल**—भाग्येश मंगल लग्न में राहु के साथ हो तो जातक को भाग्यशाली तो बनाता है पर जातक के भाग्य में उतार-चढ़ाव बहुत आयेगा।
4. **राहु+बुध**—धनेश बुध राहु के साथ होने से धन प्राप्ति के अवसर मिलेंगे।

5. **राहु+गुरु**–यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु के साथ प्रथम स्थान में राहु होने से जातक का मन-मस्तिष्क उद्विग्न रहेगा। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक देव-ब्राह्मणों एवं देहसुख में हीन होता है।
6. **राहु+शुक्र**–जातक का पराक्रम भंग होगा।
7. **राहु+शनि**–षष्टेश शनि लग्न में राहु के साथ होने से जीवनसाथी से मनमुटाव करायेगा।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में

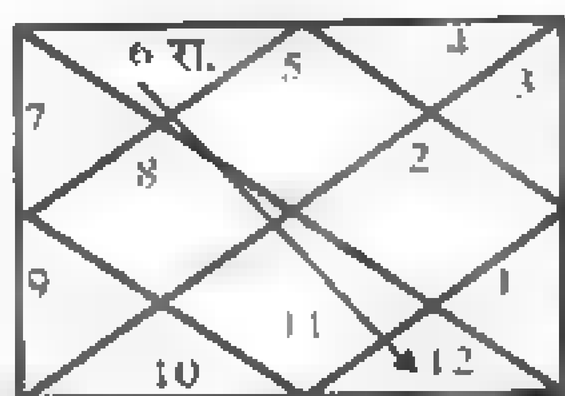

सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्री विष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां द्वितीय स्थान में राहु कन्या राशि में उच्च का होगा। यहां राहु धन के घड़े में छेद करता है पर राहु बुध की कन्या राशि में होने से ज्यादा नुकसानदायक साबित नहीं होगा। क्योंकि कन्या का राहु अपने घर में अंधा होता है। जातक अनीति से कमायेगा।

प्रभाव–राहु का प्रभाव अष्टम स्थान पर, शत्रुओं का नाश करायेगा।

निशानी–जातक की वाणी कड़वी होगी।

दशा–राहु की दशा अंतर्दशा में जातक के धन का नाश होगा पर साथ में शत्रुओं का भी नाश होगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य धन के घड़े में छेद करेगा।
2. **राहु+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा के साथ राहु धन का नाश करेगा।
3. **राहु+मंगल**–भाग्येश, सुखेश मंगल के साथ राहु सुख का नाश करेगा।
4. **राहु+बुध**–बलवान धनेश के साथ राहु जातक को धनी बनायेगा पर अचानक धन का नाश भी करायेगा।
5. **राहु+गुरु**–सिंहलग्न के द्वितीय स्थान में पंचमेश गुरु के साथ राहु होने से 'चाण्डाल योग' बना। जिसके कारण जातक भुजबल से हीन होता है तथा जो

कुछ उसका नष्ट (चोरी) हो जाता है या जो धन उधार चला जाता है, वो वापस नहीं मिलता।

6. **राहु+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र के साथ धन स्थान में राहु जातक के भाग्योदय में दिक्कतें पैदा करेगा।

7. **राहु+शनि**—षष्टेश शनि के साथ राहु धन स्थान में जातक के धन का नाश करायेगा। जातक मुंहफट भी होगा।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में

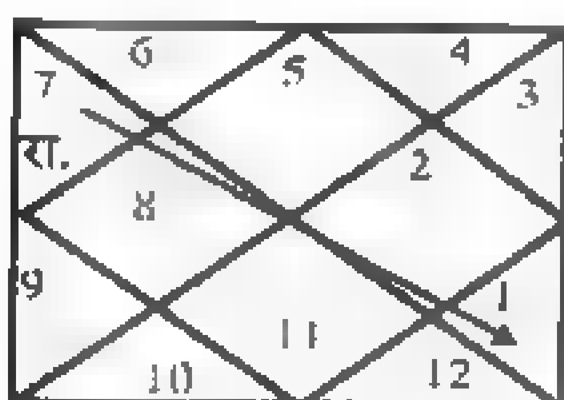

सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्री विष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां तृतीय स्थान में राहु तुला (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक विपरीत परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम होता है तथा आक्रामक रणनीति से अपना काम कराने में सक्षम होता है। जातक की आयु लम्बी एवं पत्नी सुंदर होगी।

प्रभाव—नवम स्थान (मेष राशि) पर राहु की दृष्टि भाई [redacted] पिता से अनबन करायेगी।

निशानी—जातक को शत्रुओं पर बराबर विजय मिलेगी।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा में [redacted]क का पराक्रम बढ़ेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—तृतीय स्थान में नीच के सूर्य के साथ राहु भाईयों, परिजनों से बैर करायेगा।

2. **राहु+चंद्र**—व्ययेश चंद्र के साथ राहु तृतीय स्थान में होने से परिजनों में धन को लेकर विवाद करायेगा।

3. **राहु+मंगल**—सुखेश, भाग्येश, मंगल के साथ राहु जमीन-जायदाद को लेकर परिजनों में विवाद करायेगा।

4. **राहु+बुध**—धनेश, लाभेश बुध के साथ तृतीयस्थ राहु मित्रों से धन हानि करायेगा। जातक द्वारा मित्रों को उधार दिया गया पैसा डूब जायेगा।

5. **राहु+गुरु**—यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु तृतीय स्थान में राहु के साथ होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक सहोदर भाईयों के सुखों से हीन होकर मित्रों से धोखा खाता है।

6. **राहु+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश स्वगृही शुक्र के साथ राहु नौकरी या सरकारी कार्य में धनहानि करायेगा।

7. **राहु+शनि**—षष्ठेश, सप्तमेश शनि के साथ राहु पत्नी या ससुराल से विवाद में धनहानि करायेगा।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

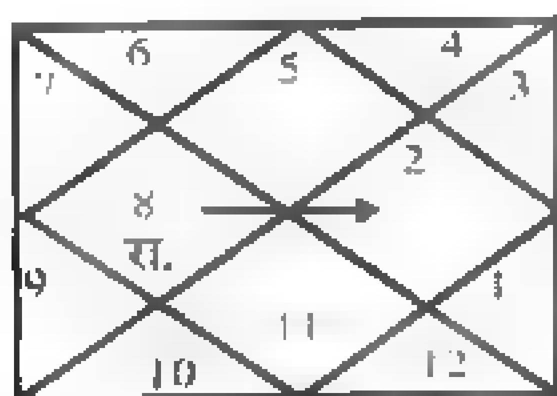

सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्रीविष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां चतुर्थ स्थान में राहु वृश्चिक (नीच) राशि में होगा। राहु की यह स्थिति जातक को धन, यश, पद-प्रतिष्ठा दिलाती है। जातक के पास स्थाई जमीन-जायदाद भी होती है पर उसमें विवाद रहेगा। राजनैतिक क्षेत्र में जातक को वांछित सफलता नहीं मिलती।

प्रभाव—राहु का प्रभाव दशम भाव (वृष राशि) पर होने से जमीन-जायदाद का विवाद होगा एवं मानसिक चिंता बनी रहेगी।

निशानी—जातक को दो माताएं होती हैं।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा खराब फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—लग्नेश सूर्य चतुर्थ भाव में राहु के साथ हो तो पैतृक सम्पत्ति को लेकर विवाद होता है।

2. **राहु+चंद्र**—यहां चंद्रमा हो तो जातक को मानसिक अस्थिरता रहेगी।

3. **राहु+मंगल**—सुखेश, भाग्येश, मंगल चतुर्थ स्थान में स्वगृही होने से 'रुचक योग' बना। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं साहसी होता है।

4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध की युति मानसिक अस्थिरता व धन हानि देगी।

5. **राहु+गुरु**–यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु चतुर्थ स्थान में राहु के साथ होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक मातृसुख से हीन होता है। जातक घर जमीन से रहित होकर मित्रों का द्रोही होता है।

6. **राहु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र चतुर्थ भाव में राहु के साथ होने से जातक का माता से विवाद कराता है।

7. **राहु+शनि**–षष्ठेश, सप्तमेश शनि राहु के साथ गृहस्थ सुख में न्यूनता एवं विवाह में बाधा डालता है।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में

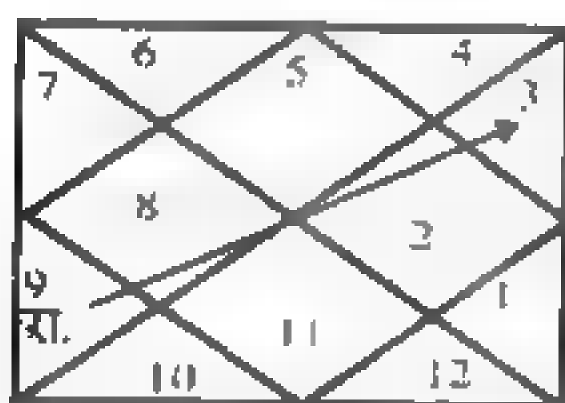

सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्रीविष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां पंचम स्थान में राहु धनु (नीच) का होगा। ऐसे जातक को पुत्रों का अभाव रहता है। जातक की माता की मृत्यु भी शीघ्र होती है। फिर भी जातक को अच्छी शिक्षा मिलती है। धार्मिक मनोवृत्ति के कारण जातक को पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। जातक सर्पदोष, पितृदोष से परेशान रहेगा।

प्रभाव–पंचमस्थ राहु का प्रभाव एकादश स्थान (मिथुन राशि) पर होने से जातक को नौकर अच्छे नहीं मिलेंगे। नौकर वफादार नहीं होंगे।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में चिंताएं बढ़ेंगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–पंचमस्थ राहु के साथ सूर्य ईश्वर उपासना के बाद उत्तम संतति का सुख देगा।

2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा पुत्र संतान का नाश करायेगा।

3. **राहु+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल के साथ राहु जातक को तीन पुत्रों का लाभ देगा।

4. **राहु+बुध**–धनेश, लाभेश बुध के साथ राहु जातक को कन्या संतति भी देगा। जातक की संतति धनवान होगी।

5. **राहु+गुरु**–यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु पंचम स्थान में स्वगृही होकर राहु के साथ होने से चाण्डाल योग बना। जातक को प्रथमतः पुत्र नहीं होंगे। पुत्र होंगे तो भी मूर्ख एवं संस्कारहीन होंगे। विद्या में बाधा निश्चित है। जातक का खान-पान दूषित होगा।

6. **राहु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र के साथ राहु कन्या संतति देगा। जातक की संतति पराक्रमी होगी।

7. **राहु+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि के साथ राहु गर्भपात, दुर्घटना से संतान नाश का संकेत देता है।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति षष्टम् स्थान में

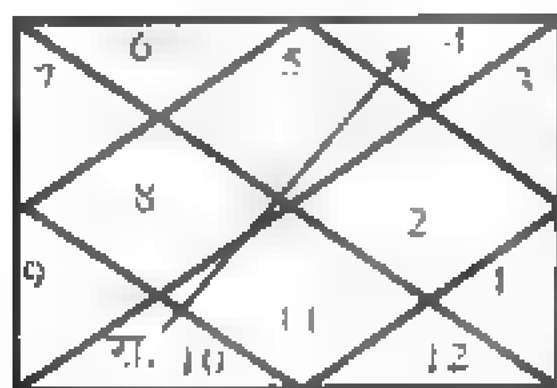

सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्रीविष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। छठे स्थान में राहु मकर (सम) राशि का होगा। छठे स्थान में राहु राजयोग कारक होता है। ऐसा जातक विषम परिस्थितियों में भी निरन्तर आगे बढ़ता है। जातक का स्वभाव कलहकारी होता है फलतः शत्रुओं की वृद्धि होती है। ऐसे जातक का अधिकतम समय शत्रुओं का दमन करने में नष्ट हो जाता है। जातक की आवक गुप्त होगी।

प्रभाव–षष्टमस्थ राहु का प्रभाव द्वादश भाव (कर्क राशि) पर होने से जातक को लकवा या कोढ़ की बीमारी हो सकती है।

निशानी–जातक को पुत्र संतान का सुख प्राप्त होगा।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में भययुक्त जीवन, दुर्घटना या मृत्यु का भय रहेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–छठे भाव में राहु के साथ सूर्य जातक के पुरुषार्थ को नष्ट करता है।
2. **राहु+चंद्र**–छठे स्थान में व्ययेश चंद्र के साथ राहु जातक को विदेश व निन्दित कार्यों से जोड़ता है।
3. **राहु+मंगल**–सुखेश, भाग्येश उच्च के मंगल के साथ राहु हो तो जातक को धनी बनाता है पर वाहन दुर्घटना से नुकसान का संकेत देता है।

4. **राहु+बुध**–धनेश, लाभेश बुध के साथ राहु धन का संग्रह कष्ट से कराता है।

5. **राहु+गुरु**–यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु छठे स्थान में नीच राशि का होकर राहु के साथ होने से 'चाण्डाल योग' बनायेगा। ऐसे जातक को बाल्यावस्था में जलभय, सर्पदंश का भय रहता है। जातक के लिए आयु का 6, 8, 18 व 20वां वर्ष घातक है।

6. **राहु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र के साथ राहु पराक्रम भंग करता है या सरकारी अनदेखी से नुकसान पहुंचाता है।

7. **राहु+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि विपरीत राजयोग के साथ राहु की युति से दुश्मनों की संख्या में वृद्धि करेगा।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में

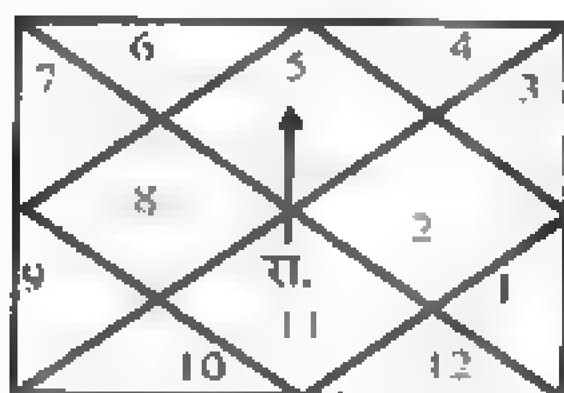

सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्रीविष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। सप्तम भाव में राहु कुंभ स्वगृही मूलत्रिकोण राशि में होगा। जातक को गृहस्थ व स्त्री का सुख कमजोर रहेगा। जातक की पत्नी एवं उसे स्वयं को प्रमेह, मधुमेह, गुप्तेन्द्री में रोग हो सकता है। ऑपरेशन की संभावना रहेगी।

प्रभाव–सप्तमस्थ राहु का प्रभाव लग्न स्थान (सिंह राशि) पर रहेगा। फलतः जातक स्वयं एवं उसकी पत्नी उड़ाऊ स्वभाव की होगी।

निशानी–जातक प्रायः अन्य जाति में विवाह करता है। स्त्रियों के कारण जातक के धन का नाश होगा।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक को अशुभ परिणाम प्राप्त होंगे।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–सप्तमस्थ राहु के साथ लग्नेश की युति जातक को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी।

2. **राहु+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा सप्तम स्थान में राहु के साथ होने से गृहस्थ सुख में बाधक है। जातक की पत्नी सुन्दर होगी पर विचार नहीं मिलेंगे।

3. **राहु+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल के साथ राहु द्विभार्या योग बनाता है।

4. **राहु+बुध**–धनेश, लाभेश बुध के साथ राहु पत्नी को लेकर धन खर्च करायेगा।

5. **राहु+गुरु**–सिंहलग्न के सातवें स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से क्रूर 'चाण्डाल योग' बनेगा। जातक की मृत्यु सर्पदंश से अथवा धीमी गति के जहर के कारण शान्ति पूर्वक होगी। जातक की पत्नी विधवा होगी।

6. **राहु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र के साथ राहु सप्तम स्थान में होने से पत्नी को घमण्डी बनायेगा।

7. **राहु+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि के साथ राहु पत्नी को विधवा बनाता है।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में

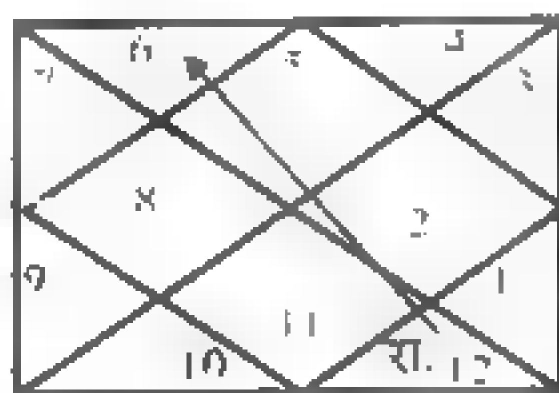

सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्रीविष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां राहु अष्टम स्थान में मीन (सम) राशि में होगा। ऐसे जातक का गृहस्थ सुख कमजोर रहता है। जातक बीमार रहेगा। जातक की आयु कम होगी।

उपाय–नवरत्न जड़ित महामृत्युंजय का लॉकेट पहनें।

प्रभाव–राहु की सप्तम दृष्टि का प्रभाव द्वितीय स्थान (कन्या राशि) पर होने से जातक हकला कर, अटक अटक कर बिना सोचे समझे बोलता है।

निशानी–जातक की स्त्री विधवा होगी।

दशा–राहु की दशा अंतर्दशा में जातक एकान्तवासी होगा एवं जातक की आत्मघाती मनोवृत्ति को बल मिलेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–लग्नेश सूर्य अष्टम स्थान में राहु के साथ होने से अकाल मृत्यु का द्योतक है।

2. **राहु+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा आठवें राहु के साथ शल्य चिकित्सा के दौरान जातक की मृत्यु का द्योतक है।

3. **राहु+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल के साथ राहु भाग्य में रुकावटें लायेगा।

4. **राहु+बुध**–धनेश, लाभेश बुध के साथ राहु धनहीन योग से जातक को दिवालिया बना देगा।

5. **राहु+गुरु**–सिंहलग्न के आठवें स्थान में अष्टमेश गुरु होने से सरल नाम विपरीत राजयोग होगा पर यहां राहु होने से चाण्डाल योग बना। जातक धन-वैभव से परिपूर्ण जीवन जीयेगा। परन्तु अचानक दुर्घटना का भय रहेगा।

6. **राहु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र के साथ राहु होने से जातक मित्रों के षड्यंत्र से फंसेगा।

7. **राहु+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि के साथ राहु हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरी स्त्री से विवाह करायेगा।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में

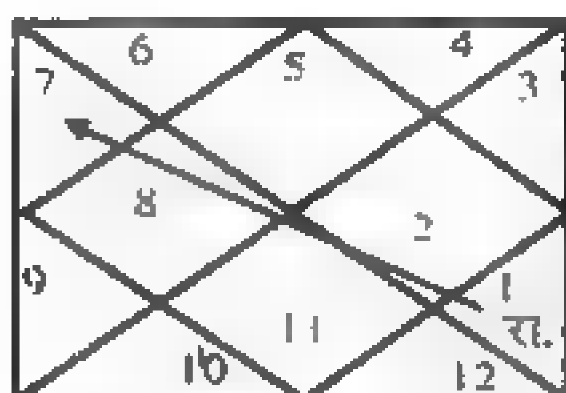

सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्रीविष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां नवम स्थान में राहु मेष (सम) राशि में होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। नवम भाव में मेष के राहु की उपस्थिति पिता के लिए शुभ नहीं है। असावधानी पर जातक शत्रु द्वारा पराजित हो सकता है।

प्रभाव–नवमस्थ राहु की दृष्टि तृतीय स्थान (तुला राशि) पर होने से जातक का सगे भाईयों के साथ मन-मुटाव रहेगा।

निशानी–जातक कूटनीतिज्ञ होता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में पिता की मृत्यु संभव है। जातक परदेश जाएगा। जातक के धन का नाश होगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–लग्नेश सूर्य उच्च के राहु के साथ भाग्य स्थान में होने से जातक का भाग्य प्रबल होगा पर उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।

2. **राहु+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा भाग्य स्थान में राहु के साथ होने से जातक मानसिक रूप से उद्विग्न रहेगा। जातक क्रोधी व चिड़चिड़ा होगा।

3. **राहु+मंगल**–भाग्येश, सुखेश मंगल स्वगृही राहु के साथ होने से जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।

4. **राहु+बुध**–धनेश, लाभेश बुध का भाग्य स्थान में राहु के साथ होना जातक की उन्नति में सहायक है।
5. **राहु+गुरु**–सिंहलग्न में नवम स्थान में अष्टमेश बृहस्पति के साथ राहु होने से चाण्डाल योग बनता है। ऐसा जातक परनिन्दक होता है। जातक धर्म के विपरीत आचरण करता है तथा नास्तिक होता है। जातक परधन हर्ता एव दु:शीला स्त्रियों के साथ रहता है।
6. **राहु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र राहु के साथ होने से जातक के पराक्रम में वृद्धि करायेगा। जातक की पीठ पीछे उसकी निन्दा होगी।
7. **राहु+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि नीच का होकर राहु के साथ होने से जातक को नौकरी में व्यापार में अपने ही विश्वस्त व्यक्ति द्वारा भारी धोखा होगा।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में

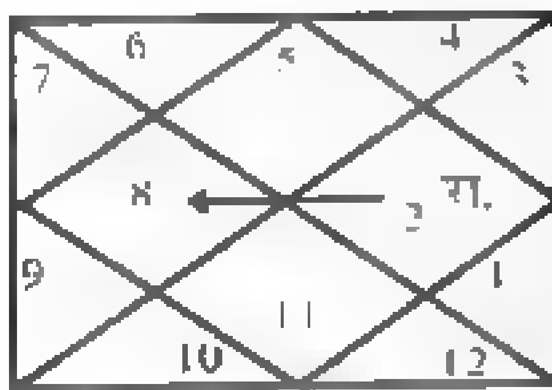

सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की. इससे श्रीविष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां दशम भाव में राहु वृष राशि में उच्च का होगा। दशम स्थान में राहु की यह स्थिति राजयोग कारक है। ऐसा जातक विपरीत परिस्थितियों में भी आगे बढ़ता है। जातक दूसरों के धन पर गिद्ध दृष्टि रखेगा। जातक की अपने पिता के साथ नहीं बनेगी।

प्रभाव–दशमस्थ राहु का प्रभाव चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) पर होगा, फलत: जातक की माता का स्वास्थ्य खराब होगा।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक को नौकरी मिलेगी। (जातक की यात्राएं शुभद रहेंगी)।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–लग्नेश सूर्य दशम भाव में राहु के साथ होने से राज्य पक्ष में गड़बड़ का संकेत देता है।

2. **राहु+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा उच्च का होकर राहु के साथ 'राजयोग' तो देता है पर जातक को राज्य पक्ष के षड्यंत्र का शिकार होना पड़ेगा।
3. **राहु+मंगल**–भाग्येश, सुखेश मंगल राहु के साथ दशम भाव में होने पर जातक को राजा के समान ऐश्वर्यशाली बनायेगा।
4. **राहु+बुध**–धनेश, लाभेश बुध दशम स्थान में राहु के साथ जातक को वाहन सुख देगा साथ में वाहन दुर्घटना भी करायेगा।
5. **राहु+गुरु**–सिंहलग्न के दशम स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से चाण्डाल योग बनता है। ऐसा जातक पिता के सुख से हीन, चुगलखोर एवं कर्महीन होता है।
6. **राहु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र दशम स्थान में स्वगृही होने से 'मालव्य योग' बनायेगा। फलत: जातक राजा के सामन पराक्रमी होगा, पर कभी-कभी बहक जायेगा।
7. **राहु+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि दशम भाव में होने से जातक के लिए राजा के द्वारा, कोर्ट के द्वारा दण्डित होने का योग है।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में

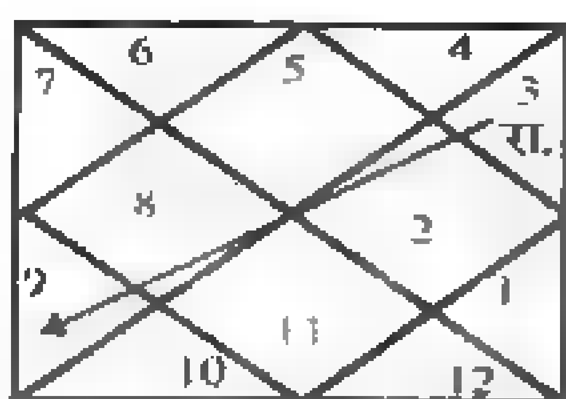

सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्री विष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां एकादश स्थान में राहु मिथुन (उच्च) राशि का होगा। एकादश स्थान में राहु की यह स्थिति राजयोग कारक है। ऐसा जातक विपरीत परिस्थितियों में आगे बढ़ता है। जातक विज्ञान एवं रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा। जातक को भूमि की प्राप्ति होगी।

प्रभाव–एकादश भावगत राहु की दृष्टि पंचम स्थान (धनु राशि) पर होगी फलत: जातक की विद्या में बाधा संभव है।

निशानी–जातक को कान का रोग होगा।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में राज-सरकार से मान-सम्मान या धन मिलेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य–**लग्नेश सूर्य राहु के साथ एकादश स्थान में होने से जातक को उद्योगपति बनायेगा।
2. **राहु+चंद्र–**व्ययेश चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होकर यदि एकादश में हो तो चलती फैक्ट्री बन्द होगी।
3. **राहु+मंगल–**सुखेश, भाग्येश, मंगल एकादश स्थान में होने से जातक को धनी बनायेगा।
4. **राहु+बुध–**धनेश बुध एकादश में स्वगृही होकर राहु के साथ होने से जातक उद्योग-फैक्ट्री का स्वामी होगा।
5. **राहु+गुरु–**सिंहलग्न के एकादश स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से 'चाण्डाल योग' बनता है। ऐसा जातक बचपन से दुःखी, धनहीन एवं कपट आचरण करने में माहिर होता है। जातक जैसा दिखता है, वैसा नहीं होता।
6. **राहु+शुक्र–**तृतीयेश, दशमेश, शुक्र एकादश स्थान में राहु के साथ होने से पराक्रम से धन कमाने का योग बनाता है।
7. **राहु+शनि–**षष्टेश, सप्तमेश शनि राहु के साथ चलते व्यापार एवं कार्य में शत्रु के द्वारा रुकावट पैदा करता है।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में

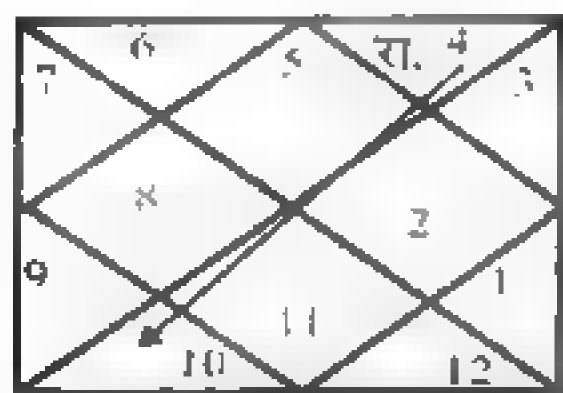

सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्री विष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां द्वादश स्थान में राहु कर्क (शत्रु) राशि में होगा। द्वादश स्थान में राहु व्यर्थ की यात्राओं से नुकसान कराता है। जातक अनेक प्रयत्न करने पर भी धन संग्रह नहीं कर पाता।

प्रभाव–द्वादश भावगत राहु का प्रभाव छठे स्थान (मकर राशि) पर होने से जातक निराशावादी होगा। जातक को खराब सपने आयेंगे।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक को नुकसान, मानसिक कष्ट तथा धन हानि होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–लग्नेश सूर्य द्वादश स्थान में राहु के साथ होने से जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
2. **राहु+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा व्यय भाव में धन खर्च करायेगा। यात्रा से ज्यादा रुपया खर्च होगा।
3. **राहु+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल बारहवें राहु के साथ होने से विदेश यात्रा करायेगा।
4. **राहु+बुध**–धनेश, लाभेश बुध राहु के साथ होने से धन हानि करायेगा। जातक के दिवालिया होने का योग है।
5. **राहु+गुरु**–सिंहलग्न के द्वादश स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक गलत कार्य में रुपया खर्च करता है। जातक अल्पायु होता है तथा पाप कर्मों में निमग्न रहता है।
6. **राहु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र राहु के साथ व्यय भाव में होने से जातक सेक्स के कारण, नशे के कारण फंसेगा।
7. **राहु+शनि**–षष्टेश शनि राहु के साथ होने से गृहस्थ सुख में बाधा होगी। जातक जेल भी जा सकता है।

❑❑❑

सिंहलग्न में केतु की स्थिति

सिंहलग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में

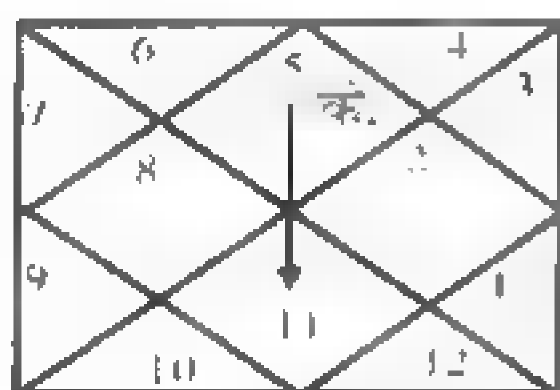

सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहां प्रथम स्थान में केतु सिंह (शत्रु) राशि में होगा। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होगा। केतु यहां शुभ ग्रहों से युत हो तो शुभ फल देगा। अशुभ ग्रहों से युत हो तो अशुभ फल देगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को कीर्ति देगा।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ व्ययेश चंद्रमा जातक को मानसिक परेशानी देगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ भाग्येश, सुखेश मंगल होने से भाग्य बलवान होगा।
4. **केतु+बुध**–धनेश, लाभेश बुध लग्न में केतु के साथ होने से जातक पुरुषार्थ में विश्वास रखेगा एवं पुरुषार्थ से धन कमायेगा।
5. **केतु+गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु लग्न में संतति द्वारा धनार्जन का संकेत देता है।
6. **केतु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र लग्न में केतु के साथ पराक्रम बढ़ायेगा।
7. **केतु+शनि**–षष्ठेश, सप्तमेश शनि लग्न में केतु के साथ दुर्घटना योग कराता है।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में

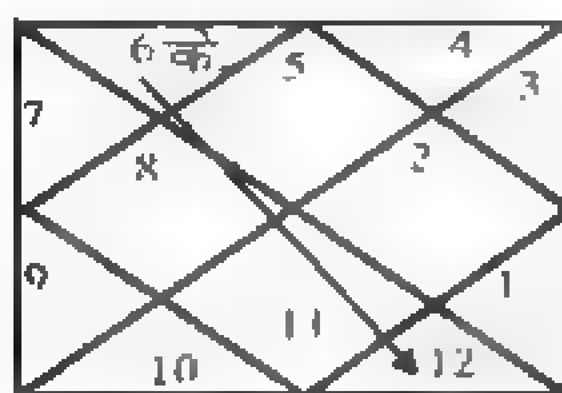

सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहां द्वितीय स्थान में केतु कन्या (नीच) राशि में होगा। कुटुम्बियों का सहयोग मिलेगा। धन शुभ कार्यों में खर्च होगा। केतु के साथ यदि पापग्रह हो तो जातक दु:खी होगा। व्यर्थ के कार्यों में धन खर्च होगा। जातक का विवाह विलम्ब से होगा।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में शुभ फल मिलेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—सूर्य द्वितीय में, धन स्थान में केतु साथ धन हानि का संकेत देता है।
2. **केतु+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा धन स्थान में केतु के साथ धन संग्रह में बाधक है।
3. **केतु+मंगल**—भाग्येश, सुखेश मंगल धन स्थान में केतु के साथ, जातक को स्थाई सम्पत्ति का स्वामी बनायेगा।
4. **केतु+बुध**—धनेश, लाभेश बुध बलवान होकर केतु के साथ होने से जातक धनी होगा।
5. **केतु+गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु धन स्थान में केतु के साथ होने से धन हानि होगी।
6. **केतु+शुक्र**—तृतीयेश व दशमेश शुक्र केतु के साथ धन हानि करायेगा।
7. **केतु+शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि केतु के साथ वाणी में दोष, हकलाहट लायेगा।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में

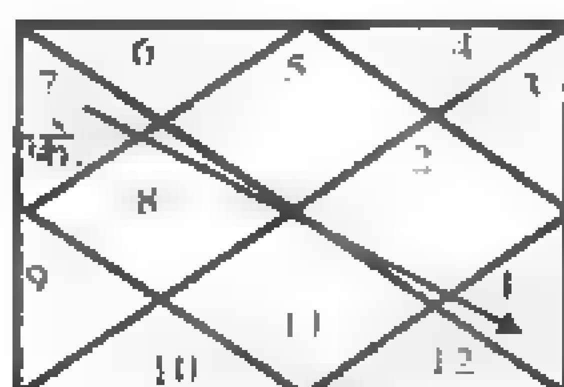

सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहां तृतीय स्थान में केतु तुला (मित्र) राशि में होगा। भाइयों की मदद मिलेगी। छोटे भाई को कष्ट होगा। केतु के साथ पाप ग्रह हो तो भाईयों से विवाद होगा।

दशा– केतु की दशा-अंतर्दशा में यश की प्राप्ति होगी। पराक्रम बढ़ेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–सूर्य लग्नेश होकर नीच का तृतीय स्थान में केतु के साथ पराक्रम भंग कराता है।
2. **केतु+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा केतु के साथ तृतीय में परिजनों से मनमुटाव कराता है।
3. **केतु+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल तृतीय स्थान में केतु के साथ भाइयों से, मित्रों से धन लाभ कराता है।
4. **केतु+बुध**–धनेश, लाभेश बुध तृतीय स्थान में मित्रों से धन कराता है।
5. **केतु+गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु तृतीय में भाईयों से नुकसान कराता है। दुर्घटना का भय रहता है।
6. **केतु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश स्वगृही शुक्र के साथ केतु मित्रों से संपर्क कराता है।
7. **केतु+शनि**–षष्टेश व सप्तमेश शनि के साथ केतु मित्रों या पत्नी से धोखा दिलवाता है।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

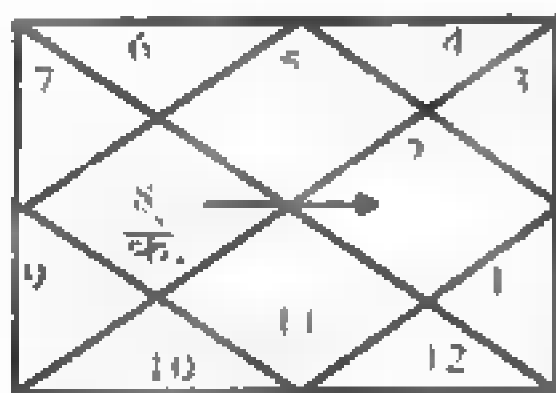

सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहां चतुर्थ स्थान में केतु वृश्चिक (उच्च) राशि का होगा। परिवार-कुटुम्ब का सुख होगा। भौतिक सुखों उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। केतु के साथ पापग्रह हो तो सुख में कमी आयेगी। माता की मृत्यु बचपन में संभव।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में भौतिक सुखों में वृद्धि होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–लग्नेश सूर्य चतुर्थ में केतु के साथ माता के लिए कष्टकारक है।
2. **केतु+चंद्र**–व्ययेश नीच का होकर चतुर्थ स्थान केतु के साथ माता को लम्बी बीमारी देता है।

3. **केतु+मंगल**–सुखेश भाग्येश मंगल स्वगृही केतु के साथ होने से 'रुचक योग' बनेगा। जातक राजा के समान वैभवशाली एवं पराक्रमी होगा।

4. **केतु+बुध**–तृतीयेश, लाभेश बुध केतु के साथ होने से जातक सुख-सुविधा वैभव से सम्पन्न होगा।

5. **केतु+गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु के साथ केतु चतुर्थ भाव में होने से वाहन दुर्घटना का भय है। जातक की टांग टूटेगी।

6. **केतु+शुक्र**–तृतीयेश दशमेश शुक्र केतु के साथ चतुर्थ स्थान में शुभ है।

7. **केतु+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि चतुर्थ स्थान में केतु के साथ अशुभ है। जाक के माता की मृत्यु होगी।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में

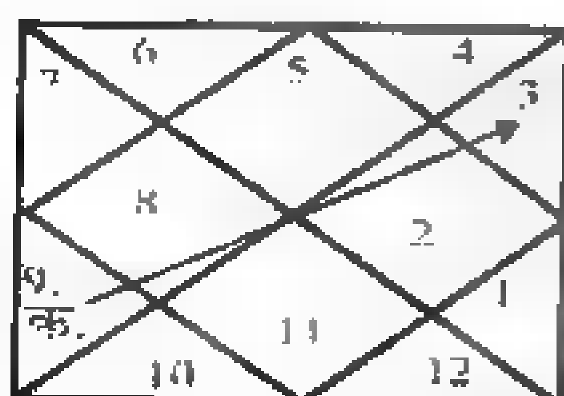

सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहां पंचम स्थान में केतु धनु (उच्च) राशि में होगा। जातक धर्मशास्त्र का ज्ञाता एवं विद्वान् होगा। संतान सुख उत्तम। केतु पापग्रहों के साथ हो विद्या एवं संतान सुख में बाधा आयेगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में शुभफल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–लग्नेश सूर्य पंचम स्थान में केतु के साथ गर्भपात एवं गर्भस्राव कराता है। जातक रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा।

2. **केतु+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा पंचम में केतु के साथ कन्या संतति की अकाल मृत्यु का संकेत देता है।

3. **केतु+मंगल**–भाग्येश, सुखेश मंगल पंचम स्थान में पुत्र संतति की बाहुल्यता देगा।

4. **केतु+बुध**–धनेश, लाभेश बुध पंचम स्थान में कन्या संतति की बाहुल्यता देगा।

5. **केतु+गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश, गुरु केतु के साथ आठवें संतान की अकाल मृत्यु कराता है।

6. **केतु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र पंचम स्थान में केतु के साथ कन्या संतति की बाहुल्यता देता है।

7. **केतु+शनि**—षष्टेश व सप्तमेश शनि केतु के साथ आपरेशन में संतति की मृत्यु का संकेत है।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति षष्टम् स्थान में

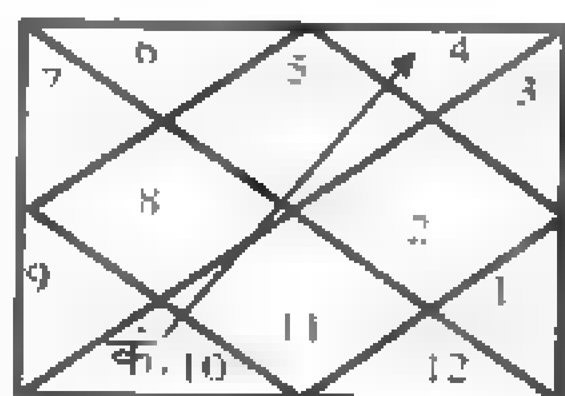

सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहां छठे स्थान में केतु मकर (मूल त्रिकोण) राशि में होगा। जातक का स्वास्थ्य ठीक रहेगा। जातक के शत्रु भी जातक से मित्रता का व्यवहार करेंगे। केतु के साथ अन्य पापग्रह हो तो रोग व शत्रु का भय रहेगा।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलदायक रहेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—लग्नेश सूर्य छठे स्थान में केतु के साथ परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा।
2. **केतु+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा छठे विपरीत राजयोग कराता है। जातक सम्पन्न व धनी होगा परन्तु गुप्त शत्रु बहुत रहेंगे।
3. **केतु+मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल छठे स्थान में विपरीत राजयोग करायेगा पर जातक की भूमि विवादास्पद रहेगी।
4. **केतु+बुध**—धनेश, लाभेश बुध छठे स्थान में केतु के साथ धनहीन योग बनायेगा। जातक को धन की कमी सताती रहेगी।
5. **केतु+गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु छठे स्थान में विपरीत राजयोग बनायेगा। परन्तु गुप्त शत्रु नुकसान पहुंचायेगा।
6. **केतु+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र छठे केतु के साथ होने से पराक्रम भंग होगा। मानहानि होगी।
7. **केतु+शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि केतु के साथ विपरीत राजयोग करायेगा। जातक सम्पन्न तो होगा, पर गृहस्थ सुख कमजोर होगा।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति सप्तम स्थान में

सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है,

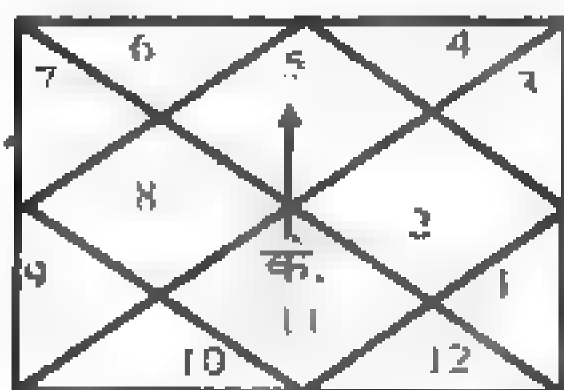

असंतुष्ट रहता है। यहां सप्तम स्थान में केतु कुम्भ (मित्र) राशि में होगा। जातक की पत्नी सुंदर व सभ्य होगी। गृहस्थ जीवन सामान्य व सुखद होगा। यदि केतु के साथ अन्य पापग्रह है तो जीवन साथी के साथ तलाक होगा।

निशानी–जातक अपनी पसंद का विवाह करेगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलदायक रहेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–सप्तम भाव में सूर्य शत्रु क्षेत्री होकर केतु के साथ विवाह सुख में बाधक है।
2. **केतु+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा सातवें केतु के साथ पत्नी सुंदर देगा पर पत्नी झगड़ालू होगी।
3. **केतु+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल सातवें केतु के साथ विवाह बाद भाग्योदय करायेगा। पर खटपट रहेगी।
4. **केतु+बुध**–धनेश, लाभेश बुध सातवें ससुराल में धन दिलायेगा। पर खटपट रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु सातवें और केतु सातवें होने से संतान प्राप्ति के बाद उन्नति होगी।
6. **केतु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र सातवें केतु के साथ होने से ससुराल पराक्रमी होगा।
7. **केतु+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि सातवें केतु के साथ होने से जीवनसाथी से तलाक होगा।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में

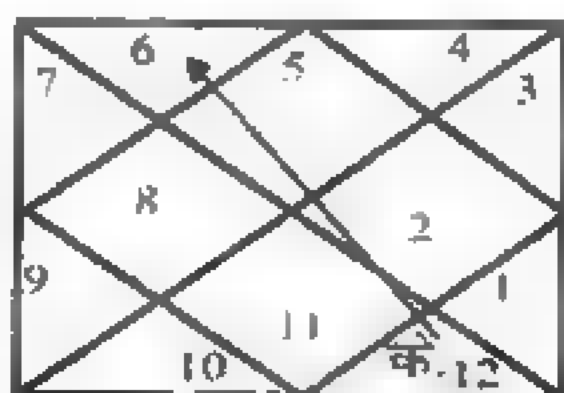

सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहां अष्टम स्थान में केतु मीन में स्वगृही होगा। यह केतु अचानक कार्य सिद्धि कराता है। यदि अन्य पापग्रह साथ है तो अचानक दुर्घटना से मृत्यु संभव है। आपरेशन के प्रति सावधान रहना जरूरी है।

दशा—केतु की दशा अंतर्दशा में थोड़ी चिंता के साथ सफलता देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—लग्नेश सूर्य आठवें केतु के साथ होने से परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
2. **केतु+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा आठवें विपरीत राजयोग बना रहा है। केतु के साथ यह शल्य चिकित्सा से घात कराता है। जल भय भी है।
3. **केतु+मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल आठवें केतु के साथ होने से जातक के दो विवाह होंगे।
4. **केतु+बुध**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र आठवें केतु के साथ विवाह सुख में न्यूनता लाता है।
5. **केतु+गुरु**—पंचमेश व अष्टमेश गुरु आठवें होने से 'विपरीत राजयोग' बनता है। दो विवाह का योग बनता है।
6. **केतु+शुक्र**—तृतीयेश, दसमेश शुक्र आठवें होने से पराक्रम भंग योग बनता है।
7. **केतु+शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि आठवें दो विवाह का योग बनाता है।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति नवम स्थान में

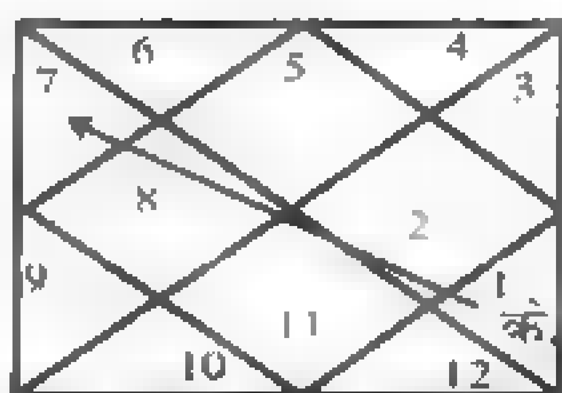

सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहां नवम स्थान में केतु मेष (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को जीवन में पिता एवं गुरु का आशीर्वाद मिलता रहेगा। यदि अन्य पापग्रह साथ हो तो भाग्योदय में बाधा आयेगी। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा मे भाग्योदय कारक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—लग्नेश सूर्य उच्च का केतु के साथ सरकारी क्षेत्र में कीर्ति मिलेगी।
2. **केतु+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा भाग्यस्थान के केतु के साथ होने से भाग्य में उतार-चढ़ाव होगा।
3. **केतु+मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल केतु के साथ होने से भाग्य 28 वर्ष बाद चमकेगा।

4. **केतु+बुध**—धनेश, लाभेश बुध नवम भाव में केतु के साथ होने से पिता की सम्पत्ति मिलेगी पर विवाद रहेगा।
5. **केतु+गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु भाग्य में पुत्र संतति के बाद भाग्योदय होगा।
6. **केतु+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश
7. **केतु+शनि**—षष्ठेश, सप्तेश शनि नीच का होकर नवम स्थान में केतु के साथ होने से

सिंहलग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में

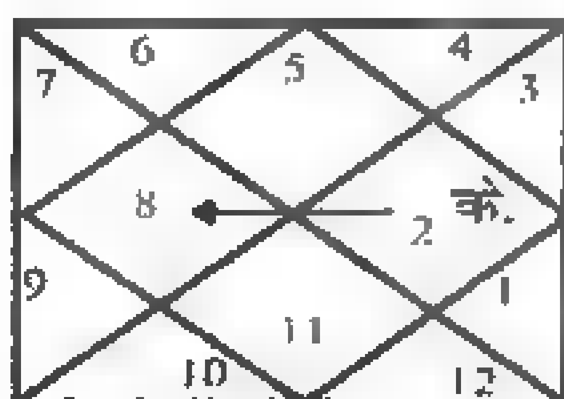

सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहां दशम स्थान में केतु वृष (नीच) राशि का होगा। जातक सिद्धांतवादी होगा। न्यायप्रिय होगा। जातक को धंधे, व्यापार-व्यवसाय में यश-कीर्ति मिलेगा। यदि पापग्रह साथ में हो तो व्यापार में धन हानि होगी। भारी धोखा होगा।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में रोजगार मिलेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—लग्नेश सूर्य दशम भाव में केतु के साथ होने से राज्यपक्ष से लाभ रहेगा।
2. **केतु+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा दशम भाव में उच्च का होकर केतु के साथ होने से 'यामिनीनाथ योग' बनेगा। जातक ऐश्वर्यशाली होगा।
3. **केतु+मंगल**—सुखेश-भाग्येश मंगल दशम स्थान में केतु के साथ होने से जातक प्रबल पराक्रमी एवं प्रतापी होगा।
4. **केतु+बुध**—धनेश, लाभेश बुध दशम भाव में केतु के साथ होने से जातक कुशल व्यापारी का प्रबंधक होगा।
5. **केतु+गुरु**—पंचमेश अष्टमेश गुरु दशम स्थान में केतु के साथ होने से जातक पराक्रमी होगा। पुत्र जन्म के बाद जातक की उन्नति होगी।
6. **केतु+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र स्थान में केतु के साथ होने से 'मालव्य योग' बनेगा। जातक राजा या राजा से कम नहीं होगा।

7. **केतु+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि दशम में होने से राज सरकार से कष्ट पहुंचेगा।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में

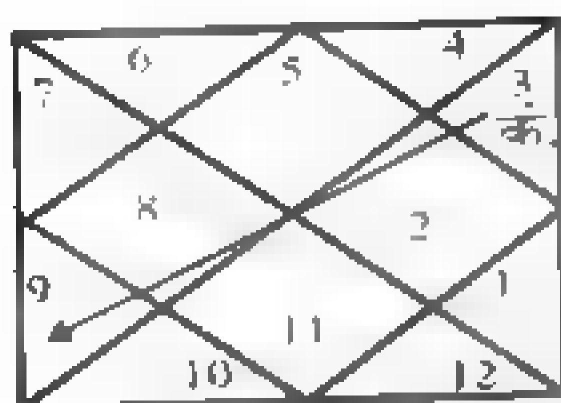

सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहां एकादश स्थान में केतु मिथुन (नीच) राशि में होगा। जातक के मित्र उत्तम होंगे। जातक को व्यापार में लाभ होगा। यदि केतु के साथ अन्य पापग्रह हो तो जातक को वैराग्य एवं निराशा घेर लेगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–लग्नेश सूर्य एकादश स्थान में केतु के साथ व्यापार से लाभ करायेगा।
2. **केतु+चंद्र**–व्ययेश, चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होकर एकादश स्थान में केतु के साथ व्यापार से भारी नुकसान करायेगा।
3. **केतु+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल एकादश स्थान में केतु के साथ होने से जातक को उद्योगपति बनायेगा।
4. **केतु+बुध**–धनेश बुध एकादश में स्वगृही होकर केतु के साथ होने से जातक धनी व्यक्ति होगा।
5. **केतु+गुरु**–पंचमेश अष्टमेश गुरु एकादश स्थान में चलते व्यापार को नष्ट करेगा। जातक की उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।
6. **केतु+शुक्र**–तृतीयेश, दसमेश शुक्र एकादश स्थान में केतु के साथ जातक को व्यापार से धन दिलायेगा।
7. **केतु+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि एकादश स्थान में केतु के साथ व्यापार में अचानक नौकर द्वारा धोखा दिलायेगा।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति द्वादश स्थान में

सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहां द्वादश स्थान में केतु कर्क (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक

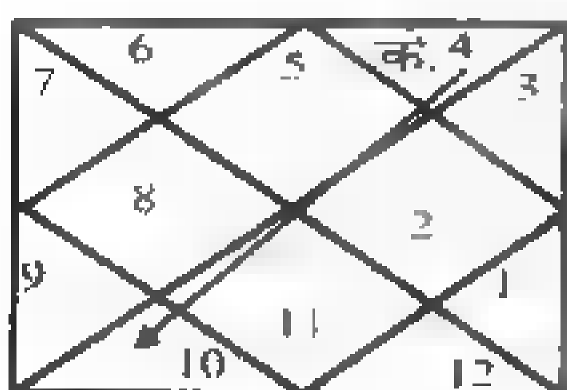

के पास धन का संग्रह बड़ी कठिनता से रहेगा। खर्च बढ़-चढ़कर होगा। जातक देश-परदेश की यात्राएं बहुत करेगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में विदेश गमन होगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–लग्नेश सूर्य बारहवें केतु के साथ नेत्र विकार देगा। बाईं आंख का ऑपरेशन होगा।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ स्वगृही चंद्रमा विपरीत राजयोग के कारण जातक को विदेश में धन दिलायेगा।
3. **केतु+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल बारहवें केतु के साथ होने से द्विविवाह का योग बनता है।
4. **केतु+बुध**–धनेश, लग्नेश बुध बारहवें स्थान में केतु के साथ जातक को दिवालिया बना देगा।
5. **केतु+गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु केतु के साथ उच्च का होकर जातक को व्यर्थ का भटकायेगा। अनुष्ठान सफल नहीं होंगे।
6. **केतु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र केतु के साथ बारहवें नेत्र पीड़ा, सेक्स रोग देगा।
7. **केतु+शनि**–षष्टेश और सप्तमेश शनि बारहवें केतु के साथ होने से 'द्विभार्या योग' करायेगा।

❑❑❑

अथ सूर्य मंत्र

विनियोग—ॐ आकृष्णेति मंत्रस्य हिरण्यस्तूपांगिरस ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द: सूर्यो देवता सूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।

(नीचे कोष्ठक में लिखे गये अंशों को हाथ की पांचों उंगलियों से छूते रहे।)

आह्वान—

उदयं तं महातेज तेजस्वी अभयप्रदं
दुर्निरक्षसुगमनं सूर्यमावहयाम्यहम्।।1।।
भो भो सूर्यगृहाध्यक्ष कलिंगविषयोद्भव:
रक्त काश्यप गोत्रेय द्विभुज-पद्मलोचन: ।।2।।
सप्ताश्ववाहनागच्छ पद्ममध्येवरप्रद:
अग्निदूतेति मंत्रेण रुद्रोरूपोप्रतिष्ठित ।।3।।
ॐ अग्निदूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे
देवां 2 आसादयादिह ।।22/17।।

देहांगन्यास—आकृष्णेन शिरसि (सिर)। रजसा ललाटे (माथा)। वर्तमानो मुखे (मुंह)। निवेशयन् हृदय (हृदय)। अमृत नाभौ (नाभि) मर्त्य च कट्याम् (कमर)। हिरण्ययेन सविता ऊर्व्वो: (छाती)। रथेना जान्वो: (घुटना)। देवो याति जंघयो: (जांघ)। भुवनानि पश्यन् पादयो: (पैर)।

अथ करन्यास—आकृष्णेन रजसा अंगुष्ठाभ्यां नम:। वर्तमानो निवेशयन् तर्जनीभ्यां नम:। अमृत मर्त्य च मध्यमाभ्यां नम:। हिरण्ययेन अनामिकाभ्यां नम:। सविता रथेना कनिष्ठिकाभ्यां नम:। देवो याति भुवनानि पश्यन् करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

अथ हृदयादिन्यास—आकृष्णेन रजसा हृदयाय नम: (हृदय)। वर्तमानो निवेशयन् शिरसे स्वाहा (सिर)। अमृतं मर्त्य च शिखायै वषट् (शिखा)। हिरण्येन कवचाय हुं। (दोनों कंधों।) सविता रथेना नेत्रत्रयाय वौषट् (दोनों नेत्र)। देवो याति भुवनानि पश्यन्

अस्त्राय फट् (दाएं हाथ को सिर से ऊपर घुमाकर दाएं हाथ की पहली दोनों उंगलियों से बाएं हाथ पर ताली बजायें।)

अथ ध्यानम्–पद् मासनः पद् मकरो द्विबाहुः पद् मद्युतिः सप्ततुरंगवाहनः।
दिवाकरो लोकगुरु किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः।।

सूर्य गायत्री–ॐ आदित्याय विद्‌महे दिवाकराय धीमहि तन्नः सूर्य प्रचोदयात्।

सूर्य बीज मंत्र–ॐ ह्रा ह्रीं ह्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः–ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः ह्रौं ह्रीं ह्रां ॐ सूर्याय नमः।

जपमंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (नित्य जप 7000 प्रतिदिन)।

सूर्याष्टक स्तोत्रम्

पदच्छेद एवं संधिच्छेद सहित

आदिदेवः, नमस्तुभ्यम्, प्रसीद, मम भास्कर।
दिवाकर, नमस्तुभ्यम्, प्रभाकर नमो, अस्तु, ते।।
सप्त, अश्वरथम्, आरूढम्, प्रचंडम्, कश्यप, आत्मजम्।
श्वेतम्, पद्मधरम्, देवम्, तम्, सूर्यम्, प्रणमामि, अहम्।।
लोहितम्, रथम्, आरूढम्, सर्वलोकम्, पितामहम्।
महा, पापहरम्, देवम्, तम्, सूर्यम्, प्रणमामि, अहम्।।
त्रैगुण्यम्, च महाशूरम्, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरम्।
महा, पापहरम्, देवम्, तम्, सूर्यम्, प्रणमामि अहम्।।
बृंहितम्, तेजः, पुंजम्, च, वायुम्, आकाशम्, एव, च।
प्रभुम्, च, सर्वलोकानाम्, तम्, सूर्यम्, प्रणमामि, अहम्।
बन्धूक, पुष्प, संकाशम्, हार, कुण्डल, भूषितम्।
एक-चक्र-धरम्, देवम्, तम्, सूर्यम्, प्रणमामि, अहम्।।
तम्, सूर्यम्, जगत् कर्तारम्, महा-तेजः, प्रदीपनम्।
महापाप-हरम्, देवम्, तम्, सूर्यम्, प्रणमामि, अहम्।।
सूर्य-अष्टकम्, पठेत्, नित्यम्, ग्रह-पीड़ा, प्रणाशनम्।
अपुत्रः, लभते, पुत्रम्, दरिद्रः, धनवान्, भवेत्।।

आमिषम् मधुपानम् च यः करोति रवेः दिने।
सप्त जन्म भवेत् रोगी प्रतिजन्म दरिद्रता।।
स्त्री तैल मधु मांसानि यः त्यजेत् तु रवेर् दिने।
न व्याधिः शोक दारिद्रयम् सूर्यलोकम् च गच्छति।

नोट–सूर्याष्टक सिद्ध स्तोत है। प्रातः स्नानोपरान्त तांबे के पात्र से सूर्य को अर्घ्य देना चाहिए, तदुपरान्त सूर्य के सामने खड़े होकर सूर्य को देखते हुए 108 पाठ नित्य करने चाहिए। नित्य पाठ करने से मान-सम्मान, नेत्र की ज्योति जीवन पर्यन्त बनी रहेगी।

आदित्यहृदयस्तोत्रम्

विनियोग–ॐ अस्य आदित्यहृदयस्तोत्रस्यागस्त्यऋषिरनुष्टुप् छन्दः, आदित्यहृदयभूतो भगवान् ब्रह्मा देवता निरस्ताशेषविघ्नतया ब्रह्मविद्यासिद्धौ सर्वत्र जयसिद्धौ च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास–ॐ अगस्त्यऋषये नमः, शिरसि। अनुष्टुपछन्दसे नमः, मुखे। आदित्य-हृदयभूत ब्रह्मदेवतायै नमः, हृदि। ॐ बीजाय नमः, गुह्ये। रश्मिमते शक्तये नमः, पादयोः। ॐ तत्सवितुरित्यादिगायत्रीकीलकाय नमः, नाभौ।

करन्यास–इस स्तोत्र के अङ्गन्यास और करन्यास तीन प्रकार से किये जाते हैं। केवल प्रणव से, गायत्री मंत्र से अथवा 'रश्मिमते नमः' इत्यादि छः नाम-मंत्रों से यहां नाम-मंत्रों से किये जाने वाले न्यास का प्रकार बताया जाता है–

ॐरश्मिमते अङ्गुष्ठाभ्या नमः। ॐ समुद्यते तर्जनीभ्यां नमः। ॐ देवासुरनमस्कृताय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ विवस्वते अनामिकाभ्यां नमः। ॐ भास्कराय कनिष्ठिकाभ्या नमः। ॐ भुवनेश्वराय करतलकरपृष्ठाभ्या नमः।

हृदयादि अङ्गन्यास–ॐ रश्मिमते हृदयाय नमः। ॐ समुद्यते शिरसे स्वाहा। ॐ देवासुरनमस्कृताय शिखायै वषट्। ॐ विवस्वते कवचाय हुम्। ॐ भास्कराय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ भुवनेश्वराय अस्त्राय फट्। इस प्रकार न्यास करके निम्नांकित मंत्र से भगवान सूर्य का ध्यान एव नमस्कार करना चाहिए–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। तत्पश्चात् 'आदित्यहृदय' स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्।।1।।
दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्।
उपागम्याब्रवीद् राममगस्त्यो भगवांस्तदा।।2।।

'उधर श्री रामचंद्र जी युद्ध मे थककर चिंता करते हुए रणभूमि में खड़े थे। इतने में रावण भी युद्ध के लिये उनके सामने उपस्थित हो गया। यह देखकर भगवान अगस्त्य मुनि, जो देवताओं के साथ युद्ध देखने के लिये आये थे, श्री राम के पास जाकर बोले' ।।1-2।।

राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे।।3।।
आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम्।।4।।
सर्वमंगलमागल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ।।5।।

'सबके हृदय में रमण करने वाले महाबाहो राम! यह सनातन गोपनीय स्तोत्र सुनो। वत्स! इसके जप से तुम युद्ध में अपने समस्त शत्रुओं पर विजय पा जाओगे। इस गोपनीय स्तोत्र का नाम है आदित्यहृदय। यह परम पवित्र एवं सम्पूर्ण शत्रुओं का नाश करने वाला है। इसके जाप से सदा विजय की प्राप्ति होती है। यह नित्य अक्षय और परम कल्याणमय स्तोत्र है। सम्पूर्ण मंगलों का भी मंगल है। इससे सब पापों का नाश हो जाता है। यह चिंता और शोक को मिटाने तथा आयु को बढ़ाने वाला उत्तम साधन है'।।3-5।।

रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्।।6।।
सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवासुरगणांल्लोकान् पाति गभस्तिभिः।।7।।
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः।।8।।
पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः।
वायुर्वह्निः प्रजाः [redacted] ऋतुकर्ता प्रभाकरः।।9।।
आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः।।10।।
हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान्।।11।।

हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्र शङ्खः शिशिरनाशनः॥12॥
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगमः॥13॥
आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः॥14॥
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते॥15॥

भगवान् सूर्य अपनी अनंत किरणों से सुशोभित (प्रकाशित) हैं। ये नित्य उदय होने वाले (समुद्यन) देवता और असुरों से नमस्कृत, विवस्वान नाम से प्रसिद्ध, प्रभा का विस्तार करने वाले भास्कर और संसार के स्वामी (भुवनेश्वर) हैं।

तुम इनका (रश्मिमते नमः, समुद्यते नमः देवासुरनमस्कृताय नमः, विवस्वते नमः, भास्कराय नमः, भुवनेश्वराय नमः- इन नाम-मंत्रों के द्वारा) पूजन करो। सम्पूर्ण देवता इन्हीं के स्वरूप हैं। ये तेज की राशि तथा अपनी किरणों से जगत् को सत्ता एवं स्फूर्ति प्रदान करने वाले हैं। ये ही अपनी रश्मियों का प्रसार करके देवता और असुरों सहित सम्पूर्ण लोकों का पालन करते हैं। ये ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव, स्कन्द, प्रजापति, इन्द्र, कुबेर, काल, यम, चंद्रमा, वरुण, पितर, वसु, साध्य, अश्विनीकुमार, मरुद्गण, मनु, वायु, अग्नि, प्रजा, प्राण, ऋतुओं को प्रकट करने वाले तथा प्रभा के पुत्र हैं। इन्हीं के नाम आदित्य (अदितिपुत्र), सविता (जगत् को उत्पन्न करने वाले), सूर्य (सर्वव्यापक), खग (आकाश में विचरनेवाले), पूषा (पोषण करने वाले), गभस्तिमान् (प्रकाशमान), सुवर्णसदृश, भानु (प्रकाशक), हिरण्यरेता (ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के बीज), दिवाकर (रात्रि का अंधकार दूर करके दिन का प्रकाश फैलानेवाले), हरिदश्व (दिशाओं में व्यापक अथवा हरे रंग के घोड़े वाले), सहस्रार्चि (हजारों किरणों से सुशोभित), सप्तसप्ति (सात घोड़ों वाले), मरीचिमान् (किरणों से सुशोभित), तिमिरोन्मथन (अंधकार का नाश करनेवाले), शम्भु (कल्याण के उद्गम स्थान), त्वष्टा (भक्तों का दुःख दूर करने अथवा जगत् का संहार करने वाले) मार्तण्डक (ब्रह्माण्ड को जीवन प्रदान करने वाले), अंशुमान् (किरण धारण करने वाले), हिरण्यगर्भ (ब्रह्मा), शिशिर (स्वभाव से ही सुख देने वाले), तपन (गर्मी पैदा करने वाले), अहस्कर (दिनकर), रवि (सबकी स्तुति के पात्र), अग्निगर्भ (अग्नि को गर्भ में धारण करने वाले), अदितिपुत्र, शंख (आनन्दस्वरूप एवं व्यापक), शिशिरनाशक (शीत का नाश करने वाले), व्योमनाथ (आकाश के

स्वामी), तमोभेदी (अंधकार को नष्ट करने वाले), ऋग्, यजु: और सामवेद के पारगामी, घनवृष्टि (घनी वृष्टि के कारण), अपां मित्र (जल को उत्पन्न करने वाले), विन्ध्यवीथीप्लवङ्गम (आकाश में तीव्र वेग से चलनेवाले), आतपी (घाम उत्पन्न करने वाले), मण्डली (किरण-समूह को धारण करने वाले), मृत्यु (मौत के कारण), पिङ्गल (भूरे रंग वाले), सर्वतापन (सबको ताप देने वाले), कवि (त्रिकालदर्शी), विश्व (सर्वस्वरूप), महातेजस्वी, रक्त (लाल रंग वाले), सर्वभवोद्भव (सबकी उत्पत्ति के कारण), नक्षत्र, ग्रह और तारों के स्वामी, विश्वभावन (जगत् की रक्षा करनेवाले), तेजस्वियों में भी अति तेजस्वी तथा द्वादशात्मक (बारह स्वरूपों में अभिव्यक्त) हैं। (इन सभी नामों से प्रसिद्ध सूर्यदेव!) आपको नमस्कार है'॥6-15॥

नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः॥16॥
जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः॥17॥
नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तुते॥18॥
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः॥19॥
तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः॥20॥
तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे॥21॥

'पूर्वगिरि- उदयाचल तथा पश्चिमगिरि-अस्ताचल के रूप में आपको नमस्कार है। ज्योतिर्गणों (ग्रहों और तारों) के स्वामी तथा दिन के अधिपति आपको प्रणाम है। आप जय स्वरूप तथा विजय और कल्याण के दाता हैं। आपके रथ में हरे रंग के घोड़े जुते रहते हैं। आपको बारंबार नमस्कार है। सहस्रों किरणों से सुशोभित भगवान् सूर्य! आपको बारंबार प्रणाम है। आप अदिति के पुत्र होने के कारण आदित्यनाम से प्रसिद्ध हैं, आपको नमस्कार है। उग्र (अभक्तों के लिये भयंकर), वीर (शक्ति-सम्पन्न) और सारङ्ग (शीघ्रगामी) सूर्यदेव को नमस्कार है। कमलों को विकसित करने वाले प्रचण्ड तेजधारी मार्तण्ड को प्रणाम है। (परात्पर रूप में) आप ब्रह्मा, शिव और विष्णु के भी स्वामी हैं। सूर आपकी संज्ञा है, यह सूर्यमण्डल आपका

ही तेज हैं, आप प्रकाश से परिपूर्ण हैं, सबको स्वाहा कर देने वाला अग्नि आपका ही स्वरूप है, आप रौद्ररूप धारण करने वाले हैं, आपको नमस्कार है। आप अज्ञान और अंधकार के नाशक, जड़ता एवं शीत के निवारक तथा शत्रु का नाश करने वाले हैं, आपका स्वरूप अप्रमेय है। आप कृतघ्नों का नाश करने वाले, सम्पूर्ण ज्योतियों के स्वामी और देवस्वरूप हैं; आपको नमस्कार है। आपकी प्रभा तपाये हुए सुवर्ण के समान है, आप हरि (अज्ञान का हरण करने वाले) और विश्वकर्मा (संसार की सृष्टि करने वाले) हैं; तम के नाशक, प्रकाशस्वरूप और जगत् के साक्षी हैं; आपको नमस्कार है।' ॥16-21॥

नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः॥22॥
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः।
एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्॥23॥
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः॥24॥
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव॥25॥
पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्।
एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यति॥26॥
अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि।
एवमुक्त्वा तदाऽगस्त्यो जगाम स यथागतम्॥27॥

'रघुनन्दन! ये भगवान् सूर्य ही सम्पूर्ण भूतों का संहार, सृष्टि और पालन करते हैं। ये ही अपनी किरणों से गर्मी पहुँचाते और वर्षा करते हैं। ये सब भूतों में अंतर्यामी रूप से स्थित होकर उनके सो जाने पर भी जागते रहते हैं। ये ही अग्निहोत्र तथा अग्निहोत्री पुरुषों को मिलनेवाले फल हैं। (यज्ञ में भाग ग्रहण करने वाले) देवता, यज्ञ और यज्ञों के फल भी ये ही हैं। सम्पूर्ण लोकों में जितनी क्रियाएं होती हैं, उन सबका फल देने में ये ही पूर्ण समर्थ हैं। राघव! विपत्ति में, कष्ट में, दुर्गम मार्ग में तथा और किसी भय के अवसर पर जो कोई पुरुष इन सूर्यदेव का कीर्तन करता है, उसे दुःख नहीं भोगना पड़ता। इसलिए तुम एकाग्रचित्त होकर इन देवाधिदेव जगदीश्वर की पूजा करो। इन आदित्यहृदय का तीन बार जप करने से कोई भी युद्ध में विजय प्राप्त कर सकता है। महाबाहो! तुम इसी क्षण रावण का वध कर सकोगे।' यह कहकर अगस्त्यजी जैसे आये थे, उसी प्रकार चले गये।॥22-27॥

एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत् तदा।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्।।28।।
आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान्।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्।।29।।
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत्।
सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत्।।30।।
अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति।।31।।

'उनका उपदेश सुनकर महातेजस्वी श्रीरामचन्द्रजी का शोक दूर हो गया। उन्होंने प्रसन्न होकर शुद्धचित्त से आदित्य हृदय को धारण किया और तीन बार आचमन करके शुद्ध हो भगवान सूर्य की ओर देखते हुए इसका तीन बार जप किया। इससे उन्हें बड़ा हर्ष हुआ। फिर परम पराक्रमी रघुनाथ जी ने धनुष उठाकर रावण की ओर देखा और उत्साह पूर्वक विजय पाने के लिये वे आगे बढ़े। उन्होंने पूरा प्रयत्न करके रावण वध का निश्चय किया। उस समय देवताओं के मध्य में खड़े हुए भगवान सूर्य ने प्रसन्न होकर श्रीरामचन्द्रजी की ओर देखा और निशाचर राज रावण के विनाश का समय निकट जानकर हर्षपूर्वक कहा–'रघुनन्दन! अब जल्दी करो' ।।28-31।।

रविवार व्रत कथा

शास्त्रों के अनुसार सूर्य को देवता का स्थान दिया गया है। सूर्य का वार रविवार होता है। सूर्य नवग्रहों के भी प्रथम देवता हैं। सूर्य देव महान् तेजस्वी एवं बली हैं। रविवार व्रत का पालन करने से मानसिक क्लेशों से मुक्ति मिलती है तथा हृदय को शांति प्राप्त होती है। रोग दूर होते हैं, संतान की प्राप्ति होती है तथा निर्धनों को धन की प्राप्ति होती है, अर्थात् सूर्यदेव के पूजन व उपवास से समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति होती है तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है।

सूर्य का तांत्रिक मंत्र–ॐ ह्रीं घृणिः सूर्याय नमः। ॐ सूर्याय नमः।।

विधि विधान–रविवार को प्रातःकाल शैय्या त्याग कर तथा शौचादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए। तत्पश्चात् पूजन के स्थान को गोबर से लीप लें। तत्पश्चात् सूर्यदेव की प्रतिमा के समक्ष धूप-दीप जलाएं व सूर्य के तांत्रिक मंत्र का इक्कीस बार जाप करें। तत्पश्चात् व्रतकथा पढ़ें। दिन में एक समय भोजन करें तथा भोजन से पूर्व सूर्य देव को भोग लगाएं।

व्रत कथा–किसी नगर में एक वृद्धा रहती थी। प्रत्येक रविवार को प्रातःकाल वह अपने घर को गोबर से लीपकर, नहा-धोकर सूर्यदेव की पूजा करती थी। तत्पश्चात् वह भोजन बनाकर भगवान को भोग लगाकर तब स्वयं भोजन करती थी। सूर्यदेव की कृपा से वृद्धा के घर में धन-धान्य व सुख-समृद्धि का वास होने लगा व उसे कोई कष्ट नहीं होता। वृद्धा रविवार को अपना घर लीपने के लिए जिस पड़ोसिन के यहां से गोबर लाती थी, वह वृद्धा की प्रतिष्ठा एवं सम्पन्नता देखकर उससे ईर्ष्या करने लगी। उसने अपनी गाय को घर के अंदर बांधना आरम्भ कर दिया। रविवार के दिन उस वृद्धा को गोबर नहीं मिला और वह घर को न लीप पाई। दुःखी हो उसने न तो स्नान किया, न भोजन बनाया तथा न ही भगवान का भोग लगाया। सारा दिन ऐसे ही बीत गया। वह रात्रि को भूखी-प्यासी ही सो गई। रात में भगवान ने उसे सपने में दर्शन दिए तथा उससे भोग न लगाने का कारण पूछा। वृद्धिया ने कहा–''भगवन् मुझे आज गोबर नहीं मिला और इसीलिए मैंने भोजन नहीं बनाया और

न ही भोग लगाया।'' सूर्य देव वृद्धा से बोले-''माता! हम तुम्हें ऐसी गाय प्रदान करते हैं जो तुम्हारी प्रत्येक इच्छा पूर्ण करेगी। तुम्हारी भक्ति व निष्ठा से मैं बहुत प्रसन्न हूं। आप सदैव सुखी रहें एवं आपकी समस्त इच्छाएं पूर्ण हों।'' ऐसा वरदान देकर सूर्यदेव अंतर्ध्यान हो गए। सवेरे जब वृद्धा सोकर उठी तो उसने अपने घर में अति सुन्दर गाय को खड़ा पाया, उसके समीप ही उसका बछड़ा बंधा हुआ था। वृद्धा गाय व बछड़े को पाकर बहुत खुश हुई तथा वह गाय और बछड़े को घर से बाहर बांध आई। वृद्धा का समय गाय की सेवा में बहुत अच्छा व्यतीत होने लगा। जब पड़ोसिन ने वृद्धा के घर सुन्दर गाय व बछड़े को बंधा देखा तो वह द्वेष और ईर्ष्या से जल उठी। अगले दिन सवेरे जब पड़ोसन घर के बाहर आई तो उसने देखा कि वृद्धा की गाय ने सोने का गोबर दिया है तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह जल्दी से सारा गोबर उठा ले गई और अपनी गाय का गोबर वहां डाल गयी। प्रतिदिन यह क्रम बन गया परन्तु वृद्धा को इसकी खबर न लगी। सूर्य देव ने जब देखा कि सीधी सादी वृद्धा को उसकी पड़ोसिन मूर्ख बना रही है तो उन्होंने एक दिन सायंकाल को बहुत तेज आंधी चलाई। आंधी के कारण वृद्धा ने गाय व बछड़े को अंदर बांध लिया। जब वृद्धा सुबह उठी तो उसने गाय के पास सोने का गोबर पड़ा हुआ पाया। यह देख उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वृद्धा अब प्रतिदिन गाय को घर में बांधने लगी। यह देख पड़ोसिन बुरी तरह जल उठी। पड़ोसिन जलकर नगर के राजा के पास गई और कहा -''महाराज, मेरे घर के निकट एक वृद्धा रहती है जिसकी गाय सोने का गोबर देती है। उस वृद्धा को इतने सोने का क्या काम? आप उसे अपने महल में ले आईये।'' राजा ने उसकी बात सुनकर तुरन्त ही सैनिकों को वृद्धा के यहां से गाय को ले आने का आदेश दिया। कुछ ही देर में राजा के सेवक वृद्धा के घर गए और उसकी गाय को खोलकर ले गए। वृद्धा ने बहुत विनती की परन्तु उन्होंने वृद्धा की कोई बात न सुनी। वृद्धा ने गाय के चले जाने पर दुःखी हो भोजन नहीं किया और वह सूर्यदेव का स्मरण करती हुई रोती-रोती भूमि पर ही सो गई। इधर राजा गाय को पाकर अति प्रसन्न हुआ। उसने गाय को महल में बंधवा दिया। प्रातःकाल राजा ने उठकर देखा कि सारा महल गोबर से भरा हुआ है। यह देखकर वह क्रोध में चिल्लाया और सेवकों से महल साफ करने के लिए कहा। रात्रि में सूर्य देव ने राजा को स्वप्न में दर्शन दिए और कहा-''राजन जो गाय तूने वृद्धा से छीनी है वह उसे वापस कर दे अन्यथा तेरा सर्वनाश हो जाएगा।'' प्रातःकाल ही राजा ने सेवकों को आज्ञा दी कि वृद्धा को गाय को सम्मान सहित उसके घर दे आओ। राजा ने पड़ोसिन को दण्ड दिया तथा नगर वासियों को कहा कि राज्य की खुशहाली के लिए रविवार का उपवास करें व पूजन करें।

व्रत के पालन करने से राजा के नगर में हर ओर सुख-समृद्धि का वास हो गया और सभी आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे। इस प्रकार जो भी रविवार का व्रत करता है उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है।

रविवार की आरती

कहुं लगि आरती दास करेंगे,
सकल जगत जाकी जोत विराजे।।टेक।।
अमित कोटि जाके बाजा बाजे,
कहा भयो झनकार करे हो राम।
सात समुद्र जाके चरणनि बसे,
कहा भयो जल कुम्भ भरे हो राम।
चार वेद जाके मुख की शोभा,
कहा भयो ब्रह्म वेद पढ़े हो राम।
कोटि भानु जाके नख की शोभा,
कहा भयो मन्दिर दीप धरे हो राम।
शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक,
नारद मुनि जाको ध्यान धरे हो राम।
भार अठारह रामा बलि जाके,
कहा भयो शिर पुष्प धरे हो राम।
हिम मदार जाको पवन झकोरें,
कहा भयो शिर चंवर दुरे हो राम।
छप्पन भोग जाके नितप्रति लागे,
कहा भयो नैवेद्य धरे हो राम।
लख चौरासी बन्द छुड़ाये,
केवल हरियश नामदेव गाये हो राम।

❑❑❑

सिंहलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन

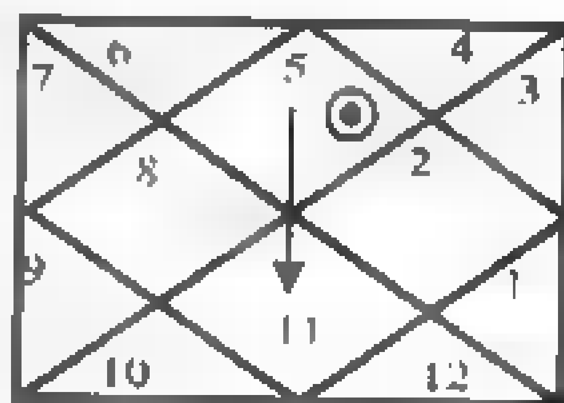

1. **माणिक्य**–सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश है। अतः इस लग्न के लिए माणिक्य अत्यन्त शुभ फलदायक होता है। इस लग्न के जातकों को आजीवन माणिक्य धारण करना चाहिए। इसके धारण करने से जातक शत्रुओं के मध्य निर्भय होकर रह सकेंगे और शत्रु-पक्ष से उनके विरुद्ध जो भी कार्यवाही होगी उससे उनकी रक्षा होती रहेगी। यह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करेगा और जातक की आयु में वृद्धि होगी। इस लग्न के जातक अत्यंत भावुक होते हैं। अतः अपने मानसिक संतुलन को बनाये रखने के लिए तथा आत्मबल की उन्नति के लिए सदा माणिक्य धारण करना चाहिए। आपका जीवन रत्न माणिक्य है।
2. **मोती**–सिंहलग्न में चन्द्र द्वादश भाव का स्वामी है। अतः इस लग्न के जातक को मोती धारण नहीं करना चाहिए। यदि चंद्र द्वादश भाव में स्वराशि में स्थित हो तो चंद्र की महादशा में मोती धारण किया जा सकता है।
3. **मूंगा**–सिंहलग्न में भी चतुर्थ और नवम भावों का स्वामी होने के कारण मंगल कारक ग्रह माना जाता है। इसके धारण करने से मानसिक शान्ति, गृह तथा भूमि लाभ धन-लाभ, मातृ-सुख, यश, मान-प्रतिष्ठा और भाग्योन्नति होती है। यदि यह रत्न माणिक्य के साथ धारण किया जाये तो विशेष फल प्रदान करता है।
4. **पन्ना**–सिंहलग्न के लिए बुध द्वितीय और एकादश का स्वामी होता है। इस लग्न के जातक को बुध की महादशा में पन्ना धारण करने से संतान सुख, पारिवारिक सुख, अतुल धन-लाभ, मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति है।

5. **पुखराज**–सिंहलग्न के लिए गुरु पंचम, त्रिकोण और अष्ट भाव का स्वामी होता है। पंचम त्रिकोण का स्वामी होने के कारण वह इस लग्न के लिए शुभ ग्रह माना जाता है। अत: सिंहलग्न के जातकों के लिए पीला पुखराज धारण करना अत्यन्त लाभदायक होगा। यदि यह माणिक्य के साथ धारण किया जाय तो अति उत्तम, अत्यन्त शुभ ग्रह है। इस लग्न के जातक पीला पुखराज सदा रक्षा कवच के समान धारण कर सकते हैं। गुरु की महादशा में यह अत्यन्त लाभदायक होता है। पुखराज यदि नवम स्थान (भाग्य) के स्वामी सूर्य के रत्न माणिक्य के साथ धारण किया जाय तो इससे शुभ फल में वृद्धि होगी।

6. **हीरा**–हीरा लग्न के लिए शुक्र तृतीय व एकादश का स्वामी होने के कारण शुभ ग्रह नहीं माना जाता। परन्तु यदि यह एकादश का स्वामी हो तो शुक्र की महादशा में हीरा धारण करने में धन-प्राप्ति तथा मान-प्रतिष्ठा से वृद्धि होती है।

7. **नीलम**–सिंहलग्न के लिए शनि षष्ठ (दु:खस्थान) और सप्तम (मारक) भावों का स्वामी होने के कारण अशुभ ग्रह माना गया है। शनि लग्नेश सूर्य का शत्रु भी है। अत: इस लग्न के जातक को नीलम धारण नहीं करना चाहिए।

विशिष्ट उद्देश्य पूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**–पुखराज सवा पांच रत्ती, माणिक्य सवा पांच रत्ती।
2. **भाग्योदय हेतु**–माणिक्य सवा पांच रत्ती, मूंगा सवा पांच रत्ती।
3. **आरोग्य हेतु**–माणिक्य सवा पांच रत्ती, मूंगा सवा पांच रत्ती।
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**–माणिक्य-पन्ना-मूंगा तीनों सवा चार चार रत्ती संयुक्त रूप से तांबा यंत्र में धारण करें।

दृष्टांत कुण्डलियां

सिख धर्म के संस्थापक गुरुनानक देव

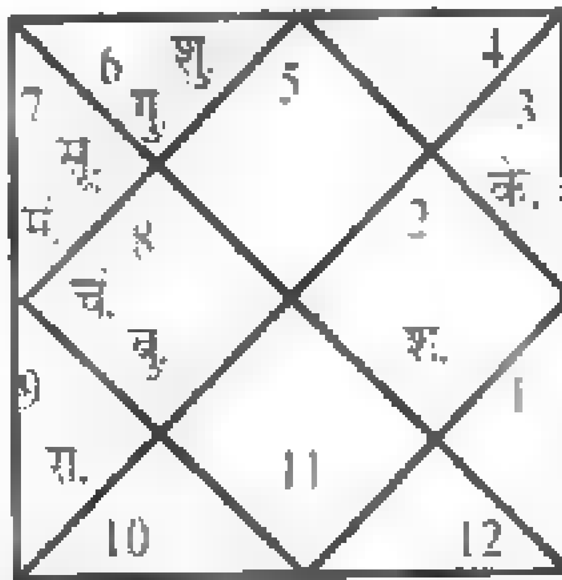

जन्म तिथि-8.11.1470, समय- रात्रि 1.00, स्थान-पाकिस्तान (ननकाना)। सिख धर्म के संस्थापक संतगुरु नानकदेव का काल इतिहास में (1469-1539) माना गया है। पर इनका असली जन्म विक्रम सम्वत् 1526 वैशाख शुक्ल तृतीया लाहौर जिले में स्थित 'राईभोईका' गांव में हुआ। इस गांव का नाम बाद में 'ननकाना' पड़ा क्योंकि नानकदेव का जन्म यहा हुआ था। श्री नानकदेव के घरेलू ज्योतिषी एवं पुरोहित का नाम श्री हरदयाल था। जिनसे यह कुण्डली प्राप्त हुई। श्री नानकदेव महान् कवि थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दू व मुस्लिम एकता का पाठ सबको पढ़ाया। हिन्दू व मुस्लिम धर्म में फैली कुरीतियों के प्रति जेहाद छेड़ा तथा सभी धर्मों के सच्चे व अच्छे उपदेशों को 'गुरु ग्रंथ साहब' और गुरुवाणी' में स्थान दिया। गुरु नानक देव 68 वर्ष तक जीये। इनका स्वर्गवास सम्वत् 1595 आसोज सुदी दशमी को हुआ।

चंद्र पश्येद्यदादित्यं बुधः पश्येन्निशापतिम्।
अस्मिन्योगे तु यो जातः स भवेद्वसुधाधिपः॥

–मानसागरी श्लोक 5 पृ. 221

जिसके जन्म-काल में चंद्रमा सूर्य को देखता हो और बुध चंद्रमा को देखता हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है। ईश्वरीय अवतार श्री गुरु नानक देव की कुंडली में

लग्नेश सूर्य चतुर्ग्रह युति के साथ बलवान् स्थिति में है। राजयोग कारक एवं भाग्येश मंगल स्वगृही है तथा 'नीचभंग राजयोग' बनाकर बैठा है। इस मंगल के कारण चन्द्र-मंगल लक्ष्मी योग बना साथ ''रूचक योग'' की सृष्टि हुई जो कि पंचमहापुरुष योगों में से शक्तिशाली योग है। दशमेश व पराक्रमेश शुक्र स्वगृही होकर भाग्य-स्थान को देख रहा है फलत: 'अनन्त कीर्तिदायक योग' की सृष्टि कर रहा है।

शंकराचार्य कांचीमठ श्री चंद्रशेखर सरस्वती

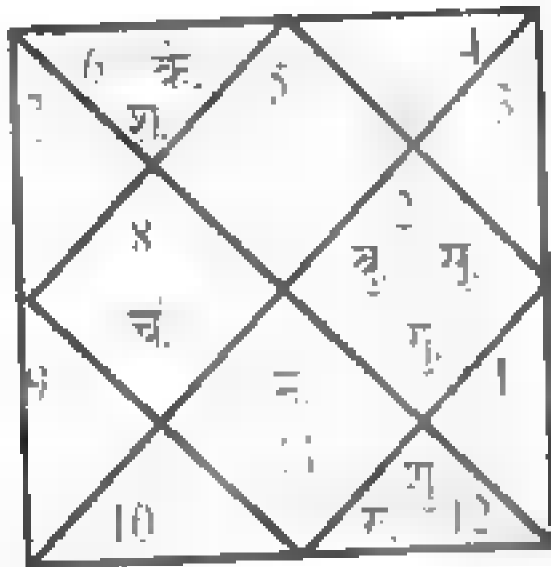

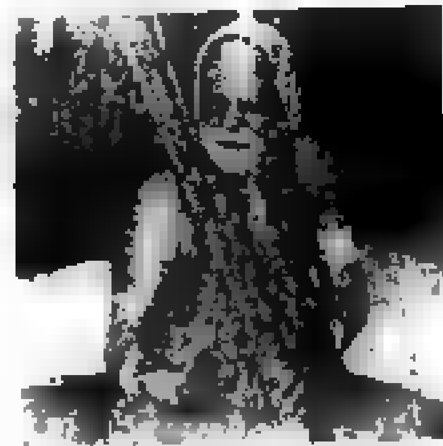

जन्म तिथि-20.5.1894 समय 13.30, स्थान विल्लुपुरम्। यहां सप्तम स्थान में मंगल, राहु, शुक्र आठवें अविवाह की स्थिति को बताता है। शनि-केतु धन स्थान में वैराग्य का प्रतीक है। व्ययेश चद्रमा चौथे स्थान में नीच का मातृसुख शून्य एवं सांसारिक वैभव शून्य। केन्द्र में गुरु व शुक्र के परस्पर स्थान परिवर्तन ने इनको अनन्त ऐश्वर्य दिया। यहां गजकेसरी योग भी दृष्टव्य है।

तेरापंथ के आचार्य तुलसी

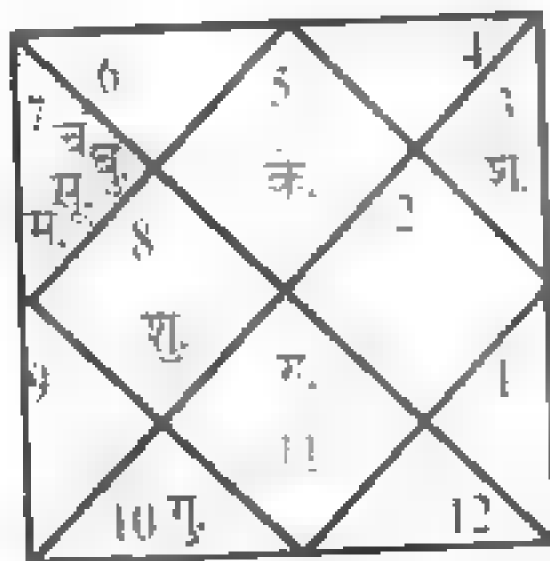

जन्म तिथि-20.10.1914, समय 4.06 प्रात:, स्थान-लाडनूं (नागौर)। इनकी कुण्डली में 1. कुलदीपक योग, 2. उभयचारी योग, 3. दुर्धरायोग, 4. मंगल-शुक्र

का परस्पर परिवर्तन योग, 5. अष्टमेश गुरु छठे होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बना। इन्होंने सम्वत् 1982 पौष कृष्ण पंचमी को संन्यास की दीक्षा ली।

महान् दार्शनिक राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन्

6 बु. शु. 5 च. सू. रा. श. 4 3
7 8 मं. गु. 2
9 11 1
10 के. 12

जन्म तिथि-5/6 सितम्बर 1888, समय- 6.00 प्रातः, सथान-मद्रास। डॉ. राधाकृष्णन के नाम से 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। ज्योतिष के प्रसिद्ध ग्रंथ मानसागरी के श्लोक 4 पृष्ठ 221 के अनुसार जिस कुंडली में एक भी ग्रह बलवान होकर केंद्र या त्रिकोण में हो तो राजयोग श्रेष्ठ होता है। इस कुण्डली में लग्नाधिपति सूर्य-चंद्रमा के साथ लग्न में स्थित है। भाग्येश मंगल राजयोग कारक होकर स्वगृही है, केंद्र में है। बुध उच्च का है। शुक्र व बुध की युति 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि कर रही है। गुरु राजयोगकारक है, स्वगृहाभिलाषी है एवं केंद्र में है। इन सब योगों के कारण डॉ. राधाकृष्णन् ने भारत के सर्वोच्च गरिमामय, राष्ट्रपति पद की शोभा बढ़ाई। पंचमेश गुरु विद्या भवन का अधिपति होकर मंगल के साथ होने से इन्होंने दर्शन व इतिहास के क्षेत्र में भी रचनात्मक कार्य कर चिरस्थाई यश की प्राप्ति की।

डॉ. शंकर दयाल शर्मा, पूर्व राष्ट्रपति

6 5 बु. सू. शु. श. 4 3 गु.
7 मं. 8 रा. 2 के.
9 चं. 11 1
10 12

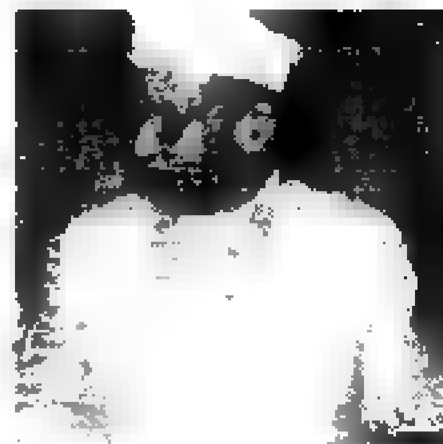

जन्म तिथि- 19.8.1918, समय-1.00 प्रातः, स्थान-भोपाल (मध्य प्रदेश)। बहुत ही लंबे अंतराल से डॉ. शंकर दयाल शर्मा साहित्यिक गतिविधियों के साथ भारतीय राजनीति से जुड़े रहे। जीवन की सुदूर लंबी यात्रा के अंतिम चरण में भारत के सर्वोच्च सर्वप्रभुत्वसंपन्न एवं महिमामंडित राष्ट्रपति के गरिमामय पद पर नवम राष्ट्रपति के रूप में 25 जुलाई, 1992 को पदासीन हुए।

ज्योतिष की दृष्टि में लग्नेश सूर्य अपनी मूलत्रिकोण राशि में 'बुधादित्य' योग के साथ लग्न में बैठकर प्रबल राजयोग की सृष्टि कर रहा है। गुरु चंद्र की परस्पर दृष्टि संबंध 'गजकेसरी योग' द्वारा राजयोग की पुष्टि कर रहा है। सिंहलग्न में गुरु एवं मंगल-दो ग्रह ही राजयोग प्रदाता होते हैं। मंगल इस कुंडली में स्वगृहीभिलाषी होकर अपनी उच्च राशि को, स्वराशि मेष को एवं राज्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखता हुआ उत्तम राजयोग की सृष्टि कर रहा है।

जैनाचार्य श्री पद्मसागर सूरी

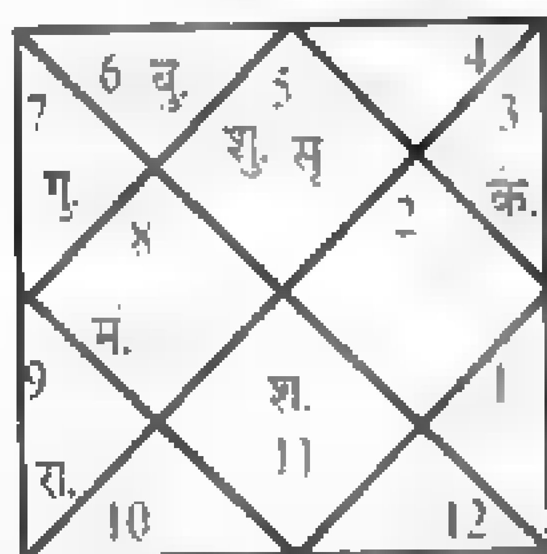

जन्म 9/10 सितम्बर 1935, मंदिर मार्ग के महान् संत श्री जैनाचार्य सूरी की कुण्डली में 1. कुलदीपक योग, 2. उभयचारी योग, 3. दुर्घटना योग, 4. रविकृत राजयोग, 5. रूचक योग, जैसे महान् योग पड़े हैं।

जयगुरुदेव

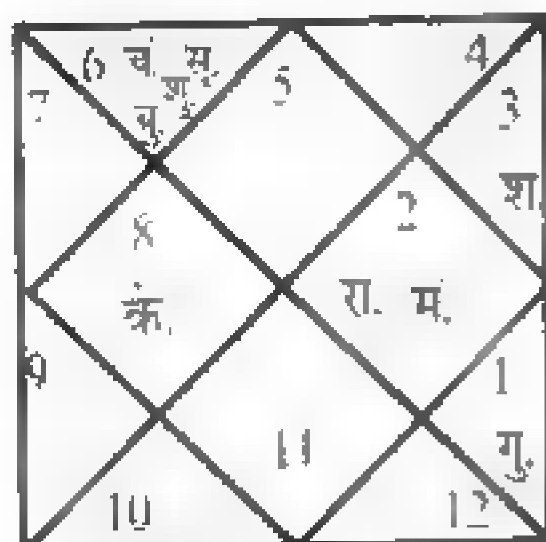

जयगुरुदेव के नाम से अलग सम्प्रदाय चलाने वाले, टाट के कपड़े पहनकर चुनावों में खड़े होने वाले एवं ज्योतिषी बनकर भविष्यवाणियों के माध्यम से भय फैलाने वाले जयगुरुदेव का अलग इतिहास है।

मराठा सरदार छत्रपति शिवाजी

6 5 4 3 7 श. 8 2 रा. मं. 9 गु. 1 के. बु. सू. चं. 10 11 शु. 12

जन्म तिथि- 19.2.1630, समय-18.26 बजे, स्थान-बीजापुर। छत्रपति वीर शिवाजी का जन्म बीजापुर (महाराष्ट्र) में शाहजी भोंसले के घर में हुआ। जो कि अहमदनगर स्टेट के प्रमुख सेनापति थे। शिवाजी जन्म से ही नेतृत्व गुणों से परिपूर्ण, युद्धकला में प्रवीण महानायक थे। उन्होंने 'हिन्दू साम्राज्य' स्थापना के उद्देश्य से छापामार प्रणाली के द्वारा 'शिवसेना' की स्थापना की। उन्होंने तत्कालीन मुगल सम्राट औरंगजेब के छक्के छुड़ा दिये। औरंगजेब के खूंखार सेनापति अफजल खां को शेर नाखूनों से चीरकर मार डाला। मुगल सल्तनत को समाप्त करने में छत्रपति शिवाजी का योगदान सबसे अधिक रहा। उन्होंने स्वतंत्र 'महाराष्ट्र' की स्थापना की।

तीसरे घर का स्वामी त्रिकोण में हो तो 'कुलदीपक नाम' का राजयोग होता है।

कुलदीपकयोगः स्याद्भ्रातृपो यदि कोणगः।
परोपकारयुक्तः स्याद्योगे स्मिन् मनुजस्तदा।।

—योगचिंतामणि श्लोक 8/पृ. 4

तीसरे घर का स्वामी नवम या पांचवें स्थान में हो तो कुलदीपक नाम का राजयोग होता है। शनि उच्च का, गुरु, सूर्य केंद्र में तथा भाग्य भवन में शुक्र होने के कारण ये परम साहसी, उत्कृष्ट योद्धा, सफल राजनीतिज्ञ एवं प्रबल पराक्रमी छत्रधारी राजा हुए।

छठे घर का स्वामी शनि पराक्रम स्थान में उच्च का होने से ये समूल नाश करने में पूर्णतः सक्षम व समर्थ थे।

जनरल माणेक शा

कीर्तिमन्त थल सेनाध्यक्ष, संसार के पहले जनरल जिन्होंने एक लाख पाकिस्तानी सैनिकों को बिना खून की एक बूंद बहाये, गिरफ्तार कर लिया।

स्व. राजीव गांधी (पूर्व प्रधानमंत्री)

जन्म तिथि-20.8.1944, जन्म समय-7.30 प्रातः। प्रस्तुत कुंडली में लग्नस्थ पंचग्रह युति के कारण ही प्रबल गजयोग बना। केन्द्र-त्रिकोण ग्रहों का परस्पर संबंध बना तथा 'त्रिगुणलक्ष्मी योग' की सृष्टि हुई। भास्कर योग, बुधादित्य योग, यामिनी नाथयोग, गजकेसरी योग, उभयचारी योग, दुर्धरायोग के साथ भाव भावेश संबंध ने इन्हें प्रधानमंत्री जैसे उच्च पद पर सहज में ही पहुंचा दिया। परंतु परस्पर शत्रु ग्रहों की युति के कारण 'शस्त्रहंता योग' की भी सृष्टि हुई। श्री राजीव गांधी पर प्राणघातक हमला होगा, जिसमें वे मारे जाएंगे। यह अचूक भविष्यवाणी हत्या के एक वर्ष पूर्व हमारे द्वारा 'गल्फ न्यूज', 'खलीज टाइम्स', 'जलते दीप' वगैरह में कर दी गई थी जो अक्षरशः सत्य हुई।

श्री रविशंकर शुक्ला, पूर्व मुख्यमंत्री (मध्यप्रदेश)

जन्म तिथि-31.7.1877, जन्म समय 9.00, स्थान मध्यप्रदेश। प्रस्तुत कुंडली मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ला की है।

त्रिकोणे सप्तमे लग्ने भवति च यदा ग्रहः।
हंसयोगं विजानीयात्त्रवशस्यात्र पालकः।।

लग्न चंद्रिका, श्लोक 70/पृ. 14

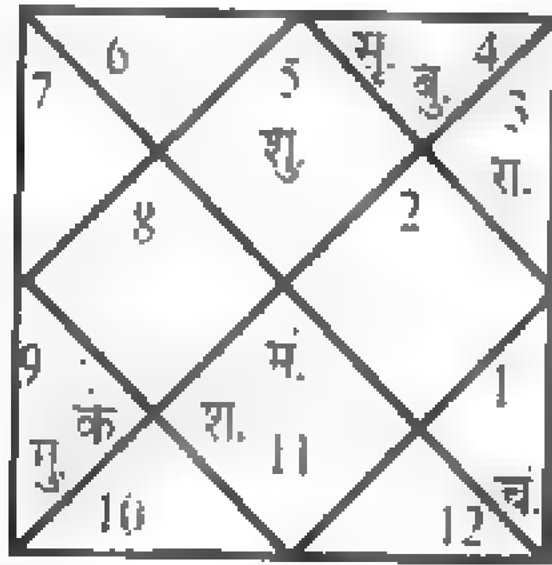

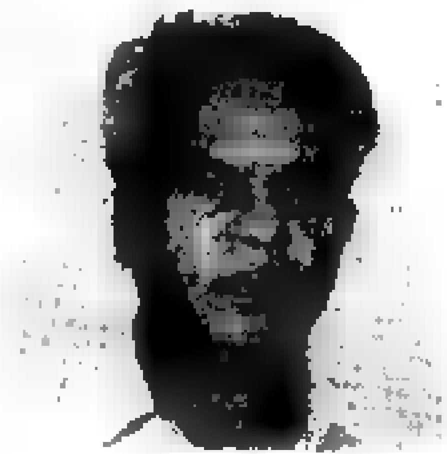

त्रिकोण में, सातवें लग्न में ग्रह हो तो यह सबको पालन करने वाले वाला हंस नाम का श्रेष्ठ राजयोग होता है। इस कुंडली में शनि अपनी मूल त्रिकोण राशि में बैठकर लग्न को देख रहा है। लग्न शुभ ग्रह के प्रभाव में है। स्वगृही गुरु पंचमस्थ होकर पूर्ण ताकत से लग्न को देख रहा है। दशमेश शुक्र लग्न में जाने से ''पद्मसिंहासन योग'' बना। भाग्य स्थान में चंद्रमा उच्चाभिलाषी है। सूर्य-बुध की युति ''बुधादित्य योग'' बना रही है फलतः जातक मुख्यमंत्री के पद तक पहुंचा।

श्री वाई. एस. चव्हाण, गृहमंत्री भारत सरकार

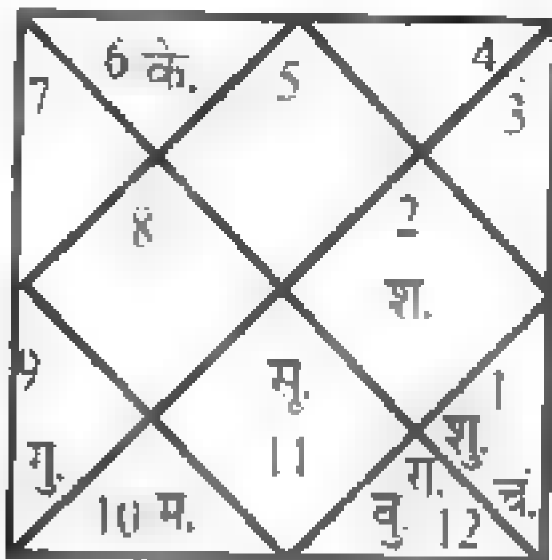

जन्म तिथि-12.3.1913, जन्म समय-17.00, स्थान-मुम्बई। प्रस्तुत कुंडली भारत के पूर्व गृहमंत्री श्री यशवंतराव चव्हाण की है। शास्त्रानुसार सब ग्रह लगातार क्रम में हों तो 'एकावली नामक' श्रेष्ठ राजयोग होता है। इनकी कुंडली में पूर्व प्रधानमंत्री मोरार जी देसाई, पूर्व राष्ट्रपति अय्यूब खान जैसा ही एकावली नामक राजयोग पड़ा है। पंचम भाव में राजयोग कारक गुरु स्वगृही होकर भाग्य, लाभ व लग्न को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। मंगल उच्च का है। चंद्रमा उच्चाभिलाषी है, शुक्र

स्वगृहाभिलाषी है तथा शनि केंद्रस्थ है। लग्नेश सूर्य लग्न को देखता हुआ 'लग्नाधिपति योग' बना रहा है।

अब्दुल रहमान अंतुले

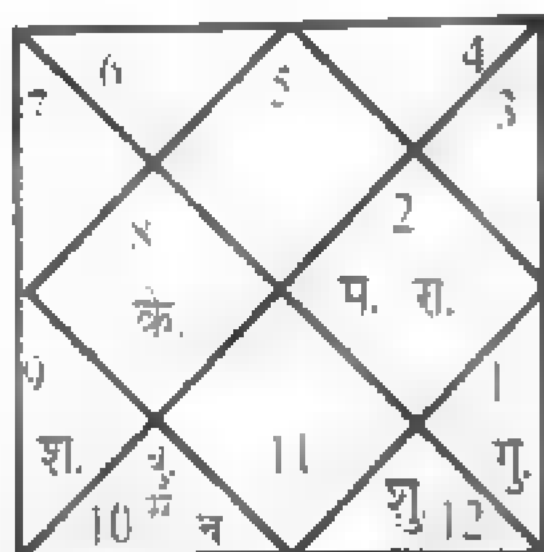

जन्म तिथि-9.2.1929, जन्म समय-19.45, स्थान-अम्बेत (महाराष्ट्र)। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अब्दुल रहमान अंतुले काफी चर्चित व्यक्तित्व रहे। वे केन्द्र में स्वास्थ्य मंत्री भी रहे। उनके राजयोग में मंगल व राहु की भूमिका प्रधान है। चंद्रमा के कारण विमल नामक विपरीत राजयोग भी बना।

डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी

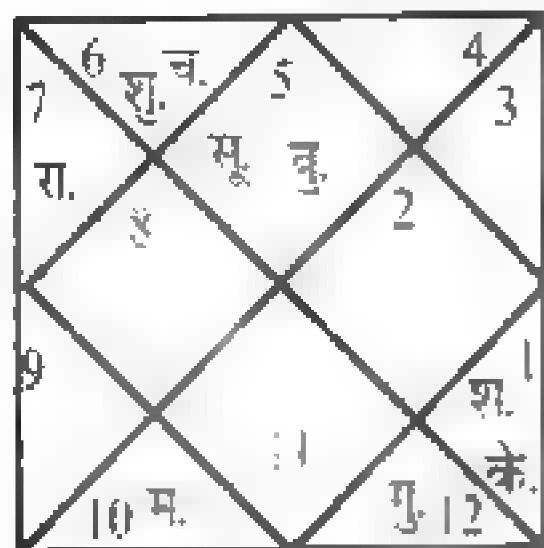

जन्म तिथि 16.9.1939, जन्म समय-4.30 बजे प्रातः, स्थान-मद्रास। सुब्रह्मण्यम स्वामी मूलतः अर्थशास्त्री हैं, परन्तु एक तेज तर्रार राजनेता हैं। मंगल शनि का परस्पर परिवर्तन योग, बुधादित्य योग ने उन्हें उच्च पदस्थ राजनेताओं के निकट लाया पर तृतीयस्थ राहु के कारण वे किसी के सच्चे मित्र नहीं रहे।

श्री शिवचरण माथुर, पूर्व मुख्यमंत्री राजस्थान

जन्म तिथि-14.2.1926, जन्म समय-6.30 सायं, स्थान-गुना (मध्य प्रदेश)। श्री शिवचरण माथुर 14 जुलाई 1981 को राजस्थान के मुख्यमंत्री बने तथा 20 जनवरी

1988 को पुनः मुख्यमंत्री बने परन्तु 2003 को नवम्बर में हुए विधानसभा चुनाव में वे विधायक पद के उम्मीदवार का भी चुनाव हार गये। इनकी कुण्डली में विपरीत राजयोग खासतौर पर दृष्टव्य है। ग्रह राज्य देते हैं और राज्य हर भी लेते है यह कहावत इस कुण्डली पर लागू होती है।

डॉ. कर्ण सिंह

जन्म तिथि-9.3.1931, समय-16.15, स्थान-कैनीज (फ्रांस)। जम्मू कश्मीर के महाराजा डॉ. कर्णसिंह का भारतीय राजनीति में महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहां मंगल एवं चंद्र का परिवर्तन योग विशेष महत्वपूर्ण है। राजयोग प्रदाता है।

श्री बंशीलाल

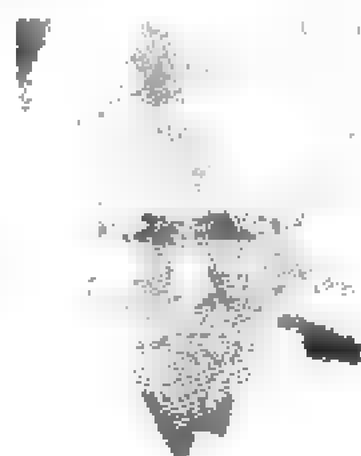

जन्म तिथि-26.8.1927, जन्म समय-6.00 बजे प्रातः, स्थान भिवानी (हरियाणा)। **श्री बंसीलाल** भारत सरकार के रक्षामंत्री भी रह चुके हैं। इनका राजयोग बुधादित्य योग के कारण, मंगल व चंद्र के कारण विपरीत राजयोग देता है। गुरु भी सरल नामक 'विपरीत राजयोग' देता है।

आर. के धवन

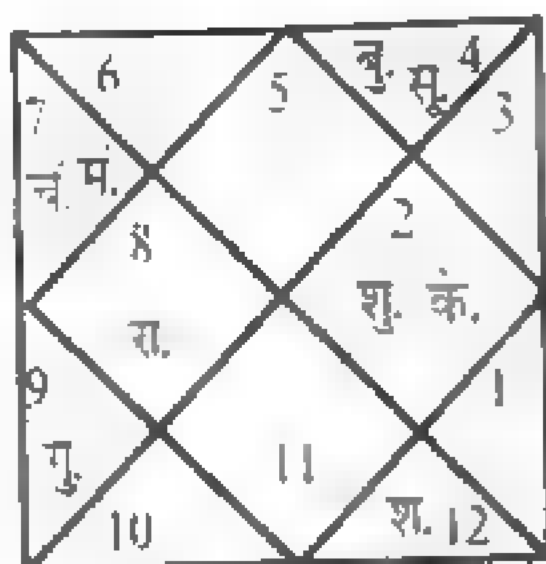

जन्म तिथि-16.7.1937, जन्म समय-8.30 बजे प्रातः, स्थान-चिनकोट (पाक)। आर. के. धवन स्व. इंदिरा गांधी के प्रमुख सलाहकारों में से एक थे। राजनीति में वे कांग्रेस के कई प्रमुख नेताओं के सलाहकार रहे हैं।

श्री मोहन मेघवाल

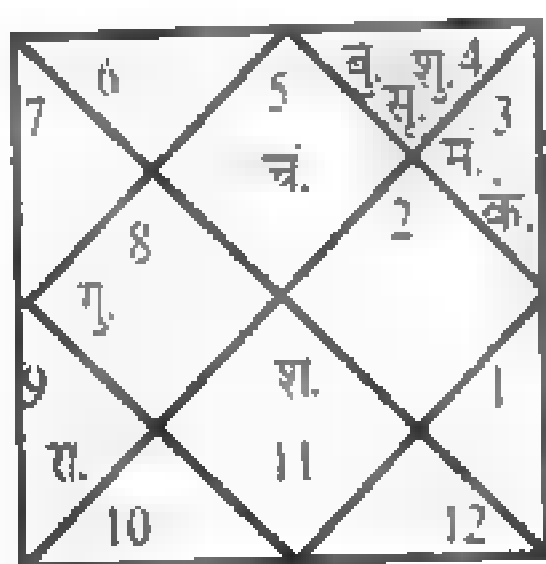

जन्म तिथि-21.7.1935, जन्म समय-9.00, स्थान-सूरसागर। श्री मोहन मेघवाल भाजपा के विधायक एवं राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री रह चुके हैं। सूर्य+चंद्र के परिवर्तन योग के कारण इनकी कुण्डली में राजयोग बना। 2003 में वे भाजपा के विधायक के रुप में पुनः सूरसागर विधानसभा क्षेत्र से चुन लिये गये।

श्री राजेन्द्र गहलोत

जन्म तिथि-8.11.1946, जन्म समय 3.00 बजे प्रातः, स्थान-जोधपुर। आंशिक कालसर्पयोग, दो बार विधायक रहे भाजपा के पूर्वमंत्री रह चुके राजेन्द्र गहलोत को राहु की दशा चलते 2003 में पार्टी का टिकट तक न मिल सका।

टोनी ब्लेयर

ब्रिटिश प्रधानमंत्री, जन्म तिथि- 6.5.1955, जन्म समय 14.00, स्थान- लंदन।।

श्री बोरिस येलस्तिन

रूस के राष्ट्रपति, जन्म तिथि-3.4.1930, जन्म समय-17.12। गुरु एवं बुध का परस्पर परिवर्तन योग पंचम स्थान एवं लाभ स्थान को पुष्ट करता है।

श्री नेल्सन मण्डेला

राष्ट्रपति दक्षिण अफ्रीका। जन्म तिथि-18.7.1918, जन्म समय-9.00 बजे प्रातः, स्थान-उमताला (दक्षिण अफ्रीका)।

ब्लीदिमीर पुतिन (रूस)

रूस, जन्म तिथि-7.10.1952, जन्म समय-9.30 बजे प्रातः, स्थान-पीटर बर्ग।

चौधरी चरणसिंह

जन्म तिथि-23.12.1902, जन्म समय-22.00, स्थान-नूरपुर (मेरठ)। एक वकील में भारत के प्रधानमंत्री पद पर पहुंचे पहले किसान नेता विपरीत राजयोग वाली कुण्डली के अनुपम उदाहरण हैं।

राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन

भाव	ग्रह
1	
2	श.
3	
4	
5	
6	कें.
7	
8	
9	गु. बु. सू. मं.
10	चं.
11	शु.
12	रा.

जन्म तिथि- 8.1.1913, जन्म समय-21.30, स्थान-अमेरिका।

राष्ट्रपति जॉनसन

भाव	ग्रह
1	
2	
3	शु. रा.
4	
5	सू. चं. मं. गु. बु.
6	
7	
8	
9	के.
10	
11	
12	श.

जन्म तिथि-27.8.1908, जन्म समय-7.00 बजे प्रातः, स्थान-अमेरिका।

हेराल्ड विल्सन

भाव	ग्रह
1	शु.
2	चं.
3	श.
4	मं. के.
5	
6	
7	
8	
9	
10	रा.
11	सू. बु.
12	गु.

जन्म तिथि-10.3.1916, जन्म समय-18.30, स्थान-इंगलैंड।

श्री जसवंत सिंह

6 5 4
7 3
8 रा. 2 कं.
9 सू. शु. बु. मं. 11 1
10 गु. चं. श. 12

वित्तमंत्री (भारत सरकार), जन्म तिथि-3.1.1938, स्थान-जसौल (बाड़मेर)।

श्री मनोहर श्याम जोशी

6 5 4
7 3
8 सू. शु. रा. चं. 2 कं.
9 बु. 11 1
10 गु. मं. श. 12

पूर्व मुख्यमंत्री महाराष्ट्र। जन्म तिथि- 26.12.1937, जन्म समय-22.46, स्थान-रायगढ़। वर्तमान में लोकसभा अध्यक्ष भारत सरकार

श्री मोहन छंगाणी

6 5 4
7 शु. 3 रा.
सू. चं. 8 बु. श. 2
9 के. 11 1 मं.
10 गु. 12

जन्म तिथि-4.4.1926, जन्म समय-12.00 रात्रि, स्थान-फलौदी। जनता दल के प्रत्याशी बनकर चुनाव जीते मोहन- छंगाणी राजस्थान के शिक्षामंत्री रह चुके हैं।

जार्ज बुश

6 च. 5 रा. 4 3 शु. 7 श. 8 गु. 2 बु. सू. 9 के. मं. 11 1 10 12

अमेरीकी राष्ट्रपति। जन्म तिथि- 12.6.1924, जन्म समय-10.05, स्थान-मिल्टन।

प्रेसिडेन्ट रुजबेल्ट

6 5 4 3 7 चं. मं. 8 रा. 2 के. 9 बु. 11 1 श. गु. सू. शु. 10 12

जन्म तिथि-30.1.1882, जन्म समय-20.00, रेखांश-40.45 N, अक्षांश 73. 59 W।

धर्मराज युधिष्ठर

6 5 श. 4 7 3 रा. 8 2 बु. च. मं. शु. सू. 9 के. 1 11 गु. 10 12

शेख अब्दुल्ला

6 5 4 3 7
8 सू. शु. 2 गु.
9 बु. कं. श. 11 1
10 मं. चं. 12

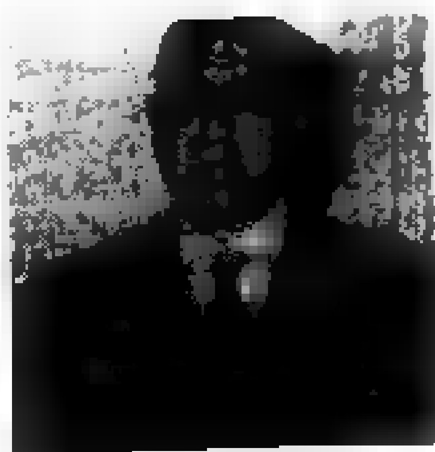

पाकिस्तान, जन्म तिथि-6.12.19051

श्री सुनील दत्त

6 5 मं. 4 3 7 कं.
8 2 बु. चं. सू. गु.
9 श. 11 1 रा. शु.
10 12

जन्म तिथि-6.6.1929, जन्म समय-11.00 बजे, स्थान-पाकिस्तान। अभिनेता सुनील दत्त ने अभिनय ही नहीं अपितु राजनीति के क्षेत्र में कांग्रेस के सांसद रहकर, गणमान्यमंत्री रहकर लगातार नाम कमाया। दशम स्थान में यामिनीनाथ योग, बुधादित्य योग, पद्मसिंहासन योग एवं चतुष्ग्रह युति इस योग का सार्थक कर रही है।

शाहरुख खान

6 5 4 3 गु. 7 सू.
8 बु. मं. कं. 2 रा.
9 शु. श. 11 1
10 चं. 12

जन्म तिथि- 2.11.1965, जन्म समय-2.30 रात्रि, स्थान-दिल्ली।

सनी देओल

6 5 चं. 4
7 3
सू. गु.
बु. 8 2
मं.
शु. रा.
के.
9 श. 1
11
10 12

रजनीकान्त

6 श. 4
7 के. 5 3
8 2
सू.
9 गु. 1
बु. 11
शु. चं.
10 मं. रा. 12

जन्म तिथि–12.12.1950, जन्म समय–23.50, स्थान–चेन्नई।

दादा साहब फाल्के

6 मं. 5 4
7 3
रा.
8 2
गु.
9 के. चं. 1
श. बु. 11 शु.
10 सू. 12

जन्म तिथि–19.3.1871, जन्म समय–20.00, स्थान–त्र्यम्बकेश्वर।

अभिनेत्री माला सिन्हा

6 चं. 5 4
7 मं. 3
सू.
बु. कें.
8 2
शु.
9 रा. श. 1
गु. 11
10 12

जन्म तिथि-11.11.1936, जन्म समय-1.50, स्थान-कोलकाता।

करिश्मा कपूर

6 5 शु. 4
7 3
श.
8 2 सू.
रा. बु. कें.
9 1
चं. 11 मं.
10 गु. 12

फिल्म अभिनेत्री। जन्म तिथि-25.6.1975, जन्म समय-12.00, स्थान-मुम्बई।

अभिनेत्री रेखा

6 सू. 5 गु. 4
7 3
बु.
श. 8 2 कें.
शु.
9 चं. 1
रा. 11
मं. 10 12

जन्म तिथि-10.10.1954

युवराज सिंह

जन्म तिथि-22.12.1981, जन्म स्थान-चंडीगढ़ (पंजाब)

मोहम्मद कैफ

क्रिकेट खिलाड़ी, जन्म तिथि-1.12.1980

श्री विनोद महेश्वरी

जन्म तिथि-25.2.1946, जन्म समय-18.26, स्थान-मोदीनगर। जातक जन्म से करोड़पति है। आधा मोदीनगर इनका है। सप्तमेश लाभ में, धनेश बुध सप्तम भाव में शनि, बुध के परस्पर परिवर्तन से जातक कांग्रेस का उपाध्यक्ष व नगर पालिका अध्यक्ष भी रहा

श्री जयनारायण व्यास

6 5 4
7 3
8 2
के. रा. मं.
च.
9 1
श. सू. 11 गु.
10 बु. शु. 12

जन्म तिथि-10.2.1929, जन्म समय-18.49 स्थान-जोधपुर। सुख स्थान में पूर्ण कालसर्प योग होने से गृहस्थ सुख में निरन्तर बाधा, शनि पंचम स्थान में होने से जातक के पांच पुत्र हैं। व्ययेश चन्द्र सप्तम में, शुक्र आठवें होने से जातक के दो विवाह हुए।

श्री हर्षद मेहता

6 5 चं. सू. 4
7 3
शु. बु. गु.
श. 8 2 के.
9 1
रा.
11
म. 10 12

जन्म तिथि-29.7.1954, जन्म समय-10.30, स्थान-मुम्बई।

डॉ. कुसुम मंगल

6 श. 5 मं. 4
7 3
सू. के. शु.
8 2
बु.
9 चं. 1
रा. 11
10 गु. 12

जन्म तिथि-15.9.1951, जन्म समय-4.27, स्थान-जोधपुर। सप्तम भाव में राहु ने अन्तर्जातीय विवाह कराया। पति डाक्टर है। उससे दो पुत्र हैं। परन्तु व्ययेश चंद्र सप्तम स्थान में आठवें गुरु के कारण पति से तलाक हो गया।

श्री भुवनेश भट्ट

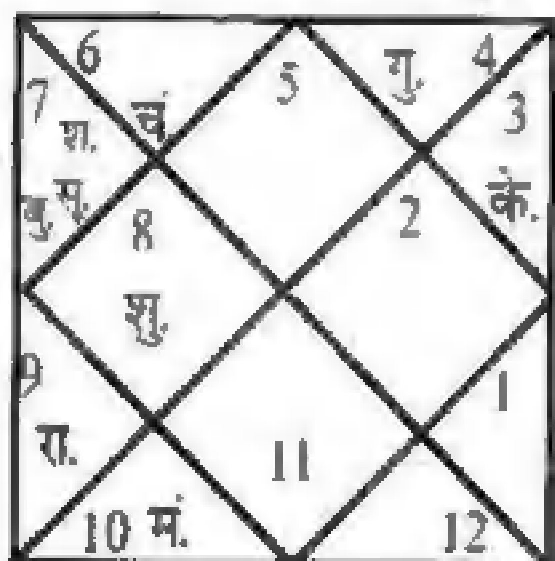

जन्म तिथि-26.10.1954, जन्म समय-2.57 रात्रि, स्थान-सोजत। यहां गुरु ने विपरीत राजयोग बनाया, जिससे जातक मजिस्ट्रेट है। सप्तमेश शनि, सूर्य (शत्रु) के साथ, गुरु बारहवें होने से जातक अविवाहित है।

❑❑❑